चतुर्थ अध्याय
सूर्यबाला की कहानियों का मूल्यांकन

4.0 सूर्यबाला की कहानियों का मूल्यांकन:

चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत मैं सूर्यबाला द्वारा रचित कहानियां जैसे 'एक इंद्रधनुष जुबेदा के नाम', 'दिशाहीन', 'थाली भर चांद', 'मुंडेर पर', 'गृह प्रवेश', 'कात्यायनी संवाद', 'सांझवाती' आदि कहानियों के कथ्य, कथोपथन, चरित्र चित्रण देशकाल, संवाद, कहानियों की भाषा शैली का समीक्षात्मक दृष्टि से मूल्यांकन करने का प्रयास करूंगी ।उस पर अपना निष्पक्ष भाव प्रकट करने का मेरा उद्देश्य रहेगा।

4.1 सूर्यबाला का कहानी के क्षेत्र में प्रवेश:

हिंदी कहानी का एक पहलू यह भी है कि हिंदी कहानियों में निराशा, व्यंग्य और विद्रोह देखने को मिलता है। मनुष्य कहानी जगत में एक पहेली समान उजागर हुआ है ऐसी परिस्थिति में सूर्यबाला का ई.सन १९९५ में प्रकाशित 'सांझवाती' और 'ग्यारह कहानियों' के संग्रह का प्रकाशन हुआ उनके यह कहानी संग्रह जीवन के दस्तावेज के रूप में हम देख सकते हैं ।उनकी कहानियां गांव से शहर और महानगर तथा समाज के हर वर्ग हर मनुष्य के मन में चल रहे द्वंद को सूर्यबाला ने कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। सूर्यबाला का 'कात्यायनी संवाद' कहानी संग्रह १९९६ में और एक वर्ष के बाद उनकी ग्यारह कहानियों का संकलन किया गया। लेखिका के कहानी संग्रह में कहानियों के मानव जीवन से जुड़े, आर्थिक, मानसिक ,सामाजिक संघर्षों की गाथाओं का वर्णन पात्रों के माध्यम से दिया गया है। जो पाठक के मानस पटल पर एक गहरी छाप छोड़ता है थोड़े-थोड़े समयांतर पर सूर्यबाला की कहानियों का प्रकाशन होता रहा जो पाठकों में काफी लोकप्रिय हुई जिसने उनको हिंदी साहित्य जगत में एक ख्यातनाम

लेखिका के रूप में स्थापित किया सूर्यबाला का हिंदी साहित्य में आगमन एक महत्वपूर्ण घटना है।

सूर्यबाला द्वारा रचित कहानी संग्रह का विवरण इस प्रकार है:

1. सन 1995 में 'सांझवाती-' प्रकाशक ग्रंथ अकादमी
2. सन 1996'कात्यायनी संवाद-'ग्रंथ अकादमी
3. सन 2001 'इक्कीस कहानियां'
4. 'एक इंद्रधनुष जुबेदा के नाम' 2008 प्रकाशक- विद्या विहार
5. सन 2011 'थाली भर चांद' प्रकाशन-सत्साहित्य प्रकाशन
6. 'गृह प्रवेश' 2008
7. 'सूर्यबाला की लोकप्रिय कहानियां' सन 2015 प्रकाशक- प्रभात प्रकाशन
8. 'पांच लंबी कहानियां' सन 2011 प्रकाशक- ग्रंथ अकादमी
9. ' दिशाहीन' सन 2010 प्रकाशन- प्रतिभा प्रतिष्ठान

4.2 सूर्यबाला की कहानियों की रचना:

वर्तमान समय में अगर हम देखते हैं तो कहानी साहित्य सबसे लोकप्रिय साहित्य बनकर उभरा है। कहानी का स्वरूप लक्षणों को बहुत से लोगों ने अपने मत प्रकट किए हैं इसी कारण कहानी की साहित्यिक रचना में हमें काफी परिवर्तन देखने को मिलता है। सूर्यबाला ने अपनी कहानियों में समाज की छोटी-बड़ी समस्याओं को वर्णित किया है कहानी का मूल्यांकन कहानी के तत्वों के आधार पर किया जाता है जिसमें कथानक, पात्र, देशकाल, भाषा शैली, संवाद, मुख्य है।सूर्यबाला की सभी कहानियों में यह तत्व समाहित है अपने आप इसके कारण सूर्यबाला एक प्रखर लेखिका के रूप में अपने आप को प्रस्थापित करती है किसी भी कहानी का उद्देश्य पाठक का मनोरंजन करना समाज में नई चेतना का निर्माण करना, समाज सुधार के लिए प्रेरणा स्त्रोत बनना ,मनोरंजन के साथ-साथ

सिद्धांतों को भी स्थापित करना कहानी का मुख्य उद्देश्य होता है। जिसमें सूर्यबाला अपने आप को स्थापित करती है।

सूर्यबाला की कहानियों में समाज का यथार्थ और मर्मस्पर्शी चित्रण देखने को मिलता है उनकी कहानियों में सजीव वातावरण ,सुंदर भाषा शैली का प्रयोग,चित्रों का प्रेरणादाई चित्रण ,कहानी के रचना का विधान ध्यान में रखते हुए, सभी तत्वों का खयाल रखा गया है।सूर्यबाला ने अपनी कहानियों की रचना में साहित्यिक नियमों का पालन किया है। सूर्यबाला की कहानियों का तत्वों के आधार पर मूल्यांकन निम्नलिखित है।

4.3 सांझवाती कहानी संग्रह:-

'सांझवाती' कहानी संग्रह में कुल ग्यारह कहानियों का समावेश किया गया है। जिसके अंतर्गत हम कहानी संग्रह में समाहित प्रथम कहानी 'खुशहाल' का मूल्यांकन करने का प्रयास करूंगी।

खुशहाल:

'खुशहाल' कहानी का मुख्य नायक वर्मा है। वर्मा एक कंपनी में वर्कर के रूप में कार्यरत है कंपनी का सुपरवाइजर वर्मा को जोर से मुंह पर चांटा लगा देता है पर चाटा खाने के बाद वर्मा चाहता है कि किसी भी तरह यह बात उसके परिवार में उसके बीवी बच्चों तक नहीं पहुंचनी चाहिए। 'खुशहाल' कहानी आरंभ से लेकर अंत तक वर्मा नामक नायक के आसपास ही रहती है। वह अत्यंत गरीब है इस वजह से सुपरवाइजर के चांटा मारने पर भी वह अपना विरोध प्रकट नहीं करता यह वही वर्मा है जिसे अपने घर में राजा माना जाता है। अगर थप्पड़ वाली बात घर में पता चल जाए तो उसकी क्या इज्जत रह जाएगी? कारखाने में हो रहे बुरे बर्ताव का कोई भी वर्कर विरोध नहीं करता सबको यही डर बना रहता है कि आवाज उठाई तो कहीं उन्हें नौकरी से हाथ धोना ना पड़ जाए। इसी कारण सब

बर्दाश्त करते जाते हैं कोई भी अपनी जुबान से आवाज तक नहीं निकलता उन्हें डर रहता है कि कहीं उनके नाम का लिफाफा ना बन जाए और उन्हें नौकरी छोड़कर घर जाना ना पड़ जाए।

मुख्य पात्र (वर्मा):

इस कहानी का मुख्य पात्र वर्मा है जो एक कारखाने में वर्कर का काम करता है।वह कंपनी में नौकरी जाने के डर से सुपारवाइजर का चाटा तक खा लेता है और इसके विरोध में आवाज तक नहीं उठाता क्योंकि उसका साहस नहीं होता कुछ बोल पाने का क्योंकि उसे अपने परिवार का भी ख्याल रखना है अगर उसे नौकरी से निकाल दिया गया तो वह अपने परिवार का पालन- पोषण कैसे करेगा? यह प्रश्न उसके सामने खड़ा होता है इसलिए वह विरोध नहीं करता। सूर्यबाला ने कहानी के केंद्र स्थान में वर्मा को एक लाचार वर्कर के रूप में प्रस्तुत किया है जो चाह कर भी कंपनीके सुपरवाइजर का विरोध नहीं करता क्योंकि अगर उसे चाटे वाली बात उसके परिवार को पता चली तो उसकी घर में क्या इज्जत रह जाएगी?क्योंकि वह अपने घर का राजा है और वह अपने परिवार में और घर में अपनी छवि खराब नहीं करना चाहता।इस बात को मन में दबाकर वह सुपरवाइजर के चाटे का विरोध नहीं करता।

गौण पात्र:

'खुशहाल' कहानी में अन्य सहायक पात्रों के रूप में हम गाल पर चांटा मारने वाले सुपरवाइजर, कंपनी का मालिक, एक गरीब वर्कर आदि गौण पात्र का परिचय प्राप्त होता है।पात्रों का चयन कहानी के अनुरूप किया गया है।

संवाद:

प्रस्तुत कहानी में संवाद पात्रों के अनुरूप और प्रसंगों में बंद बैठते हैं।कहानी के संवाद छोटे- बड़े और दिल में घर कर लेने वाले हैं।भाषा में शहरी जीवन का परिचय भी मिलता है।

कहानी के कुछ संवाद यहां पर दृष्टिगत है-

"तभी तो वर्मा जैसे सीधे आदमी पर -----"[1]

"बे अदब ! उल्टे जबान लड़ता है? निकम्मे नाकरें ------"[2]

"पहले यह मिल सिर्फ शरीर का खून चुस्ती थी अब आत्मा के भी चिथडे - चिथड़े कर---"[3]

'खुशहाल' कहानी में कुछ ऐसे संवाद है जो सामाजिक जीवन पर और शोषण कर्ताओं पर सीधा प्रहार हैं। जो इस कहानी में पात्रों के माध्यम से सूर्यबाला ने बहुत ही खूबसूरत तरीके से प्रस्तुत किया है।

देशकाल अथवा वातावरण:

'खुशहाल' कहानी में हमें 80 के दशक का वातावरण लगता है। जो मिल में कामगारों के माध्यम से पता चल ही जाता है। महानगरी वातावरण है बड़ी-बड़ी मिलों में काम करने वाले वर्कर्स का संघर्ष पूर्ण जीवन को परिस्थितियो एवं वातावरण से जोड़ दिया गया है। देश काल और वातावरण को अगर देखा जाए तो सूर्यबाला ने इस बात का पूर्ण रूप से ख्याल रखा है की कहानी में वातावरण पूर्ण रूप से कहानी के अनुरूप हो।

भाषा शैली:

'खुशहाल' कहानी की भाषा शैली महानगरीय भाषा से प्राभावित हैं जिसे सूर्यबाला ने अपनी सूझ बूझ के आधार प्रस्तुत किया है।सूर्यबाला ने अपनी कहानी में अंग्रेजी भाषा के कई शब्दों का प्रसंगनुसार प्रयोग किया है।जैसे स्पीड,पार्सल, गारंटी, सेमिनार यूनियन आदि शब्दों के माध्यम से पता चलता है कि कहानी की भाषा कहानी के भाव को प्रकट करने वाली है।सूर्यबाला ने यहां पर परिस्थिति अनुसार लाचारी, गरीबी अपमान के भाव को उजागर किया है।

कहानी का उद्देश्य:

सूर्यबाला ने 'खुशहाल'कहानी के माध्यम से मिल मजदूरों की समस्याओं ,उन पर हो रहे अन्याय और शोषण और संघर्ष को दर्शाया हैं। साथ में ही जो ऊपरी वर्ग है उनके द्वारा कैसे मजबूर और असहाय मजदूरों को बेहाल,

और अपमानित किया जाता है। सूर्यबाला ने उच्चवर्ग के द्वारा कैसे निसहाय और अपने परिवार का पालन पोषण करने वाले जिनका एक मात्र कमाई का माध्यम मिल में नौकरी करना है, क्योंकि उनकी आमदनी पर ही परिवार का गुजर बसर चलता है । यह इस कहानी के माध्यम से बताया गया है। शोषित एवम मजदूर लोगों की लाचारी को कहानी के माध्यम से सूर्यबाला ने दर्शाया है।

सुमिंतरा की बेटियां:

सूर्यबाला ने सुमित'रा की बेटियां' कहानी में सुमिंतरा के माध्यम से उसके पति द्वारा किस प्रकार पत्नी पर मानसिक, सामाजिक रूप से अत्याचार किया जाता है उसे दर्शाया है सुमितरा इस कहानी के मुख्य नायिका है।जिसकी शादी ढोढेलाल नामक व्यक्ति के साथ होता है पर ढोढेलाल के त्याग देने के पश्चात भी सुमिंतरा अपने दोनों बेटियां पिपरिया और झुमरिया की जिम्मेदारी खुशी-खुशी उठाती है। वह अपना जीवन यापन एक भैंस पालकर करती है। उसके घर की दशा ऐसी है कि जानवर भी उस घर में निवास करना पसंद ना करें उसका पति ढोढेलाल एक बंगालियन औरत के साथ अपना दूसरा घर बसा लेता हैं।फिर भी सुमिंतरा इस बात का विरोध नहीं करती । वह अन्याय को भी चुप रहकर ही सह लेती है।

सुमिंतरा (मुख्य पात्र):

सूर्यबाला द्वारा रचित 'सुमिंतरा की बेटियां' कहानी में सुमिंतरा का पात्र मुख्य नायिका के रूप में उभरता है। सुमिंतरा का पित ढोढेलाल अपने पत्नी का त्याग करके किसी बंगालन के साथ अपना घर बसा लेता है। फिर भी सुमिंतरा हार नहीं मानती और अपने पति का विरोध नहीं करती बल्कि अपनी दोनों बेटियां पिपरिया और झुमरिया की सारी जिम्मेदारी खुशी-खुशी अपने ऊपर उठा लेती है।अपने पति द्वारा किए गए अत्याचार को वह बिनविरोध सहती रहती है ।देखा जाए तो सूर्यबाला ने सुमितरा के रूप में एक स्वाभिमानी, साहसी ,निडर पात्र को

यहां पर उभारा हैं परंतु कहीं- कहीं पर सुमितरा का पात्र कमजोर भी लगता है क्योंकि वह अपने पति से अपने स्वाभिमान एवं अपने पत्नि के हक की लड़ाई नहीं लड़ती।

गौण पात्र:

कहानी में गौण पात्रों के रूप में सुमिंतरा की दो बेटियां पिपरिया और झुमरिया उसका पति बंगालीयन जैसे पात्र कहानी को आगे बढ़ने में अपना सहयोग प्रदान करते हैं। सूर्यबाला ने अपनी कहानी में कहानी अनुरूप पात्रों का चयन किया है जिसमें गौण और मुख्य पात्र दोनों का योगदान महत्वपूर्ण है।

संवाद:

कहानी के संवाद पाठकों के मन में जिज्ञासा उत्पन्न करने वाले हैं। इस कहानी के संवादों को हम निम्न रूप से देख सकते हैं ।

जब सुमित्रा अपनी बेटियों से कहती है-"जहां हमारे जिनावर रहेंगे, बिटिया, वही तो हम रहेंगे न...." [4]

जब उसके पति के विषय में बात होती है तब-" क्यों री! वही- के- वही कोई- रखा तो नहीं ली, ढोढे बंटरबाज ने ..." [5]

"आएगा तो देख लेना सलुके में छुपा के तो रखूंगी नहीं...." [6]

कहानी के संवाद मन को टटोलने वाले हैं जो संवाद पढ़ने के साथ ही कहानी का वास्तविक चित्रण हमारे आंखों के सामने दृष्टिगत होने लगता है सूर्यबाला ने ऐसे संवादों की रचना की है जो दृश्यात्मक तरीके से हमारे मन पर प्रभाव डालते हैं।

भाषा शैली :

'सुमिंतरा की बेटियां' कहानी में गांव की गवार भाषा का उपयोग हुआ है। भाषा शैली थोड़ी सी कठिन प्रतीत होती है जैसे बर्तन -बासन जानवर को जिनावर, बिस्कुट ,रैती का मतलब रहती होता है। कहानी के पात्र अनपढ़ होने के कारण

गांव की देहाती भाषा का परिचय मिलता है। भाषा कहीं-कहीं अशुद्ध देखने को मिलती हैं।

उद्देश्य :

कहानी का उद्देश्य यह है कि लेखिका सुमिंतरा के माध्यम से एक प्रताड़ित स्त्री की त्रासदी को चित्रित करती है। सुमिंतरा एक नेक और संस्कृति का पालन करने वाली स्त्री है, वह किसी के सामने हाथ नहीं फैलाती वह अपना जीवन यापन का बंदोबस्त स्वयं करती है। भारतीय नारी के आदर्शवाद को प्रस्तुत करती है। यह कहानी एक भारतीय महिला की है जो भारतीय संस्कृति और परंपरा का आदर करते हुए अपना जीवन यापन करती है। परंतु मेरे मत से सूर्यबाला ने अपने मुख्य पात्र सुमिंतरा को लड़ने की प्रेरणा प्रदान नहीं कि क्यूंकि वह समाज में अपना जीवन निर्वाह तो सम्मान से करती है, परंतु अपने पति से पत्नि हक के लिए नहीं लड़ती जो आज के आधुनिक युग में स्त्री को प्रेरणा स्त्रोत नहीं मानी जाएगी।

विजेता:

सूर्यबाला के द्वारा रचित छोटी कहानी के अंतर्गत 'विजेता' कहानी का समावेश होता है।'विजेता' कहानी एक ऐसे बच्चे की कहानी है जो अपने जीवन से भागता रहता है जो अनाथ है उसके रहने खाने -पीने का कोई ठिकाना नहीं है वह यहां -वहां अपनी जिंदगी काटता घूमता है। उसकी एक बहन है जो बदतमीज और स्वभाव से बदजबान भी है वह अपना जीवन यापन करने के लिए एक सेठ के यहां काम करता है वह सेठ हमेशा उस पर अन्याय ही करता रहता है। एक बार वह बस में यात्रा करता है तब वह बस में एक औरत को जोरदार चांटा लगा देता है तब उसे एहसास होता है कि आखिर वह भी एक मर्द है, यह जब घटना उसके सामने घटित होती है तब उसे शादी करने का मन करता है।

पात्र:

सूर्यबाला ने पात्र के नाम के साथ पर 'वह' शब्द का प्रयोग किया है। कहानी में पात्र का कोई नाम नहीं दिया गया है। पूरी कहानी शुरू से लेकर अंत तक वह के आस-पास ही घूमती रहती है। सूर्यबाला ने इस कहानी में एक नवीन लेखन कला को जन्म दिया है।इस कहानी में सुदामा नाम का सिर्फ एक गौण पात्र का उल्लेख होता है।

संवाद :-"नहीं रे तख्ते ताऊस अलाट होगा तेरे लिए, सीधे लाट साहब के हुक्मनामे से....." [7]

"तू जो भी कहे आर !ऊपर वाला भी कुछ कम झक्की नहीं। जिन पै कहर बरपनी चाहिए, उन्हें कोठियों में रखता है ताकि उनके मनचले नैनिहाल हम जैसे की कॉलर पकड़ पकड़ कर झिंझोड़े।"[8]

"बेवकूफ नहीं था जी उसे इंसान की, पैहचान थी ...." [9]

"परभू की किरपा से मरदजात हूं । दो जून की रोटी का ठिकाना जहां भी रहूंगा, कर ही लूंगा आपका...." [10]

देशकाल आज का वातावरण :

'विजेता' कहानी का परिवेश भारतीय परंपरा का पालन करता है।कभी-कभी सूर्यबाला पाठकों को कहानी में विदेशो के भी दर्शन कराती है।देशकाल और वातावरण की कहानी को दिशा प्रदान करता है।'विजेता' कहानी का नायक अनपढ़ है वह दुनिया के बारे में सोचता है कि दुनिया दोगले और दगाबाजो से भरी हुई है।

भाषा शैली:

कहानी का नायक अनपढ़ होने की वजह से भाषा अशुद्ध है। जैसे इश्टाइल, पैले, रैता, हम्मे, पिराभू, पैचान आदि अशुद्ध शब्दों का प्रयोग देखने को मिलता है। कहावतों का तथा आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया गया है

जैसे 'फूटे भागते भूत की लंगोटी' आदि भाषा का प्रयोग सूर्यबाला ने उस कहानी में किया है।

उद्देश्य:

कहानी में शोषण, अन्याय के खिलाफ बगावत करते पात्र का चित्रण किया गया है। कहानी में यह संदेश है कि अगर आप पर अन्याय हो तो उसके खिलाफ बगावत करना ही उसका एक मात्र संदेश पाठक तक सूर्यबाला ने इस कहानी के माध्यम से दिया है।

उतरार्द्ध :

'उतरार्द्ध'के सभी पात्र नौकरी करते हैं केवल घर की मालकिन को छोड़कर यह एक पारिवारिक कहानी के अंतर्गत आती है। कहानी में पात्रों का रहन-सहन खान-पान काम करने का तरीका भाव भंगिमा आदतें एक दूसरे से भिन्न भिन्न है यह कहानी नाटक जैसी प्रतीत होती है । घर और घर के सभी सदस्य ऐसा लगता है किसी नाटक के मंच पर अभिनय कर रहे हो ऐसा लगता है घर में पति-पत्नी बड़े छोटे बेटे, छोटे बेटे की बहू की आदतों से घर की मालकिन हमेशा भागती नजर आती है। जैसे नाटक में पूर्वार्ध और उत्तरार्ध होता है इस कहानी में भी ऐसा ही देखने को मिलता है देखा जाए तो यह कहानी एक अधेड़ उम्र की महिला की कहानी है परिवार के सभी सदस्य उसे अलग अलग नजर से देखते हैं इस वजह से वह अलग अलग भूमिका में नजर आती है कहानी के उत्तरार्ध में वह स्त्री केंद्र स्थान में है इस कहानी के मुख्य नायिका के रूप में सामने आती है कहानी का सार केंद्र उसी महिला पर टिका रहता है।

पात्र:

कहानी की नायिका एक अधेड़ उम्र की महिला है जो सारे परिवार की जिम्मेदारी लेती है। फिर भी उससे परिवार के सदस्यों के द्वारा उपेक्षित ही किया जाता है पूरी कहानी इस सी महिला के आसपास घूमती रहती है कहानी में

अधिक पात्र होने से कहानी नाटक जैसी प्रतीत होती है बाकी के सारे पात्र कौन रूप में आते हैं घर में पति हैं बड़ा बेटा और छोटे बेटे की बहू एक आधी कहानी को आगे बढ़ाने में सहयोग प्रदान करते हैं कहानी के पात्र कहानी के अनुरूप ही कहानी में जिज्ञासा उत्पन्न करते हैं।

संवाद :

"एक बच्चा भी कर ले, इत्ता आसान काम भी तुमसे नहीं हो पाता।"[11]

"ना, इन द्वंदजालों में उलझना ही नहीं है -,सिर्फ अपना धर्म अपनाकर, "लिना,लाओ में सिर दबा दूं।"[12]

"तब फिर? बचेगा क्या? एक निसंग, सपाट जीवन। उफ आखिर क्या चाहती है वह? मुक्ति? किस से मुक्ति?और कैसे मुक्ति?" [13]

कहानी के संवाद पाठकों में उत्सुकता जगाते हैं कहानी के संवाद पाठकों के ह्रदय पर अपना प्रभाव छोड़ने में कामयाब हुए हैं।

देशकाल :

कहानी के आरंभ से अंत तक देश की संस्कृति का परिचय मिलता है। आजादी प्राप्त होने के बाद महानगरीय लोग कैसे पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण करते हैं कैसे उनकी भाषा रहन-सहन खान-पान बोलचाल में परिवर्तन दृष्टिगत होता है ।कहानी के पात्र अपने मन के अनुसार स्वतंत्र रूप से अपना जीवन यापन करते हैं उनके मन के भाव मुक्त हैं।

भाषा शैली :

कहानी के सभी पात्र महानगर में निवास करते हैं। जिसमें अधिकतर पढ़े लिखे होने के कारण भाषा शुद्ध है गाने की भाषा आम बोलचाल वाली भाषा है जो हम सामान्य जीवन में उपयोग करते हैं जो पाठकों में अपना गहरा प्रभाव छोड़ते हैं।

उद्देश्य :

कहानी का उद्देश्य स्वतंत्र और मुक्त भाव से अपने स्वयं के लिए जीने की प्रेरणा देता है दूसरे के लिए तो सभी जीते हैं जीवन में स्वयं के विषय में भी थोड़ा निर्णय

लेना चाहिए। उपेक्षित जीवन जीने की अपेक्षा मुक्त जीवन जीने की प्रेरणा हमें सूर्यबाला की कहानी 'उत्तरर्द्ध' देती है।

गोबर चच्चा का किस्सा :

'गोबर चच्चा' कहानी का मुख्य पात्र गोबर चच्चा है जो एक आम इंसान है जो अनपढ़ है। कभी पाठशाला नहीं गया। उसका रंग गेहुआ है मैली सी लुंगी पहनकर खिच्छड़- मुच्छड़ दाड़ी वाला मलंगी बना बनाएं छोटे बच्चों को लेमन जूस दिया करता है। उसके जीवन का सबसे बड़ा दुःख है कि उसने अपने माँ और बाप के साथ झगड़ा करके अपने घर को त्याग दिया था। इस वजह से लोग उसे गोबर चच्चा बुलाते हैं। गोबर चच्चा को लगता है कि वह घर छोड़ देंगे तो उनकी बंद किस्मत का ताला खुल जाएगा वह अपनी किस्मत आजमाते रहते हैं। गोबर चच्चा इस कहानी के मुख्य नायक के रूप में उभरते हैं जिन्हें अपनी किस्मत पर आखिर तक भरोसा होता है।

पात्र: (गोबर चच्चा)

कहानी का मुख्य पात्र गोबर चच्चा है जो इस कहानी का मुख्य सूत्रधारएवं नायक है वह अपने माँ-बाप से झगड़ा कर अपनी किस्मत आजमाने के लिए अपने घर का और माँ-बाप के साथ का त्याग कर देता है। इस कहानी का नायक पढ़ा लिखा नहीं है इस कहानी में सूर्यबाला ने गोबर चच्चा के स्वभाव पर अपना ध्यान केंद्रित किया है।

इसके अलावा गोबर से चच्चा में गौण पात्रों के अंतर्गत बनवारी, गोवर्धन भाई का छोटा, भाई मदानू लोहार, नत्यु ,चायवाला आदि पात्र उल्लेखित है। स्त्री पात्रों में देखे तो सरताजिन खटकिन, मैंना ,जिज्जी आदि का कहानी में उल्लेख मिलता है। गौण पात्र कहानी को आगे बढ़ाने का अपना सहयोग देते हैं।

संवाद:

कहानी के संवाद कोमल प्रसंग अनुकूल और पाठकों को अपनी संवाद शैली के द्वारा बांधे रखने में सफलता प्राप्त की हैं। सूर्यबाला ने कहानी के संवादों में प्राण डाल दिए हैं कुछ संवाद यहां पर पेश है।

"लिया रे ललुआ? कहा था न? मेरे जा,न थोड़े खब्ती और झक्की जरूर है नहीं तो इहां से ऊहां, सड़क चौराहे गेरुआ झब्बा और लूंगी फटकारते भला दर-दर भटकते होते?" [14]

"सच कहा भइया, बस जिंदगी का हिसाब ही गड़बड़ा गया है।इसी बहीं पर सही ना लगा पाया।"[15]

"इस जिंदगी से मेरी सात जन्म की दुश्मनी बनी है नत्यु, सात जनम की ना यह मुझे सह पाती हैं ना मैं इसे।"[16]

देश काल :

'गोबर चच्चा' कहानी में गांव की संस्कृति के दर्शन होते हैं और गांव का साधारण वातावरण को सूर्यबाला ने इस कहानी में निर्मित करने का प्रयास किया है।जो पाठकों को बिना गांव गए ही गांव के दृश्य का सही और सटीक वर्णन पढ़कर ही गांव का चित्रात्मक, दृश्यात्मक चित्रन पाठकों के सामने अपने आप खड़ा हो जाता है।

भाषा शैली :

कहानी में गांव की देहाती भाषा का उपयोग देखा जा सकता है कहानी की भाषा शैली में कुछ शब्दों के देहाती रूप नजर आते हैं, जैसे भैया का भइया, शादी सादी, लेमनचूस का लेबिनचूस शैली में कविता का भी थोड़ा स्फुट देखने को मिलता है। गांव का वातावरण है जिस का ध्यान रखते हुए सुर्यबाला ने कहानी के साथ गांव जैसा ही न्याय किया है।

उद्देश्य :

गोबर' चच्चा' कहानी के माध्यम से सूर्यबाला ने एक अनपढ़ व्यक्ति के जीवन यात्रा का वर्णन किया है। इस कहानी में गोवर्धन का स्वभाव तथा गांव की समस्याओं को उजागर करने का कार्य सूर्यबाला ने किया है। गोबर चच्चा का पात्र जो शुरुआत में फैसला लिया था वही फैसला उसका आखिर तक रहता है।उसे उजागर और उसके व्यक्तित्व का सही चरित्र चित्रण सूर्यबाला ने किया है जिससे पाठकों को इस पात्र के द्वारा एक जीवन के निर्णय लेने वाले व्यक्तित्व का परिचय मिलता है जिनका नाम है गोबर चच्चा।

आखरी विदा :

सूर्यबाला की कहानी 'आखरी विदा' के केंद्र स्थान पर विदेश में नौकरी करने वाले बेटे के माँ -बाप है यह एक परिवारिक कहानी के रूप में उजागर होती है। माँ बाप का बेटा सात साल के बाद विदेश से वापस लौटा है।उसकी माँ इस बात का पूरा ध्यान रखती है कि उसके बेटे को यहां पर किसी बात की कमी ना हो और इसी बात की वजह से वह चिंता में रहती है इस कहानी के प्रमुख पात्र के रूप में हम माँ को देखते हैं मगर जिस बेटे का माँ इतना ख्याल रखती है उसी बेटे को उस माँ-बाप के प्रति कोई प्रेम या आत्मीयता नहीं है। इस कहानी में सूर्यबाला ने ऐसे माँ-बाप का वर्णन किया है जो अपने बेटे की हर इच्छा का ध्यान रखते हैं पर वही बेटा उनकी भावनाओं की कदर नहीं करता आज के आधुनिक युग में विदेश जाने, वहां रहने, कमाने का,लोगों में अधिक क्रेज है इसकी वजह से वहां से लौटने के बाद वह लोग अपनी संस्कृति का जरा भी ख्याल नहीं करते जबकि वह पाश्चात्य संस्कृति में इतना डूब जाते हैं कि अपनी संस्कृति की जड़ों से टूट जाते हैं और वहीं लोग अपने ही देश की संस्कृति को जड़ों से उखाड़ने में लगे रहते हैं.

पात्र:

प्रस्तुत कहानी में सूर्यबाला ने पात्रों के रूप में मुख्य रूप से माँ-बाप को रखा है। जो अपने बेटे को विदेश में नौकरी करने के लिए भेजते हैं और वह बेटा विदेश में रहकर सात साल के बाद अपने माता पिता के पास लौटता है माँ अपने बेटे के सात साल के बाद लौटने पर अपनी खुशी को व्यक्त नहीं कर पाती। वह अपने बेटे को हर वह चीज देना चाहती है जो उसने सात साल में नहीं दी परंतु माँ बाप की वह बेटा कदर नहीं करता बल्कि वह बेटा पूरी तरह से पाश्चात्य संस्कृति के अधीन हो गया है। इसी बात से माँ बाप दुःखी होते हैं । इस कहानी के माध्यम से सूर्यबाला ने माँ-बाप के पात्रों के द्वारा माँ बाप पर अपने बेटे के द्वारा जो मान सम्मान आदर मिलना चाहिए वह नहीं प्राप्त होता । इस बात पर हमारे देश से विदेश जाकर बसे लोगों पर एक कड़ा तंज कसा है कि भले ही आप विदेशों में जाकर बस जाओ लेकिन अपनी जड़ें, अपने माँ-बाप, अपनी संस्कृति को कभी भी नहीं भूलना चाहिए। गौण पात्र के रूप में सूर्यबाला ने बेटे को लिया है इस पात्र के इस कहानी के तीनों पात्र अपनी-अपनी भूमिका है बड़ी ही सहजता से निभाते नजर आते हैं।

संवाद :

कहानी के संवाद कोमल, प्रसंगानुकूल और पाठकों को बांधे रखने में सफल होते हैं, प्रस्तुत है 'आखरी विदा'कहानी के कुछ संवाद हैं जो बेटे के विदेश लौट आने के बाद माता पिता और बेटे के बीच होते हैं।

"उफ! क्यों नहीं पूछती, क्यों नहीं कहती वह अब,जिसके लिए पूरे सात सालों से तरस रही थी.... समेटले उसका माथा अपनी गोद में, दुलार ले जी भर कर..... या फिर रोही ले हिलककर....कि कैसे आधी -आधी रातों, अचानक बड़ी धड़कनों के बीच नींद खुल जाती...."

"तकिया भीग जाता, पिता भी ना जाने पाते...

लेकिन कहां सिर्फ इतना ना-

"नहाएगा तू?"

हूं? नहा लूं?

"न मन हो तो रहने दे.... [17]

"जाने मुझे क्या सूझी पर्दा खिसकाने की लेकिन वह सयत भाव से उठ जाता है..."कोई बात नहीं, फिर सो लूंगा।"[18]

"कैसा लगता है न... कल चला जाएगा वह....." [19]

"घबराओ नहीं, फिर से कुछ ही सालों में लौटकर आएगा न, जैसे इस...." [20]

"नहीं ...और कितनी बार लौट आएंगे हम उसे और कहां तक!..." [21]

वातावरण :

आजादी के बाद यहां भारत के लोगों का विदेश जाने का सिलसिला शुरू हो गया था। उस समय का वातावरण भारतीय संस्कृति ,स्थल, समय काल की दृष्टि से कहानी के एकदम बंद बैठते हैं। सूर्यबाला ने उस समय की परिस्थितियों वातावरण को पारिवारिक संबंधों में बांधकर पाठकों के सामने पेश किया है।

भाषा शैली :

इस कहानी की भाषा सामान्य बोलचाल की भाषा है।इस कहानी में अंग्रेजी और हिंदी भाषा का सम्मान वही देखने को मिलता है। अंग्रेजी भाषा के शब्दों का प्रयोग हुआ है जैसे सिक्योरिटी, कस्टम, सिस्टम, टेररिज्म, इन्फ्लेशन, सॉरी, एयरपोर्ट, टाइम जैसे अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग हमें इस कहानी में देखने को मिलता है सूर्यबाला ने सामान्य भाषा और अंग्रेजी भाषा के समन्वय से अपने लेखन को गतिशीलता प्रदान की है।

उद्देश्य :

प्रस्तुत कहानी में एक भारतीय नारी कि उसके बेटे के विदेश से लौटने के बाद जो मानसिक स्थिति होती है उसी की मनःस्थिति का मनोवैज्ञानिक स्तर पर सूर्यबाला ने चित्रात्मक ,वर्णनात्मक वर्णन किया है एक माँ का अपने बेटे के प्रति

जो ममत्त्व, वात्सल्य, प्रेम भाव, चिंता ,वेदना दर्शाने का जो भाव होता है उसी भाव को केंद्र स्थान में रखते हुए सूर्यबाला ने इस कहानी का निर्माण किया है।

सुनंदा छोकरी की डायरी :

प्रस्तुत कहानी में बाल मन पर घर की बिगड़ी हुई परिस्थिति का कैसा प्रभाव पड़ता है इस कहानी के माध्यम से सूर्यबाला ने प्रस्तुत किया है । सुनंदा का बाप एक कंपनी में काम के दौरान मशीन में पैर आने की वजह से अपाहिज हो जाता है। बाप के अपाहिज होने के बाद परिवार की सारी जिम्मेदारियां सुनंदा की माँ और खुद सुनंदा पर आ जाती है। इसी कारणवश सुनंदा की पढ़ाई भी रुक जाती है और ना चाहते हुए भी सुनंदा को स्कूल छोड़ना पड़ जाता है। सुनंदा और उसकी माँ लोगों के घर बर्तन, झाड़ू लगाने का काम करती है दोनों अपना परिवार चलाने के लिए काफी मेहनत करती है परंतु इसके बदले में सुनंदा के पिता को शराब की लत लग जाती है और सुनंदा का पिता शराब पीकर सुनंदा की माँ को रोज गालियां सुनाता है। इस वातावरण का और ऐसी परिस्थिति का सुनंदा के बाल मानस पर गहरा प्रभाव पड़ता है ऐसा लगता है कि सुनंदा के उपर एक तरह का अन्याय ,अत्याचार हो रहा है परंतु वह कुछ नहीं कर सकती ऐसी अवस्था में।

पात्र :

सुनंदा की डायरी नायिका बाल नायिका सुनंदा है। इस कहानी के माध्यम से सुनंदा की बाल मन का शुरू से लेकर अंत तक चलने वाले प्रभाव को अपने भावनात्मक शैली में सूर्यबाला ने प्रस्तुत किया है। सुनंदा इस कहानी की बाल कलाकार और प्रमुख पात्र के रूप में प्रस्तुत होती है।बाप के अपाहिज होने के बाद भी सुनंदा और उसकी माँ हिम्मत नहीं हारते और लोगों के यहां काम करके अपना जीवनयापन करती है ।

सुनंदा की डायरी में सुनंदा के अलावा गौण पात्रों के रूप में सुनंदा के माँ - बाप, उसकी शकु मौसी, बाबा और बेबी पात्रों का भी समावेश किया गया है।

संवाद :

कहानी के संवाद पाठकों में कौतूहल उत्पन्न करते हैं संवादों में ऐसा लगता है जैसे सूर्यबाला ने बाल मनोविज्ञान का पूर्ण रूप से अध्ययन करते हुए और उसका ध्यान रखते हुए इस कहानी का लेखन किया है । सुनंदा छोकरी और मालकिन के बीच का संवाद--जैसे "तेरे को शर्म नहीं बिचारे जानवर का अंडा चुराती हैं?"
"ये देख,इधर बाई पन मेरे कू बखिश दिया, शाला जैसा खी -खी -खी -खी पर मा किधर हसती?" [22]
"मम्मा नंदा चोरी करती मेरे टाइगर का अंडा चुराया, पूछे इसको।" [23]
"मझदार से तू कर दे बेड़ा पार, दुनिया के पालनहार " [24]
"अरे, मेरे हंसने को क्या हुआ रे?मैं कितना कोशिश किया पर हंसने को आया कि नहीं।"[25]

भाषा शैली :

पात्रों की भाषा शैली महानगरीय है । भाषा में मुंबईयाँ भाषा का प्रभाव है । भाषा शैली पात्रानुकूलन है। कहानी के पढ़े-लिखे पात्र अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करते हैं। मुंबईयाँ भाषा में कुछ शब्दों का प्रयोग देखिए जैसे-शिरीदेवी, अब्भी,कू(को) मौसी को मावशी, जास्ती ,मई को में उसको आदि शब्दों का उपयोग हुआ है। भाषा शैली पाठकों के मन पर प्रभाव डालने में सफल हुई है।

वातावरण :

प्रस्तुत कहानी का वातावरण पारिवारिक है मुंबई के वातावरण में कहानी प्रारंभ होती है शहरी जीवन शैली वाला वातावरण में होने के कारण भाषा का भी अलग रूप देखने को मिलता है। सूर्यबाला ने इस कहानी में महानगरीय वातावरण का निर्माण करते हुए भाषा शैली, देशकाल आदि का चित्रात्मक वर्णन किया है।

उद्देश्य:

भारतीय नारी की संघर्ष यात्रा का परिचय देना सूर्यबाला का एकमात्र उद्देश्य है।इस कहानी के साथ ही सूर्यबाला नशेबाजी, शराब की लत को भी फटकार लगाई। सूर्यबाला ने इस कहानी के माध्यम से समाज को एक संदेश के रूप अपना रोष प्रकट किया है।

आदमकद :

'आदमकद' कहानी की शुरुआत और अंत दोनों ही गांव की संस्कृति से संबंध रखती है सूर्यबाला ने 'आदमकद' कहानी के ऊपर से भारतीय नारी के संघर्षशील जीवन का चित्रण किया है । 'आदमकद' कहानी में कामता मामी की जीवन के संघर्ष यात्रा को सूर्यबाला ने बताया हैं।कामता मामी के पति की मृत्यु के बाद कामता मामी एक स्वाभिमानी स्त्री के रूप में ही अपना जीवन गुजारती है। कामतामामी चोरी, नशेबाजी पर भी अपनी ओर से तेज प्रहार करती है। सूर्यबाला ने गांव में निवास करने वाले लोगों की समस्याओं को इस कहानी के माध्यम से उजागर करने का प्रयास किया है।

पात्र :

कहानी का मुख्य पात्र कामता मामी है जो अपने जीवन की संघर्ष यात्रा को सहज रूप से जीती है। वह एक स्वाभिमानी भारतीय नारी के रूप में प्रकट होती है। वह उसके जीवन में आने वाली अनेक समस्याओं का सामना साहस और निडरता से करती है। गौण पात्रों के रूप में कामता मामी के पति का उल्लेख हुआ है। इसके अलावा लाजवंती और उसकी बेटी भी कहानी में गौण पात्रों के रूप में अपना सहयोग प्रदान करते हैं।

संवाद :

"आदमी जरा चार पढ़े- लिखो के बीच -उठे- बैठे तो हाथ पैर हिलाने का हुनर आए.... जिंदगी झूठे पत्तल की तरह चाटकर फेंक देने की चीज थोड़ी हुई अपनी कमाई के चार पैसों का सुख कारों के खजाने से बढ़कर..." [26]

"वह बेगैरत है तो है, मेरा मर्द है रहने दो उसे ,जैसा भी है वह है।" [27]

"चलती हूं" उसने बच्चे की उंगली थाम ली छप्पर उखड़ गया मेरा... और दूसरे हल का इंतजाम करना है....." [28]

प्रस्तुत संवादों में मानव जाति की दयनीय स्थिति का दर्शन होता है संवाद मानव मन को छू लेने वाले ज्ञानवर्धक तत्वज्ञान से भरपूर और जीवन की कला सिखाने वाले हैं।

भाषा शैली :

कहानी की भाषा शैली गांव की भाषा को महत्व देने वाली है कहीं-कहीं पर अंग्रेजी भाषा का भी प्रयोग देखने को मिलता है कुछ शब्द शब्द भी है क्योंकि भाषा का उच्चारण गांव के लोगों द्वारा किया गया है इसलिए शब्दों में अशुद्धता प्रकट होती है।

देशकाल :

भारतीय संस्कृति का पालन करने के लिए गांव के वातावरण को दर्शाया गया है।गांव के परिदृश्य को मध्य नजर रखते हुए सूर्यबाला ने गांव के सभ्यता और संस्कृति का परिचय इस कहानी के माध्यम से दिया है।

उद्देश्य :

भारतीय नारी की संघर्ष यात्रा का परिचय देना सूर्यबाला का एकमात्र उद्देश्य इस कहानी के माध्यम से सार्थक होता है। साथ ही नशेबाजी, शराब की लत और अन्य कई समस्याओं को एक साथ फटकारने का भी सूर्यबाला का उद्देश्य रहा है।

सांझवाती :

सांझवाती कहानी को दो परिवारों की कहानी है इसे पारिवारिक समस्याओं को दर्शाया गया है। कहानी में 80 साल का पंजाबी और बहत्तर साल की हीर बेगम जो पंजाबन है। दोनों की जीवन यात्रा को प्रस्तुत किया गया है सूर्यबाला ने कहानी के मुख्य पात्र के रूप में पंजाबी पात्र हीर और रांझा को लिया

है । कहानी में हमें नई और पुरानी पीढ़ी की सोच में विचारों में किस प्रकार का अंतर है उसे बताने का प्रयत्न सूर्यबाला ने इस कहानी के माध्यम से किया है इस कहानी के आधार पर ही अपनी 11 कहानियों का संकलन सूर्यबाला ने इसी शीर्षक के अंतर्गत किया है यह कहानी प्रेम के स्वरूप का प्रतीक है।

पात्र :

'सांझवाती कहानी'का मुख्य पात्र हीर और रांझा है जो पंजाबी प्रेम कहानी के आधार पर है। सारी कहानी इन्हीं पात्रों के इर्द गिर्द घूमती है। अगर- गौणपात्रों में देखा जाए तो जस्सी बहू, पंपी आदि का उल्लेख किया गया है।सूर्यबाला गौण एवं मुख्य पात्रों से इस कथा में प्राण डाल दिए हैं।यह सारे पात्र कहानी में अपना सहयोग देकर कहानी को दिलचस्प और पठनीय बनाते हैं।

भाषा शैली :

'सांझवाती'कहानी का लेखन कार्य सूर्यबाला ने संवाद शैली में किया है।शुरुआत से लेकर अंत तक इस कहानी में संवादों की मात्रा अधिक देखी जाती है।जब दो भिन्न भाषा के परिवार एक दूसरे के संपर्क में आते हैं तब अपनी भाषा का कैसा प्रभाव डालते हैं यह देखने को मिलता है। पंजाबी भाषा का भी प्रयोग हुआ है शब्द गल्लाए, कुड़िया, चंगा।

संवाद :

"अरी तो रोटी क्या सिर्फ रोटी खाने को कैते हैं ? अब्भि तो कितनी सारी चीजें हैं रोटी के नाम पर..." [29]

"हां अब हमारा भी तो दुकान उठाने का वक्त आ गया.....सारी उम्र की जमा पूंजी नयों के हाथों शॉप शटर गिरा देना है..." [30]

वातावरण :

'सांझवाती' कहानी में महानगरीय जीवन की झलक को सूर्यबाला ने अपने शब्दों में प्रस्तुत किया है जो बिना शहरों में बोले जाने वाली भाषा का उपयोग और

दो महानगरीय लोगों के द्वारा भाषा को कैसे उपयोग किया जाता है उसे सूर्यबाला ने इस कहानी के माध्यम से दर्शाया है।

उद्देश्य :

दो भिन्न भाषा वाले लोगों के बीच के संबंधों और संस्कृति को दर्शाने का प्रयास सूर्यबाला ने किया है। यह कहानी पंजाबी परिवार से और उनके संस्कृति और परंपराओं, खानपान ,जीवन शैली ,रहन-सहन आदि का परिचय सुरेवाला ने इस कहानी के माध्यम से पाठकों को करवाया है।

दिशाहीन :

'दिशाहीन' कहानी महानगरों में निवास करने वाले लोगों के जीवन से जुड़ी समस्याएं जैसे वहां की शिक्षा व्यवस्था भाषा रहन-सहन आदि पर प्रकाश डालने का कार्य सूर्यबाला ने किया है। इस कहानी में जो छात्र गांव से महानगरों में पढ़ने के लिए आते हैं उन छात्रों के प्रति देखने का नजरिया आदि की ओर सूर्यबाला ने हमारा ध्यान केंद्रित किया है।'दिशाहीन' कहानी कॉलेज के कुमार की कहानी है जो शहर में अपनी पढ़ाई करने आता है, परंतु शहर में रहने के बाद भी वह अपने गांव की संस्कृति, परंपरा, आदर्श ,आत्मसम्मान अपने आत्मविश्वास को बचाए और बनाए रखने में सफलता प्राप्त करता है। वह पाश्चात्य संस्कृति का विरोध करता हुआ दिखता है वह उसके लिए विद्रोही बनकर अंग्रेजी मानसिकता की गुलामी की जंजीरों को तोड़ना चाहता है। वह एक स्वाभिमानी आदर्श विद्यार्थी के रूप में हमें दृष्टिगत होता है। महानगर में आकर भी वह यहां अपने आपको कहीं एडजस्ट नहीं कर पा रहा है। यह युवक हमारी भारतीय संस्कृति के उपासक में रूप में हमें दिखाई देता है।'दिशाहीन' की संपूर्ण कहानी इसी युवक के आसपास घूमती नजर आती हैं।

पात्र :

इस कहानी का मुख्य पात्र कुमार है जो अंग्रेजी मानसिकता की गुलामी करने वालों को विरोध करता है। जो भारतीय संस्कृति का उपासक है वह पूरी कहानी में अपने आत्मसम्मान की रक्षा करता है। उसमें अटूट आत्मविश्वास और संस्कार भरे पड़े हैं। वह एक विद्रोही की भांति अपना आक्रोश प्रकट करता है उसके अलावा कहानी के गौण पात्रों में पिताजी, बाबूजी ,समित, खन्ना प्रेमशंकर ,कॉलेज के छात्र सभी पात्र कथा को आगे बढ़ाने में अपना सहयोग प्रदान करते हैं।

संवाद :

कहानी के संवादों का सूर्यबाला ने बहुत ही सटीक रूप से प्रदर्शित किया है। जो मानव को प्रेरणा तथा भारतीय संस्कृति को बचाए रखने में हमें कहीं ना कहीं झंझोर देता है।

"अलीफ,बे अब्ब

माई खाना देगी कब्ब?

बेटा पढ़ के आईबे तब..." [31]

"वहां एक मटकी ले जाता हूं तो सब टूट पड़ते हैं। बराबर गांव से गल्ला-पानी न पहुंचता तो जाने इसका बाप कुटुंब की गाड़ी कैसे खींचता।"[32]

"सुखी रहो अपने गांव और देश का नाम उज्जवल करो।"

"आत्मसम्मान खोकर आत्मविश्वास... कितना विडंबनापूर्ण शब्द है, नहीं-नहीं ! मैंने अपनी दूसरी आवाज का गला घोंट दिया...।" [33]

देशकाल :

कहानी का देश काल और वातावरण कहानी के अनुकूल सूर्यबाला ने प्रस्तुत किया है।कहानी की कथा गांव और शहरी दोनों स्थलों की जीवनशैली से जुड़ी हुई है।इस कहानी में गांव और शहरी जीवन में क्या अंतर है यह सूर्यबाला ने इस कहानी के माध्यम से दर्शाए हैं। गांव का रहन- सहन और शहर का रहन-

सहन, भाषा ,खानपान लिबास, रहनी करनी, में क्या अंतर है यह इस कहानी में दृष्टिगत होता है। इस कहानी के माध्यम से सूर्यबाला ने दो भिन्न-भिन्न जीवनशैलियों का अंतर पाठकों को बताया है।

भाषा शैली :

कहानी की भाषा शैली वर्णनात्मक शैली में प्रस्तुत की गई है।कहानी में संवाद नहीं के बराबर प्रयोग किए गए हैं।इस कहानी में संगीतमय शैली का भी उपयोग किया गया है।कहीं-कहीं अंग्रेजी भाषा का भी प्रयोग देखने को मिलता है।

उद्देश्य:

कहानी का उद्देश्य एक ऐसे 'दिशाहीन' कॉलेज युवक की त्रासदी का चित्रण है जो भारतीय संस्कृति का बड़ा उपासक है और अंग्रेजी मानसिकता का विरोध करता है। इस कहानी का मुख्य उद्देश्य यही है कि भारतीय युवाओं को देश की सांस्कृति के प्रति सम्मान की भावना उजागर करना और उनमें स्वाभिमान आदर्श, देशभक्ति के गुणों का विकास करना मुख्य उद्देश्य है।

कंगाल :

'कंगाल' कहानी में सूर्य बनाने भारतीय संस्कृति, परिवार की समस्या,भाषा ,बेरोजगारी आदि भारत के आजाद होने के बाद देश में निर्मित होने वाली समस्याओं को अपनी कहानी कंगाल के माध्यम से उजागर किया है। यह कहानी एक मध्यमवर्गीय परिवार से संबंधित है कहानी है। कहानी का नायक विनय अर्थात (बिनै भइया) के माध्यम से देश में फैली समस्याएं जैसे बेकारी, बेरोजगारी ,आबादी आर्थिक समस्या ,तंगहाली भरा जीवन और इन सब का मध्यम वर्ग के परिवार पर क्या प्रभाव पड़ता है उसका संपूर्ण रूप से चित्रात्मक वर्णन सूर्यबाला ने अपनी इस कहानी में किया है।

पात्र :

इस कहानी मुख्य पात्र विनय है जो अपने जीवन में बेरोजगारी की समस्या से गुजरते हे बार-बार वह नौकरी की तलाश करता है। इंटरव्यू देता रहता है पर उसे निराशा ही हाथ लगती आज़ादी के बाद ही देश बेरोजगारी की समस्या फैली हुई और आज आधुनिक युग इस समस्या ने बहुत बड़ा विकराल रूप धारण कर लिया आज की युवा पीढ़ी पढ़ी लिखी परंतु फिर भी लिए रोजगार बेकारी की समस्या उत्पन्न होती हैक्योंकि आज़ादी के बाद निरंतर हमारे देश की आबादी में बढ़ावा हुआ है । देखा जाए तो आबादी का स्तर इतना बड़ा है कि विश्व में अब हम चीन के बाद दूसरे स्थान पर आ गए हैं । इसी वजह से यह समस्या एक चुनौती के रूप में सामने आई है । इसी चुनौती को सूर्यबाला ने विनय के माध्यम से उजागर करने का प्रयत्न किया है ।

कहानी के गौण पात्रों में बाबूजी, बिन्दी, भाभी, पवन, इन्दू दीदी, चुन्नू, अम्मा, मँझले भैया आदि पात्र भी कहानी में अपना सहयोग देते हैं ।

संवाद :

'कंगाल' कहानी के संवाद देश की समस्याओं पर गहरी चोट करने वाले हैं। संवादों में भारीपन है जो हमें सोचने के लिए मजबूर करते हैं ।

"हाँ-हाँ, हमें मालूम है, इंटरव्यू देने गए थे, नौकरी के लिए... न मामाजी!" [34]

"हाँ, सब कुछ नार्मल ही है .... बस मैं... मैं ही बीच में अकेला एक बेडौल चुप्पी लिये भटकता रहता हूँ, अपने प्रति नितांत आशंकित, अविश्वास-सा...." [35]

"चीख नहीं पाता लेकिन लगता है कि वह खामोश चीख मेरे शरीर के अंदर धमनियों-शिराओं में फैलती उन्हें चिथड़े-चिथड़े किए डाल रही है..." [36]

कहानी के संवाद पात्रानुकूल हैं जो संवाद के माध्यम से अपनी समस्याओं को उजागर करते हैं ।

देशकाल:

कहानी में नगरीय जीवन शैली का वातावरण है । दिन-ब-दिन बढ़ने वाली आबादी के कारण देश में कैसा वातावरण निर्मित होता है उसका वर्णन देखने मिलता है । कहानी का परिदृश्य आज़ादी के बाद का है ।

भाषा शैली:

महानगरीय भाषा का उपयोग किया गया है । पात्र पढ़े-लिखे होने के कारण कहीं-कहीं पर कहानी में अंग्रेजी संवादों और अनेक शब्दों का भी प्रयोग किया है । सूर्यबाला ने इस कहानी की शुरुआत में ही संगीतमय शैली में संवाद प्रस्तुत किये हैं जो भाषा शैली का नया रूप है । अंग्रेजी शब्द स्वेटर, मिनी कोट, इंटरव्यू, सेकेंड्स, टाई, मेडिकल आदि शब्दों का उपयोग हुआ है।

उद्देश्य:

सूर्यबाला ने कहानी का शीर्षक ही 'कंगाल' रखा है । कहानी का नाम सुनते ही कहानी का परिचय मिल जाता है । देश में फैली आबादी, बेरोजगारी, आर्थिक समस्या, पारिवारिक समस्या और मध्यमवर्गीय परिवार की मानसिक स्थिति का अंकन करना सूर्यबाला का मुख्य उद्देश्य रहा है ।

4.4 कात्यायनी संवाद:

'कात्यायनी संवाद' सूर्यबाला द्वारा प्रस्तुत कहानी संग्रह है जिसका प्रकाशन ग्रंथ अकादमी द्वारा किया गया है । यह कहानी संग्रह सन 1996 में प्रकाशित हुआ था । आज इस कहानी संग्रह में तेरह कहानियों का समावेश किया गया है । सूर्यबाला द्वारा रचित हर कहानी एक-दूसरे से भिन्न है । इस संग्रह के विषय में स्वयं सूर्यबाला ने कहा है कि वह क्यों लिखती है? स्वयं को ही वह कटघरे में खड़ा करती है । सूर्यबाला ने इस कहानी के द्वारा मानव के क्षणभंगुर जीवन का वर्णन किया है । सूर्यबाला की दृष्टि हमेशा गांधीवादी रही है ऐसा लगता है । उनके संदर्भ में यह प्रश्न हमेशा उठता है कि उन्होंने नारी जागरण की दृष्टि से कुछ नहीं

लिखा । वे यह मानती हैं कि विद्रोह करने से पहले विवेकपूर्ण कार्य करना चाहिए। उनको विद्रोह की भावना जीवनोपयोगी नहीं लगती । आज के युग में नारी अस्मिता, नारी मुक्ति और नारी स्वातंत्र्य सबसे बड़ी चुनौतियाँ हैं । पर वह विद्रोह करके इन समस्याओं को सुलझाना नहीं चाहती । इसके लिए वे विवेकपूर्ण रास्तों को ढूँढ़ती नज़र आती हैं ।

चतुर्थ अध्याय के दरमियान सूर्यबाला द्वारा रचित कहानी संग्रह 'कात्यायनी संवाद' का कहानी के तत्त्वों के आधार पर मूल्यांकन करना मेरा मुख्य हेतु रहेगा। इसमें नये संस्करण में 13 कहानियों का संग्रह किया गया है । प्रत्येक कहानी का मैं तत्त्वों के आधार पर मूल्यांकन करुँगी।

बिन रोई लड़की :

प्रस्तुत कहानी 'बिन रोई लड़की' मे बिन रोई लड़की अपने मनोभावों को व्यक्त नहीं कर पाती । कहानी के दोनों पात्र उस भावना को जानते हुए उसके मर्म को समझते हैं पर अपनी भावना को व्यक्त नहीं करते हैं और अनजान बने रहते हैं । लड़की को प्रेम होते हुए भी वह अपने मुँह से बोल नहीं पाती है और आखिर तक वह इसी कोशिश में लगी रहती है कि किसी तरह लेखिका उसकी भावना को समझे और उसे उजागर करे पर लेखिका भी अनजान बने रहने का ढोंग करती है । लड़की की भावनाएँ, उसकी आँखों से आँसू बनकर बहती हैं । पूरी कहानी स्नेहल नाम की लड़की पर आधारित है जो लेखिका के पड़ोस में रहकर ब्राइडल मेक-अप का काम करती है । वह थर्ड फ्लोर की बालकनी से हमेशा लेखिका के बेटे को बार-बार देखती है । लेखिका की बेटी का जब शृंगार ट्रायल होता है तब वह आकर सहायता करती है । वह तब लेखिका से नई जगह के संदर्भ में पूछताछ करती है। इस कहानी में स्नेहल को केन्द्र स्थान पर रखा गया है । स्नेहल निरीह चेहरेवाली, कजरौटी आँखोंवाली, फिरोजी दुपट्टे वाली,

शर्मीली लड़की है । 'बिन रोई लड़की' कहानी अपनी भावनाओं को कैसे बंधन में बंधा रखा जाता है यह हम स्नेहल नाम के पात्र से सिख सकते हैं।

पात्र :

इस कहानी का मुख्य पात्र स्नेहल है जो ब्राइडल मेकअप करने का कार्य करती है । वह लेखिका की पड़ोसन है जो बालकनी में खड़े रहकर हमेशा लेखिका के बेटे को ताकती रहती है । लड़की का स्वभाव सहायकपूर्ण है । वह अपनी भावनाओं को व्यक्त करने में असमर्थ है । जो अंदर ही अंदर यह सोचती है कि लेखिका खुद उसकी भावनो को अपनी लेखनी के माध्यम से उजागर करे । जब लेखिका का ट्रांसफर हो जाता है तब वह लड़की लेखिका को गुच्छेदार फूलों से बधाई देती है ।

इस कहानी के अन्य पात्रों में आंटी, मेघा, जया, रचना आदि का उल्लेख मिलता है ।

संवाद :

कहानी के संवाद पाठक के मन में जिज्ञासा उत्पन्न करते हैं । कहानी को पढ़ते वक्त कहानी के संवाद भारी और कठिन नहीं लगते हैं ।

"नहीं-नहीं," मैं तत्क्षण सहानुभूति की उस धार को काटकर दो टूक कर देती हूँ। "वह सब तो प्रोफेशनल पैकर्स पुरी मुस्तैदी से कर रहे हैं । थैंक्स!" [37]

"चलूँ मैं..." पलकें झूकीं जैसे पंखुड़ियोँ झरी हों । "हम शायद अब कभी न देख, मिल पाएँ न, आंटी।" [38]

"हम शायद अब...."

"अरे, नहीं-नहीं... ऐसा कुछ नहीं । जिंदगी में लोग मिलते-बिछुड़ते रहते ही हैं । लो चॉकलेट लोगी तुम?" [39]

देशकाल :

'बिन रोई लड़की' कहानी का वातावरण शहरी है । यह एक पारिवारिक कहानी है । कहानी का वातावरण पारिवारिक है । घरेलु माहौल का वातावहण है

। शहरों में बढ़ती फ्लैट संस्कृति भी देखने को मिलती है । कहानी के अनुसार कहानी का वातावरण उस पर बंध बैठता है ।

भाषा शैली:

कहानी की भाषा शैली शहरी जीवनशैली के अनुरुप है । पात्रों को बोलते-बोलते अंग्रेजी के वाक्य या शब्दों का प्रयोग करते देखा जा सकता है । पात्रों पर अंग्रेजी भाषा का अधिक प्रभाव देखने मिलता है - 'फन, थैंक्स-अलॉट, ट्रांसफर, एस्टर्स, कार्निस, ब्राइडल, मेकअप, ब्लड प्रेशर, जॉगिंग, टॅकसुट' आदि का उपयोग किया है ।

उद्देश्य :

प्रस्तुत कहानी के माध्यम से भारतीय संस्कृति का परिचय तथा शहरी नगरी जीवन तथा फ्लैट की जीवनशैली को उजागर किया है । मन के भावों को प्रकट न करने का मनोभाव व्यक्त किया है । शुरुआत से लेकर अंत तक कहानी अधूरी-सी लगती है क्योंकि पात्र खुलकर अपनी भावनाओं को व्यक्त नहीं कर पाते हैं ।

बिहिश्त बनाम मौजीराम की झाड़ू

प्रस्तुत कहानी महानगर में सड़क या रोड़ पर झाडू लगाने वाले सामान्य मानव की बात नहीं हो रही बल्कि महानगर के एक अति आलीशान विशालकाय डायमंड टावर्स के विशालकाय कॉम्पलेक्स में झाडू मारने वाले की बात हो रही है । इस टॉवर में मौजीराम ऐसे झाडू लगाता है जैसे वह अपनी प्रेमिका के बाल सँवार रहा हो ऐसा लगता है । वह इस टॉवर में झाडू मारने के काम को महाप्रसन्नता, सम्मोहित, परम गौरवान्वित मान रहा था । झाडू लगाते-लगाते मौजीराम मर्सिडीज़ में से उतरने वाले मेमसाहब और साहबों को निहारता रहता है जैसे केवट प्रसंग चल रहा हो । उसे अपने काम के दौरान बडे-बड़े लोगों के पारिवारिक जीवन, उनकी तहजीब, रवैया आदि की खबर रहती थी ।

मौजीराम अपने इस जीवन का भरपूर आनंद उठाता था और बडे विस्मय से झाड़ू लगाता था । वह अपने आप को रामायण के किसी पात्र से कम नहीं समझता था । वह डायमंड टॉवर को किसी स्वर्ग से कम नहीं समझता था । यहाँ ऐसे लोगों का निवास स्थान है जो सारी सुख-सुविधाओं से लैस हैं और इन लोगो को देखकर मौजीराम अपने आप को गौरवान्वित समझता है। भले ही वह गरीब हो पर वह इस चकाचौंध से दूर नहीं है ।

पात्र :

प्रस्तुत कहानी का मुख्य नायक एक स्वर्ग समान महानगरीय सुख-सुविधा से भरपूर डायमंड टॉवर में झाड़ू लगाने वाले मौजीराम की कहानी है । वह इस टॉवर में काम करके अपने आपको गौरवान्वित महसूस करता है । वह झाड़ू लगाते-लगाते बड़े-बड़े लोगों की गतिविधियों पर भी नज़र रखता है । वह अपने आपको रामायण के किसी पात्र से कम नहीं समझता और वह यहाँ काम करना उसका नसीब समझता है ।

गौण पात्रों के रूप में मेमसाहब, साहब, वाचमैन आदि पात्रों का उल्लेख देखने को मिलता है।

संवाद :

इस कहानी के संवाद पात्रानुकूल हैं जो आधुनिक जीवनशैली को उजागर करते हैं ।

"देखा! हम कितने खौफनाक कुत्तों के नौकर हैं- अल्सेशियन, डॉबरमैन, बॉक्सर..." [40]

"खर्च तुम्हें करना है, मरजी तुम्हारी, चाहे कुत्ते पर खर्च करो, चाहे कॉस्मेट्किस् पर"[41]

वातावरण :

प्रस्तुत कहानी का वातावरण महानगरीय है । आज़ादी के बाद महानगर में रहने वाले उच्चवर्गीय लोगों के रहन-सहन में जो बड़े पैमाने पर बदलाव आया है

उसे दर्शाया गया है । इस कहानी में पात्रों पर पाश्चात्य संस्कृति का कितना बड़ा प्रभाव पड़ा है उसे देखा जा सकता है और कहानी का शीर्षक भी अलग है जो पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करता है ।

भाषा शैली :

यह एक महानगरीय कहानी है । अलंकृत भाषा का प्रयोग किया गया है । साधारण मनुष्य के मन को छू जाए ऐसी भाषा का प्रयोग किया गया है । कहीं-कहीं अंग्रेजी भाषा के शब्दों का और वाक्यों का भी उपयोग देखने को मिलता है। अंग्रेजी शब्द जैसे डायमंड टॉवर्स, डुप्लेक्स, शोपर्स, युनिफॉर्म, डॉबरमैन, बॉक्सर, पोर्टिको, इंपोर्टेड, टेंशन आदि अंग्रेजी शब्दों को देखा जा सकता है ।

उद्देश्य :

कहानी का उद्देश्य सामान्य मनुष्य और उच्च परिवार के रहन-सहन, भाषा, परिवेश, पहनावे, खान-पान में कितना जमीन-आसमान का अंतर है उसे दर्शाया गया है । एक सामान्य मनुष्य ऐसे माहौल को देखकर भी कैसे अपने आप को नसीबवाला और गौरवान्वित महसूस करता है तथा अपनी सारी इच्छाओं को भूल जाता है- उच्च वर्ग और गरीब वर्ग के अंतर को दर्शाया गया है इस कहानी में । महानगरीय जीवन शैली के भी दर्शन होते हैं इस कहानी में हमें।

कागज़ की नांवे, चाँदी के बाल

यह एक ऐसी छोटी लड़की की कहानी है जिसमें वो मुक्त स्वतंत्र रूप से जीवन जीना चाहती है, परंतु उसके माता-पिता का तलाक होने के बाद उसके पिता उसे कितनी पेशियों, कितना पैसा पानी की तरह बहाने के बाद उसे उसकी माँ से कोर्ट में जीतकर लाए हैं ।

वह मुक्त वातावरण में खेलना चाहती है, अपनी माँ के हाथ की नरम रोटियाँ खाना चाहती है परंतु ऐसा करने में उसके पिता को अपनी खानदानी इज्जत और साख समाज में खोने का डर लगता है । इससे लड़की के अरमानों

का गला घोंट दिया जाता है । इस लड़की को खानदान, कोठी, दबदबा जैसे भारी-भरखम शब्द समझ में नहीं आते ।

अब वह बड़ी होने के बाद, उसकी उम्र बचपन की बीत चुकी है, परंतु अभी-भी वह उन्हीं यादों में खोई रहती है । वह परिवार का प्यार, ममता चाहती है, पर उसका परिवार तो सिर्फ समाज में अपनी शाख की परवाह करता है । लड़की के पिताजी वकील होने के कारण सभी प्रकार की सुख-सुविधाएँ मौजूद हैं।

पात्र :

'कागज़ की नावें, चाँदी के बाल' कहानी की नायिका राजरानी है जिसके माता-पिता का तलाक हो जाता है और इस बात का उसके बाल-मानस पर गहरा प्रभाव पड़ता है । वह भी सामान्य बच्चों की तरह अपने माता-पिता को साथ में देखना चाहती है, उनके प्यार और ममत्व के लिए उनसे उम्मीद रखती है । परंतु उसके पिता बड़े वकील हैं। वे उसे कोर्ट के जरिए हासिल कर ही लेते हैं । उसे सारी सुख-सुविधाएँ उपलब्ध करवाते हैं- कोठी वगैरह सब उसके नाम कर जाते हैं।

गौण पात्र के रूप में राजरानी के पिता-माँ, राजकुमार, चमेली, दरबान, बड़ी बुआजी, मिसरानी, नौकर-चाकर, साधारण घर का लड़का, उसकी माँ, उसकी बहन आदि पात्रों का उल्लेख मिलता है ।

संवाद :

कहानी के संवादों में बालमन में छुपी भावनाओं को व्यक्त किया गया है । इस कहानी को हम एक बाल कहानी के रूप में भी देख सकते हैं । पेश है कहानी के कुछ संवाद-

"तूने किसी राजा का राजमहल देखा है?" अचानक वह ठोड़ी से हाथ हटाकर पूछता है ।"

"नहीं तो, लेकिन एक बार पिताजी मुझे एक जागीरदार साहब की हवेली में ले गये थे, खुब बड़ी हवेली थी उनकी ।" [42]

"इसकी माँ ही नहीं है ।" (दुःख सहानुभूति नहीं यहाँ भी, मात्र हकीकत बयानी)

माँ बोली, "रोज आने ही कौन देगा? अब इसे जल्दी से पहुँचाओ। नहीं तो इसे डाँट पड़ेगी।" [43]

"जो यह रोज आएगी तो हम रोज रुखी रोटी खाएँगे?"

कहानी के संवादों में बालमन की निश्छल अभिव्यक्तियाँ देखने को मिलती हैं । कहानी के संवाद बाल मनोविज्ञान को ध्यान में रखते हुए लिखे गए हैं । जो बालमन, पाठकों तक सीधे पहुँचते हैं ।

देशकाल एवं वातावरण :

देशकाल और वातावरण की दृष्टि से कहानी सर्वश्रेष्ठ है । कहानी थोड़ी-सी कल्पना से जुड़ी हुई भी लगती है । कहानी को देशकाल में सूर्यबाला ने पूरे बाल मनोविज्ञान का ज्ञान प्राप्त करके ही इस कहानी का वातावरण निर्मित किया है । 'कागज़ की नावें, चाँदी के बाल' लेखिका की कथा गाँव और महल के परिवेश में जन्म लेती है ।

भाषा शैली :

सूर्यबाला ने बालमानस को समझते हुए बालसुलभ भाषा का उपयोग किया है जो पाठकों के हृदय पर सीधा असर करतीह । इस कहानी की भाषा बच्चों के बीच होनेवाली बोलचाल की भाषा है ।

उद्देश्य :

सूर्यबाला ने उच्च-वर्ग और गरीब वर्ग के बीच दो पात्र राजरानी और राजकुमार के बालमानस को उजागर किया है । इस कहानी के माध्यम से यह बताया है कि छोटे बच्चों को उच्च वर्ग और गरीब वर्ग के बीच का कोई अंतर नज़र नहीं आता । उनकी नज़र में सब बराबर हैं । उन्हें दुनिया के बनाए उसूल-नीतिनियमों से कोई सरोकार नहीं है । बच्चे आखिर में बच्चे ही होते हैं, निश्छल और निर्मल हृदय वाले ।

एक लॉन की जबानी :

यह एक लॉन की आत्मकथा के रूप में कहानी लिखी गई है ।

"मैं? कोई मामूली शख्सियत नहीं हूँ । इस शहर की सबसे धनीमानी और अत्याधुनिक बस्ती के बीचोंबीच, अर्द्धचंद्राकार नहीं बल्कि अर्द्धअंडाकार लॉन हूँ मैं ।"[44] यह एक लॉन जो तीनों तरफ से एयरकंडीशनर और रूफ गार्डनों से लदी-फदी बिल्डींगों और चौथी तरफ अंगुठी के नगीने-सा स्वीमिंग पुल इन सबके बीच सुंदर-सी यह लॉन बनी है जो यहाँ बसने वाले लोगों को आराम देने, गुफ्तगू करने और टहलने के लिए बनाई गई है । सारा दिन इस लॉन पर कोई न कोई प्रवृत्ति निरंतर चलती रहती है । पर यह लॉन थकती नहीं है । सबको एक जैसी दृष्टि से ताकती रहती है । सबकी बातें चुपचाप सुनती रहती है । यहाँ पर लेखिका ने लॉन को व्यक्तित्व के रूप में ही ढाल दिया है । बस एक जगह पड़ी-पड़ी, सबकी गतिविधियों को निहारती रहती है । बच्चों से लेकर आया, बड़े-बुढ़े सब इस पर आने का आनंद लेते हैं । बच्चे तो इस पर खेलने का लुत्फ उठाते रहते हैं। सारे महानगर में यही एक शांति से बैठने का एक मात्र स्थान है ऐसा यहाँ रहने वाला निवासियों को लगता है।

रोज लॉन का बड़ा ध्यान रखा जाता है । इसकी घास को रोज पानी से नहलाया जाता है। कहानी में लेखिका ने अपने शब्दों से लॉन को एक जीवित व्यक्ति का स्वरूप प्रदान किया है ।

पात्र:

इस कहानी का मुख्य पात्र अगर हम देखें तो यह हरी-भरी लॉन ही है जिसे सूर्यबाला ने एक व्यक्तित्व के रूप में ढाल दिया है । लॉन सारे दिन सब लोगों की गतिविधियों पर ध्यान रखती है । सबकी परेशानियों, पारिवारिक समस्याओं और सबकी गुफ्तगू को बड़े ध्यान से सुनती रहती है । उसे इसमें बड़ा आनंद आता है। लॉन जब उस पर छोटे-छोटे बच्चे खेलते हैं तो उसे यह महसूस करके बड़ी प्रसन्नता होती है । वह अपने हृदय में फूली नहीं समाती है। लोग भी इस लॉन का

बड़ा ध्यान रखते हैं । रोज उसकी साफ़-सफ़ाई करवाई जाती है तथा इसे पानी से भी नहलाया जाता है ।

गौण पात्रों के रूप में आया, बड़े-बुढ़े और बच्चों का उल्लेख देखा जा सकता है ।

संवाद :

संवाद में लॉन अपने आप से ही बातें करती रहती है और संवादों के माध्यम से अपने मनोभावों को व्यतीत करती है । आत्मसंवाद शैली का प्रयोग किया गया है ।

"आओ! मेरे पेट पर खूब उछलो-कुदो। कलामंडियाँ खाओ, गुत्थमगुत्थी, कुश्तमकुश्ती हो.. आओ! .. चटकारेदार खबरें सुनाओ, अपने साहबों और मैडमों की लेकिन इस कॉम्पलेक्स की आया और बच्चे, सब आम बच्चों, आम आयाओं से पूरी तरह अलग।" [45]

"जरा देखिए, कितना मजेदार सीन है । अलग-अलग बच्चा अलग-अलग अपनी आया के दायरे में सिमटा हुआ सा ।"

"नो बाब! गुड ब्वॉय नो... और दाँत किचकिचाती अपने सहमे बच्ची की बाँह मुठ्ठियों में भींचे, भद्र शब्दों में धीमे से झल्लाकर बिफर उठी... चुप्प! एकदम चूप... चूप कर। पचास दफे कह दिया! यहाँ रोते नहीं है, कौन-सी गोली लग गई है।" [46]

देशकाल :

इस कहानी में महानगरीय वातावरण है । यहाँ पर लॉन अपनी दिनचर्या से हमें अवगत करवाती है । सुबह और शाम का समय भी दर्शाया गया है। महानगरों के काँक्रीट के जंगलों के रुप में बताया है ।

भाषा शैली:

कहानी के पात्र पढ़े-लिखे हैं इसलिए सभ्य भाषा का प्रयोग करते हैं । कहानी के आरंभ से अंत तक पात्र शुद्ध और अंग्रेजी भा, का ज्यादातर प्रयोग

करते देखे जा सकते हैं । अंग्रेजी शब्दों जैसे रूफ, गार्डन, कॉम्पलेक्स, डिस्को, फास्टफूड, ईजी, चेयर, प्रोहीबीटेड, एरिया, ओवर लोडिंग, बॅटरी आदि शब्दों का उपयोग हुआ है । यह कहानी एक आत्मकथात्मक कहानी है। स्वयं संवाद शैली देखने को मिलती है ।

उद्देश्य :

इस कहानी का उद्देश्य लॉन की आत्मकथा के माध्यम से महानगरों में निवास करने वालों की समस्याओं को सुनना, उसके संबंध में सोचने-विचारने का एक विषय प्रदान करना है । चाहे लॉन एक निर्जीव है परंतु उसके बावजूद भी सूर्यबाला ने लॉन के माध्यम से मनुष्य की संवेदनाओं को व्यक्त किया है ।

'सीखचों के आर-पार'

सूर्यबाला द्वारा रचित यह कहानी एक पारिवारिक कहानी के अंतर्गत आती है । परंतु देखा जाए तो कहानी का प्रमुख पात्र के रूप में पत्नी प्रमुख है क्योंकि पत्नी घर का काम-काज देखते हुए नौकरी भी करती है । वह एक साथ दोहरी जिम्मेदारियाँ निभाती है । सूर्यबाला के अनुसार हर जगह स्त्री के प्रति समाज की दृष्टि अलग-अलग है चाहे स्त्री ऑफिस में हो, घर पर हो, बस में हो चाहे कहीं पर भी हो उसकी भूमिका अलग है । मगर फिर भी पति के द्वारा पत्नी पर संदेह किया जाता है । कहानी का सारा सार पत्नी के आस-पास ही घुमता दिखाई देता है । इसस कहानी में सूर्यबाला ने एक नौकरी-पेशा स्त्री की जीवनशैली को अपने शब्दों में बयाँ करने का प्रयास किया है ।

इस कहानी में पति-पत्नी के बीच के संबंधों को उजागर किया गया है । कैसे शहरी जीवन में दोनों पति-पत्नी अपना जीवनयापन करते हैं और इस दौरान दोहरी जीवन शैली, और नौकरी की भी जिम्मेदारी निभाती स्त्री की मनःस्थिति और मन की पीड़ा को दर्शाया गया है ।

पात्र:

कहानी भारत के इतिहास की साठोत्तरी दशक में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान स्थापित करती है। कहानी का मुख्य पात्र पत्नी है जो नौकरपेशा है और उसे उसके पति द्वारा कैसा मानसिक यातनाएँ दी जाती हैं उसका उल्लेख होता है । वह स्वतंत्रता का जीवन जीना चाहती है । समाज चाहे आज स्त्रियों की स्वतंत्रता की बात करता हो पर आज भी हम इस पत्नी की मनोदशा वाली कितनी ही स्त्रियो को हमारे आस-पास देख सकते हैं । स्त्रियों के प्रति समाज का दृष्टिकोण अभी भी पूरी तरह से खत्म नहीं हुआ है । इसीलिए यहाँ सूर्यबाला ने पत्नी के माध्यम से कहानी में हो रही उसकी यातनाओं को उजागर किया है ।

इसके अलावा कहानी के गौण पात्रों के रूप में मीसेस जलोटा, मिस प्रभू, मिस मार्गरिट आदि स्त्री पात्र दिखाई देते हैं । पुरुष पात्र में मलहोत्रा साहब का उल्लेख हुआ है ।

संवाद :

कहानी के संवाद पात्रानुकूल हैं तथा छोटे-बड़े संदर्भ में देखने को मिलते हैं ।

"घर की जिम्मेदारियों का इतना ही खयाल है आप लोगों को तो नौकरी की ओखळी में सिर देती ही क्यों हैं आखिर! आराम से घर बैठिए, जु है क्या..." [47]

"कहते हैं, तुम्हे क्या परेशानी है! घर में रानी बनी बैठी रहती है, सारे दिन खटने-कमाने की किल्लत से छुट्टी।" [48]

"रस्तोगी कह रहा था कि आज तुम्हें वीनस के पास से गुजरते देखा, वह तो शर्त लगाने को तैयार"[49]

"अरे, आपने फूल बहुत सुंदर सजाए हैं । सचमुच विश्वास न करने लायक।"

देशकाल :

देशकाल और वातावरण 1980 के दशक का लिया गया है । नारी जीवन में आनेवाली पारिवारिक समस्याओं को उजागर किया है । महानगरयी वातावरण का निर्माण किया गया है । आरंभ से लेकर अंत तक शहर में रहनेवाले पति-पत्नी के पारिवारिक रिश्तों, संबंध, व्यवहार को उजागर किया गया है ।

भाषाशैली:

'सीखचों के आर-पार' कहानी की भाषा सुंदर और सहज है । भाषाशैली पात्रानुसार है । कहानी शहरी होने से महानगरीय भाषा का प्रभुत्व देखा जा सकता है । कहानी समाज की वास्तविक स्थिति को उजागर करती है ।

उद्देश्य :

कहानी का उद्देश्य कामकाजी महिलाओं को दोहरी जिम्मेदारी सम्पूर्ण तन-मन से निभाने के बाद भी उसके उपर किस प्रकार की मानसिक यातनाएँ उसके पति द्वारा की जाती है तथा स्त्रियों की स्थिति आज भी शहरी हो या ग्रामीण विभाग, आज भी स्त्रियों को अपनी स्वतंत्रता और मुक्त जीवन शैली के लिए संघर्ष करते देखा जा सकता है ।

उत्सव :

सूर्यबाला की यह कहानी एक पारिवारिक कहानी के अंतर्गत आती है । कहानी का आरंभ दीपावली उत्सव मनाने से लेकर होता है । यह कहानी एक विधवा की जीवनयात्रा है जिसका नाम सुगंधा है, जो सूर्यबाला के यहाँ काम करती है । सूर्यबाला ने इस कहानी के माध्यम से समाज के दो वर्ग जैसे उच्च वर्ग और गरीबी रेखा के नीचे जीवनयापन करने वाले लोगों में एक उत्सव को किस तरह अलग-अलग स्तर पर मनाया जाता है उसका अंकन किया है । इस उत्सव के माध्यम से उनके रहन-सहन, खान-पान, आचार-विचारों में कितना अंतर देखा जाता है उस पर अपनी दृष्टि गोचर की है सूर्यबाला ने । 'उत्सव' कहानी के केन्द्र

में मनुष्य की स्वार्थी प्रवृत्ति दृष्टिगत होती है । जिन लोगों के पास सारी सुख-सुविधाएँ होती हैं फिर भी अपने स्वार्थ की मनोवृत्ति का त्याग नहीं कर पाते। इस कहानी के माध्यम से समाज के दो वर्गों की भिन्नता, मानसिकता, उनकी प्रवृत्तियों का उल्लेख किया है ।

पात्र:

कहानी का मुख्य पात्र सुगंधा नाम की स्त्री है जो लेखिका के यहाँ घरकाम करके अपने जीवनयापन के साधन जुटाती है । इस मुख्य पात्र के द्वारा ही समाज के दो भिन्न वर्गों के अंतर को सूर्यबाला बता पाई हैं ।

गौण पात्रों के रूप में सुगंधा का पति, सुलताना ब्रदर्स, उसका छोटा बेटा मिंटू, तनेजा साहब, खुल्लर, मुस्टर तन्खावाला, मगनभाई आदि का उल्लेख मात्र मिलता है ।

संवाद:

'उत्सव' कहानी संवाद की दृष्टि से श्रेष्ठतम है । इस कहानी के संवाद पाठकों में कौतुहल उत्पन्न करते हैं । कहानी के संवाद मर्मस्पर्शी भी हैं । पेश है कहानी के कुछ संवाद-

"आह! ये सब कितने दुःखी-दरिद्र हैं । क्यों न ज्ञानामृत की दो-चार घऊँटे इस नादान अकिंचन सुगंधा के हलक में भी उतारने की चेष्टा करुं?"

"अरे झाडू-पोछा तो रोज ही करती है, उसकी कोई बात नहीं; पर दीपावली भी तो मनाती होगी, मनाती है कि नहीं?" [50]

"हाँ तो सुन! भगवान तो कई होते हैं, कोई पैदा करता है, कोई पालन-पोषण करता है, कोई विद्या-बुद्धि देता है। कोई धन-संपत्ति देता है, कोई विघ्न-संकटों से रक्षा करता है, समझ में आया?" [51]

"अजीब बेवकूफी की बात करती हो तुम भी? अरे! प्रमोशन की बात का इससे क्या लेना-देना, वह तो आता-जाता रहेगा हर साल.."

"कहा न लेके जा.... सुबह आना, हम पूजा देर से करते हैं।"

देशकाल :

कहानी में दीपावली उत्सव मनाने का वातावरण दृष्टिगत होता है । कहानी का परिवेश आचार-विचार दो वर्गों के बीच में रही विषमताओं को दर्शाता है । इस कहानी में महानगरीय जीवनशैली की झलक दृष्टिगत होती है ।

भाषा शैली :

प्रस्तुत कहानी की भाषा महानगरीय है । कहानी पात्रानुकूल है । कहानी में उत्सव मनाने की बात की गई है जिसमें हमें भारतीय संस्कृति का असर देखने मिलता है । कहानी के कुछ पात्र पढ़े-लिखे होने के कारण अंग्रेजी भाषा का भी प्रयोग देखा जा सकता है। जैसे- पैकेट, ऑफिस, ड्राइवर, रोल, प्रमोशन, लेवेंडर, थैंक्स जैसे शब्दों को देख सकते हैं ।

उद्देश्य :

कहानी का उद्देश्य दो वर्गों के बीच की विषमताओं पर दृष्टि डालना है । एक ओर समाज का उच्च वर्ग है और दूसरी ओर गरीब वर्ग की बात की गई है । इस प्रकार हमारे देश में कितनी असमानता है उसे दर्शाया है ।

चोर दरवाजे:

यह कहानी एक पारिवारिक कहानी है। इस कहानी में पति-पत्नी और उनके बेटे बाबा का उल्लेख मिलता है । इस कहानी में पति-पत्नी के मन में आने वाले विचार उसे ही सूर्यबाला ने चोर दरवाजे से आने वाले विचार कहा है । पति और पत्नी दोनों ही पढ़े-लिखे हैं और दोनों की विचारशैली और देखने का दृष्टिकोण एक-दूसरे से भिन्न है । देखा जाय तो इसे एक मनोवैज्ञानिक कहानी के अंतर्गत भी रख सकते हैं। पति-पत्नी को एक-दूसरे के प्रति दैनंदिन जीवन में कैसे विचार आते हैं उसे सूर्यबाला ने अपनी कहानी के माध्यम से दर्शाने का प्रयास किया है । 'चोर दरवाजे' कहानी आज के आधुनिक जीवन से सीधा संबंध रखती

है । आज के भाग-दौड़ भरे जीवन में कितनी परेशानियों का सामना करना पड़ता है यह इस कहानी में बताया गया है ।

पात्र :

इस कहानी का मुख्य पात्र पति-पत्नी हैं । वे एक-दूसरे के प्रति क्या विचार रखते हैं उसे लेखिका ने अपनी कहानी के माध्यम से बताया है । दोनों का एक बेटा भी है । दोनों कैसे अपने वैवाहिक जीवन की गाड़ी को चलाते हैं उसका चित्रण किया गया है । उसी को लेखिका ने चोर-दरवाजे नाम का शीर्षक दिया है क्योंकि वे अपने विचार मुक्त रूप से व्यक्त नहीं कर पाते हैं ।

इस कहानी में गौण पात्र ना के बराबर हैं, सिर्फ बाबा का ही उल्लेख किया गया है ।

संवाद:

कहानी के संवाद शहरी जीवन से जुड़े हुए लगते हैं, जिसकी भाषा सरल और सहज है। कहानी के संवाद शहरी जीवन का यथार्थ भाव प्रगट करते हैं-

"इन व्हील की मिसेज डिकोस्टा इनॉगरल फंक्शन के लिए कुछ डिस्कस करना चाहती थी, बात कर लेना ।"

"उफ! मैं कितना चाहती हूँ कि तुम मुझसे एक बार, सिर्फ एक बार पूछो तो कि आखिर इस समय मैं समंदर पर क्यों जाना चाहती हूँ?" [52]

"गाड़ी तुम ले जाओ! मुझे हजेला की गाड़ी छोड़ जाएगी । हजेला का फ्लैट आ गया है ।"

"चोर दरवाजे की जगह कार का दरवाजा ढप्प से बंद!"

"काश! हममें से भी कोई एक बेटे की तरह उठ जाता, दूसरे को निजात देते हुए.."

"हम साथ-साथ जी पाने के लिए और कितना, क्या करें?" [53]

वातावरण एवं देशकाल :

'चोर दरवाजे' कहानी एक महानगरीय जीवन को दर्शाती है । आज के आधुनिक युग में महानगरीय जीवन कैसा भागादौड़ी वाला और परेशानियों से भरा हुआ है । दुनियाभर की बेमतलब बातें करना जो काल और वातावरण के विरोध में है ।

भाषा शैली :

कहानी की भाषा शैली पात्रों को बंद बैठती है । बातचीत का तरीका शुद्ध हिन्दी भाषा में है । पात्र कहीं-कहीं पर अंग्रेजी भाषा का भी प्रयोग करते देखे जाते हैं । कहानी के संवाद की शैली सरल और सरज है । अंग्रेजी के शब्दों में शेयर्स, शुगर, करियर, सर्विस, कन्फर्म नोट, डिस्कस, टैक्स, स्टार्ट, क्रिम आदि शब्दों का उल्लेख हुआ है ।

उद्देश्य :

कहानी में पति-पत्नी एक दूसरे को कैसे विचारों से देखते हैं उसे ही सूर्यबाला ने चोर-दरवाजे का नाम दिया है । पति-पत्नी के माध्यम से उनके बीच के संबंधों को उजागर किया है।

अंतरंग:

यह एक पारिवारिक कहानी है । इस कहानी का मुख्य पात्र टिना है जिसकी अपनी एक दुःखभरी कहानी है । उसका एक बेटा बाबा है। टिना को अपनी बेटी माननेवाली माँ कैसे अपनी बेटी के साथ सौतेला व्यवहार करती है यह देखा जा सकता है । इस कहानी में छोटे बच्चे से कैसे घर का सारा कार्य लिया जाता है इस बात पर चर्चा की गई है । नौकर को थोड़ी देर साँस लेने की भी फुर्सत नहीं है । लड़की थोड़ी देर भी खड़ी नहीं रह सकती, उससे कुछ-न-कुछ काम लिया ही जाता है । और इस तरह उसके जीवन प्रवाह का मजाक बनाया जाता है । उसे धरती पर एक बोझ की तरह जताया जाता है । उसके साथ ऐसा

ही व्यवहार किया जाता है । बड़े शहरों में नौकरों के साथ कभी भी प्यारभरा व्यवहार नहीं किया जाता । लड़की कुछ भी प्रत्युत्तर नहीं देती । बस वह, माँ-बेटी की यातनाओं को मुकबधिर बनकर सहती जाती है, बिना कुछ मुँह से ऊफ कहे। लेखिका को भी उस लड़की की दया आ जाती है ।

पात्र:

कहानी का मुख्य पात्र टीना है जिसके साथ सौतेला जैसा व्यवहार किया जाता है । घर का सारा काम कराया जाता है । वह बोझ-सी लगती है और वह यह सब चातनाएँ बिना कुछ कहे सहते जाती है । टिना एक शादीशुदा, एक बच्चे की माँ है । परंतु वह अपने ही घर में नौकरानी की तरह रहती है ।

गौण पात्रों के रूप में टिना की माँ, उनकी सहेली जमादारीन आदि का उल्लेख हुआ है ।

संवाद:

'अंतरंग' कहानी के संवाद पाठकों में जिज्ञासा उत्पन्न करने वाले हैं जो पाठक के मन पर गहरा प्रभाव डालते हैं । कहानी के संवाद मर्मस्पर्शी होने के साथ-साथ यथार्थवादी दृष्टिकोण पाठकों के सामने प्रकट करते हैं ।

"ट्रे लेके यूँ ही खड़ी रहेगी या झुक के आगे भी बढ़ाएगी ।"

"गिलास तेरी ट्रे में, और आँखें चारों तरफ चकबकी, तो फिर गिलासों का सत्यानास तो होना ही होना न!" [54]

"नो रुबीन, गंदी बात बेटे। गंदे बाल नहीं छुते।" फिर उसने झिड़का ।

"खैर, टोटका काम तो आया"- मैं हँसी, ''बच गई यह!" [55]

"हाँ, लेकिन माँ खुद मर गई !"

"अरे स्तब्ध थी माँ''

"अरे, आपको बताया नहीं? माँ पहले ही नहीं, बाप दंगों में तमाम...." [56]

देशकाल एवं वातावरण:

'अंतरंग' कहानी एक भारतीय संस्कृति की पारिवारिक कहानी है । यहाँ एक परिवार का माहौल है। जीवन में घटित छोटी-मोटी घटनाओं का उल्लेख देखने को मिलता है। साथ-साथ कैसे एक-दूसरे के प्रति घर के सदस्य नफरत की दृष्टि रखते हैं, दर्शाया गया है । शहरी परिवेश बताया गया है ।

भाषा शैली :

कहानी के पात्र रोजमर्रा के जीवन की बोलचाल की भाषा का प्रयोग करते हैं । कहानी की भाषा पात्रानुकूल है । कहीं-कहीं अंग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग देखा जा सकता है - नॉनस्टॉप, ट्रे, स्टोन, डस्टींग, टेशन, डोंट जैसे शब्द देखे जाते हैं ।

उद्देश्य:

कहानी का उद्देश्य टिना के माध्यम से उसके मन के सूक्ष्म विचारों को प्रकट करना है। टिना की दुःखभरी दास्तान के माध्यम से भारत की कई स्त्रियों के जीवन पर ऐसा प्रभाव होता है उसे कहानी के माध्यम से दर्शाया गया है ।

उजास :

'उजास' सूर्यबाला द्वारा रचित एक पारिवारिक कहानी है जिसके केन्द्र स्थान पर मारिया नर्स का परिचय प्राप्त होता है जो एक अस्पताल में कार्यरत है । जो अपने बुढ़े माँ-बाप के साथ रहती है । मारिया नर्स अभी तक अकेली है । अब मारिया नर्स में कोई भावनाएँ शेष नहीं बची हैं। वह सिर्फ एक बेजान पुतले की तरह अपना जीवनयापन करती है । उसे किसी से कोई सरोकार नहीं है परंतु आखिर में दंगे में अस्पताल में एक छोटी लड़की की वजह से उसके मन में कहीं कोने में दबी हुई ममता जागृत हो जाती है । दंगों की वजह से लड़की के माँ-बाप मारे जाते हैं और उसी लड़की को मारिया नर्स अपनी ममता और दुलार से पुचकारती है तथा अपने ममत्व के स्पर्श से उसे अपनाती है । यह छोटी लड़की

मारिया नर्स के नीरस जीवन में उजास भर देती है । उसके जीवन में एक रोशनी की किरण बनकर प्रवेश करती है ।

पात्र:

कहानी की मुख्य नायिका मारिया नर्स है जो अपने जीवन से निराश और नीरस हो गई है। उसमें भावनाओं का अंत हो गया हो ऐसा लगता है । वह अपने बुढ़े माँ-बाप के साथ रहती है । उसकी हमउम्र सबकी शादियाँ हो गई हैं परंतु वह बस एक निरुत्साहभरा जीवन ही जीना चाहती है । मगर उसके जीवन में छोटी लड़की के आते ही उसके स्वभाव में परिवर्तन आता है तथा उसके अंदर मातृत्व की भावना जागृत होती है ।

गौण पात्रों के रूप में मारिया के बुढ़े माँ-बाप, छोटी लड़की तथा दंगे में मारे गये छोटी लड़की के माता-पिता का उल्लेख होता है जो कहानी को आगे बढ़ाने में सहयोग देते हैं ।

संवाद:

'उजास' कहानी के संवाद पाठकों में जिज्ञासा को जन्म देते हैं । 'उजास' कहानी के संवाद के दो प्रकार देखे जा सकते हैं- (1) छोटे, (2) बड़े ।

"क्योंकि बेवजह हँसने और रो पड़ने की भी एक खास उम्र हुआ करती है और वह उम्र तुम्हारी मुठ्ठी से रेत सी सरक चुकी है मारिया ।" [57]

"आज तुने रोटियाँ नरम सेंकी थी हम बिना शेरबे में भिगोए भी खा ले गए।"[58]

"माँ... क्या दंगे खत्म हो गए... माँ, क्या दंगेवाले चले गए... मुझे निकालो माँ!" [59]

"माँ, मुझे निकालो, माँ- मैं बाहर जाऊंगी।"

कहानी के संवाद कौतुहल निर्माण करते हैं ।

देशकाल:

'उजास' कहानी का चित्रण एक अस्पताल का है । शहरी वातावरण के बीच कहानी जन्म लेती है । भारत के परिवेश और उसकी संस्कृति के दर्शन होते हैं । 'उजास' कहानी में दंगों के वातावरण का भी चित्रण किया गया है।

भाषा शैली:

'उजास' कहानी की भाषा शैली पाठकों के मन को टटोलने वाली है जो पाठक के मनोभावों को जागृत कर देती है । कहानी की भाषा सीधी और सरल है। अंग्रेजी भाषा का भी प्रयोग देखा जा सकता है । सूर्यबाला ने पात्रानुकूल भाषा का उपयोग किया है जो पाठकों में जिज्ञासा निर्माण करती है ।

उद्देश्य:

मारिया नर्स के पात्र के द्वारा लेखिका सूर्यबाला ने मारिया की अनेक समस्याओं को उजागर किया है जैसे कैसे उम्र के साथ उसकी भावनाएँ समाप्त होती जाती हैं । वह एक निराशा भरा जीवन जीती है । उसी निराशा में उसे आशा की किरण स्वरुप बिन माँ-बाप की छोटी बेटी अस्पताल से मिलती है जो उसके मन में मृत अवस्था में पड़े भावों को जागृत कर देती है। नारी के जीवन की समस्याएँ भी सूर्यबाला ने मारिया नर्स के माध्यम से व्यक्त की हैं।

कात्यायनी संवाद:

'कात्यायनी संवाद' की नायिका एक कॉलेज में साइंस विषय की प्राध्यापिका है जिसका नाम कात्या है । वह अपनी दर्दभरी दास्तां को यहाँ प्रस्तुत करती है । उसे अपने जीवन में पति का प्यार और सम्मान- जो आदर चाहिए था वह उसे नहीं मिल रहा था । उसे इसके लिए बहुत ही दुःख और पीड़ा का सामना करना पड़ता है । उसके पति का प्रेम उसे उसकी शादी के आठ साल भी नहीं मिला इस बात का आज भी कात्या को दर्द होता है । भारतीय संस्कृति में जो भी स्त्रियाँ हैं वे कभी भी अपने पति के खिलाफ विद्रोह नहीं करतीं। अगर पति के

द्वारा अत्याचार होता भी है तो उसे संस्कार, संस्कृति की दुहाई देकर समझा-बुझा दिया जाता है । कहानी का आरंभ स्त्री पात्रों के परिचय से ही होता है । यह एक पारिवारिक कहानी के अंतर्गत आती है । सूर्यबाला ने यहाँ पर ऐसा लगता है कि वह भारतीय संस्कृति और परंपरा की दुहाई देकर नारी को विद्रोह करने से रोकती हैं । यहाँ की संस्कृति में पति को परमेश्वर माना गया है ।

पात्र :

इस कहानी की नायिका कात्या है जो अपने शादी के आठ साल हो जाने के बाद भी अपने पति का प्रेम और विश्वास प्राप्त करने में असफल रही है । वह चाहते हुए भी अपने पति के खिलाफ विद्रोह नहीं करती और बिना विरोध किए ही अपनी संस्कृति की दुहाई देती है । कात्या के माध्यम से सूर्यबाला ने भारतीय नारी की मनोदशा, संस्कृति का पालन करने वाली स्त्री का चरित्र चित्रण किया है ।

अन्य गौण पात्रों में मेघा और कात्या का पति कहानी में सहयोग देते हैं ।

संवाद:

'कात्यायनी संवाद' पाठकों के मन को छू लेने वाले हैं-

"पानी, चाय, दूध, तौलिया, तकिया निकाल दूँ? चादर खींच दूँ? खिड़की खोल दूँ?" [60]

"मुझे किसी से कुछ चाहिए ही नहीं," "मैं जानती हूँ 'किसी' का मतबल क्या है।" [61]

"क्या मालूम किसने किसका शोषण किया । शायद मैंने ही इस व्यक्ति का किया हो।"

"सिर्फ तुम तक-और कहीं नहीं- अपने काले शक को अब विश्वास में बदल डालो।"[62]

देशकाल :

कहानी का देशकाल शहरी जीवन शैली का है । भारतीय परंपरा के दर्शन होते हैं । यह एक पारिवारिक माहोल के बीच रची गई रचना है ।

भाषा शैली:

कहानी की भाषा शैली सुंदर और सहज है, पात्रानुकूल है । इस कहानी के पात्र पढ़े-लिखे होने के कारण अंग्रेजी भाषा का उपयोग करते हैं । जैसे मेनुस्क्रिप्ट, माई डियर, डिजार्ड, इट, स्टाफ, कॉलेज, क्रेडिटबिलेटी आदि शब्दों का उपयोग हुआ है ।

उद्देश्य:

इस कहानी में लेखिका ने कात्या नामक स्त्री के जीवन के माध्यम से भारतीय समाज में नारी की अत्यंत दयनीय स्थिति को उजागर किया है । इसमें सूर्यबाला कात्या जैसी नारी को विद्रोह करने की सूचना देती हैं । सूर्यबाला ने भारतीय संस्कृति परंपरा के नाम पर हो रहे घरेलु शोषण को इस कहानी से दर्शाया है ।

माय नेम इज़ ताता:

प्रस्तुत कहानी एक मनोवैज्ञानिक रूप की कहानी है । यह कहानी एक छोटी-सी लड़की की है जो तोतला और बड़ा प्यारा बोलती है । बड़े-बड़े महानगरों में काम करने वाले माँ-बाप अपने प्यारे से बच्चों को आया के भरोसे छोड़कर नोकरियाँ करते हैं परंतु अपनी माँ-बाप की जो असल जिम्मेदारी है उससे दूर भागते हैं । जबकि देखा जाए तो बच्चे की यही वह उम्र होती है जब उसे अपने माँ-बाप का प्यार और दुलार की अधिक आवश्यकता होती है । परंतु होता यह है कि बड़े-बड़े शहरों में बड़ी-बड़ी नौकरियाँ करने वाले माँ-बाप अपनी दिनभर की थकावट, परेशानियों का गुस्सा अपने प्यारे बच्चों पर निकालते हैं । उन्हें उन मासूम बच्चों की भावनाओं का कोई खयाल नहीं रहता । ऐसे माँ-बाप अपने बच्चों को बड़े-बड़े टॉयस, बॉल्स तो देते हैं खेलने के लिए पर उन बच्चों के साथ आत्मीयता और मानसिक रूप से जुड़ नहीं पाते और इस प्रकार भावनाओं के धरातल पर अपने बच्चों से काफी दूर हो जाते हैं ।

पात्र:

कहानी के केन्द्र में एक सवा-डेढ़ साल की छोटी बच्ची सुजाता है । घर में उसके माँ-बाप शौनक और नीना दोनों नौकरी करते हैं । सुजाता के माँ-बाप का विवाह पाश्चात्य विवाह के समान ही एक करारनामा है । इस कहानी में सुजाता के जन्म के बाद उसके परिवार में किस तरह की समस्याँ उत्पन्न होती हैं उसे दर्शाया गया है । 'माय नेम इज' की नायिका बहुत ही छोटी है । कहानी का मुख्य पात्र ही (तात) सुजाता है जिसके जीवन को केन्द्र स्थान पर रखकर ही सूर्यबाला ने कहानी की रचना की है ।

इसके अलावा कहानी के गौण पात्र के रूप में नीना-शौनक, तात के माता-पिता, शौनक की माँ, आया नौकरानी, शेवंती आदि पात्रों का उल्लेख हुआ है।

संवाद:

कहानी के संवादों में कहीं-कहीं पर बाल-भाषा (अर्थात् तोतले संवाद) भी दृष्टिगत होते हैं। कहानी के संवाद बाल मनोभावों को व्यक्त करते हैं ।

"जब मैडम पूछेगी, व्हाट इज़ योर नेम चाईल्ड? तो क्या कहेगी मेरी बेबी?" 'ताता' टप-टप दो तोतले तापकी जामुन से टपक पड़तचे हैं 'माय नेम इज़ तात'[63]

"शौनक और नरम पड़ा- 'चलो, तुम्हें लिज में पिज्जा खिला के लाता हूँ । मेरा भी लंच आज बड़ा बोर था।' "

"नई, मैं कुछ नईं खेलती- तुम मुझको स्नोवाइट की इस्टोरी सुनाओ ।" [64]

'तात' की भाषा में

"ई तुम दंदी । तुम बुड्डी अम्मा ।"

तात पूरा जोर लगाकर तुतलाती है । 'गेत आउत' फिर बोलती है 'आया बुड्डी अम्मा, दंदी आया।'

देशकाल :

आज़ादी के बाद जो बड़े शहरों में उद्योग धंधे पनपने लगे ते, दिन-ब-दिन आबादी बढ़ने लगी थी और उस समस्या के कारण परिवार में भी अनेक समस्याएँ खड़ी होने लग गई थीं जिसके लिए परिवार के अधिक से अधिक सदस्यों को नौकरी करनी पड़ती थी और इसी कारण उनके संतानों के पालन-पोषण और पढ़ाई की समस्याएँ परिवार के सामने उपस्थित होने लग गई थीं । पारिवारिक माहौल के बीच कहानी जन्म लेती है ।

भाषा शैली:

'माय नेम इज़ तात' कहानी बाल मानस पर आधारित कहानी होने के कारण भाषा सुंदर और सरल है जो पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करती है । कहानी का मुख्य पात्र डेढ़ साल की सुजाता होने के कारण भाषा में बालभाषा का भी उपयोग हुआ है । जैसे हमारा (हमाला), स्टोरी (इश्टोरी), पुअर (पुअल), मारुती (मालूती), तुम्हारी (तुमाली), गंदी (दंदी) आदि शब्दों को देख सकते हैं । कहानी के पात्र पढ़े-लिखे होने के कारण अंग्रेजी भाषा का भी उपयोग करते हैं । जैसे मीटींग, वर्कशॉप, एडमीशन, आऊट, ट्राइ, चाइल्ड, शटअप जैसे शब्दों को देखा जा सकता है ।

उद्देश्यः

कहानी का उद्देश्य नौकरी करने वाले माँ-बाप का अपने संतानों के प्रति बदलती भावनाओं को दर्शाना तथा इसका कैसा विपरित असर बालमानस पर होता है यह दर्शाया गया है। जहाँ बच्चों को माँ-बाप के स्थान पर अनेक सुख-सुविधाएँ, चीजें, खिलौने, शिक्षा उपलब्ध करवाई जाती है परंतु भावनात्मक स्तर पर कहीं बंधन मजबूत नहीं हो पाता है ।

4.5 सूर्यबाला की इक्कीस कहानियाँ:

सूर्यबाला की इक्कीस कहानियों का संग्रह ई.स. 2001 में प्रकाशित हुआ था । इसमें कुल मिलाकर 21 कहानियों का संकलन किया गया है । सूर्यबाला ने 80 के दशक में लगातार अपनी लेखनी साहित्य में चलाई है और आज के आधुनिक साहित्य में अपनी एक अलग पहचान बनाई है ।

इस कहानी संग्रह की प्रथम कहानी है-

'बाऊजी और बंदर':

इस कहानी के माध्यम से बड़े बुजुर्गों की घर में क्या स्थिति होती है और वे अपना जीवन-यापन कैसे करते हैं इसका उल्लेख किया गया है ।

बाबूजी का बेटा शहर में अच्छी नौकरी करता है । वे अपने बेटे के साथ नाती-नातीन के साथ रहना चाहते हैं, परंतु उनकी बहु उनके व्यवहार से, कामों से परेशान रहती है । वह चाहती है कि बाबूजी गाँव में ही रहें और जमीन-घर संभाले, पर बाबूजी का मन गाँव में नहीं लगता । वे तो शानु-शौनक के साथ रहना चाहते हैं । उनकी बहु बाबूजी के विषय में सोचती है- पता नहीं ये बुढ़े लोग मोह-माया का इतना ओवर सॉट क्यों भरे रहते हैं । और बाबूजी को वह गाँव भेज देती है । बाबूजी फिर आ जाते हैं । वह सोचती है कि बाबूजी को ऐसा क्या काम दिया जाए जिससे उसका फायदा हो। फिर वह सोचती है क्यों न बंदरों की समस्या से छुटकारा पाने के लिए बाबूजी को लगा दिया जाए और इस तरह बंदर भगाने का काम बाबूजी को सौंप दिया जाता है ।

कुछ दिनों के लिए ललित और परिवार घर से बाहर चले जाते हैं पर बाबूजी को घर पर ही छोड़ जाते हैं ताकि घर का खयाल रखें। पर साइट जाते ही बहु को इस बात का एहसास हो जाता है कि अकेली जिंदगी जीना आसान नहीं है, क्योंकि ललित उसे साइट पर ले जाकर कहीं नहीं ले गया । उल्टा वह अपने साहब की पेशगी में लग गया । तब बहु को एहसास हुआ कि बाबूजी भी ऐसे ही रहने की परेशानी झेलते होंगे ।

पात्र:

'बाऊजी और बंदर' कहानी एक पारिवारिक कहानी है जिसके मुख्य पात्र बाऊजी हैं जो शहर में अपने नाती-नातिन के साथ रहना चाहते हैं । पर उनकी बहु चाहती है कि बाऊजी गाँव में ही रहकर खेती और घर संभालें । पर बाऊजी को गाँव में अब अकेले रहना अच्छा नहीं लगता। वह शहर में परिवार के साथ ही रहना चाहते हैं । ये भी एक बात सच है कि बुढ़ापे में मनुष्य किसी-न-किसी का सहारा ढूँढ़ता है । बस यही हालत बाऊजी की है । फिर उनकी बहु शहर में बंदर भगाने का काम उन्हें सौंपती है । पर जब निलेश उसे कुछ दिनों के लिए बाहर ले जाता है तब उसे बाऊजी की भावना का पता लग जाता है ।

गौण पात्र के रूप में ललित, उनके बेटे शानु-शौनक, पति, पड़ोसन, नौकरानी, महरी आदि उल्लेख मिलता है ।

संवाद:

कहानी के संवाद वर्णनात्मक शैली में हैं जो पाठकों का मनोरंजन भी करते हैं । कहानी में संवादों की अधिकता है । संवाद के दो रूप प्रस्तुत किये हैं- (1) छोटे और (2) बड़े ।

"बाऊजी, दो मुट्ठी शक्कर अपने खूँट में बाँध लूँ, बच्चन के वास्ते3 और जवाब में बाऊजी कहेंगे, 'अरे दो क्या चार मुट्ठी डाल ले इसमें पूछने की क्या बात!'" [65]

"आप लोग नए आए हो न! बंदर तो आते ही रहते हैं ऐसे बीसो पच्चीसो के झुंड में। कभी दो-चार हफ्ते तो कभी दो-चार रोज पर ही।"

"दुत! कुत्तों को मारने के लिए थोड़ी न, बंदर को भगाने के लिए । इससे आप बंदरों को भगाया करेंगे ।" [66]

"बंदर आए, बंदर आए, बाऊजी । चलिए छड़ी लेकर बंदर भगाइए।"

"उफ, कब-कब खत्म होगा यह निर्वासन, यह घुटन, यह उपेक्षित एकरसता? कब मुक्ति मिलेगी?"

देशकाल एवं वातावरण:

यह कहानी भारत भूमि से संबंधित है । इस कहानी का चित्रण पात्रानुकूल है । जंगलों की कटाई दिन-ब-दिन होने के कारण जंगली जानवर शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं । ठीक उसी तरह बंदरों के झुण्ड खाने की तलाश में शहरों में आना प्रारंभ कर देते हैं । कहानी का देशकाल और वातावरण कहानी पर जचता है ।

भाषा शैली :

'बाऊजी और बंदर' कहानी भाषा शैली की दृष्टि से अलग शैली है । यह कहानी गाँव से शुरु होकर शहर में संबंध का सेतु बाँधती है । बाऊजी की भाषा अलग है, घर के बच्चे अंग्रेजी बोलते हैं । दूसरी ओर ललित शुद्ध भाषा का प्रयोग करता है । शुद्ध हिंदी और अंग्रेजी भाषा का उपयोग हुआ है । जैसे टेस्ड, साइट प्रोजेक्ट, सर्विस रेकार्ड, रजिस्टर आदि।

उद्देश्य :

कहानी का उद्देश्य बुढ़ापे में व्यक्ति की जीवन शैली में क्या परिवर्तन आता है यह दर्शाना है । कहानी के माध्यम से बंदरों और मानव के बीच का संबंध प्रस्तुत किया है ।

'मूँडेर पर':

'मूँडेर पर' सूर्यबाला द्वारा रचित कहानी है । इस कहानी के दो पात्र हैं जो एक-दूसरे से प्रेम करते हैं - अंजु और अमित। इन दोनों पात्रों को केंद्र में रखकर ही सूर्यबाला ने एक प्रेम कहानी को जन्म दिया है । अंजू और अमित एक-दूसरे के पड़ोसी हैं। अंजू अमित से बेहद प्रेम करती है । दोनों को एक दूसरे के चेहरे देखे बिना चैन नहीं आता था । दोनों एक दूसरे को देखकर खो जाते थे । यह अंजू

और अमित की दिनचर्या में शामिल हो गया था । अमित का एक स्वेटर था जिसे अंजू रोज देखा करती थी । उसको हमेशा उसे देखने का मन किया करता था । इस पूरी कथावस्तु के नायक और नायिका अमित और अंजू हैं । सूर्यबाला द्वारा रचित यह कहानी एक प्रेमकहानी के अंतर्गत आती है । अंजू कॉलेज में पढ़ाई करती है। सूर्यबाला ने अपने अथक प्रयासों से 'मूँडेर पर' प्रेम कहानी को रचने का प्रयास किया, जिसमें वे सफल भी रही हैं ।

पात्र :

सूर्यबाला द्वारा रचित प्रेम कहानी के नायक और नायिका अंजू और अमित हैं । दोनों की प्रेम कहानी 'मूँडेर पर' ही जन्म लेती है । सूर्यबाला ने अंजू के माध्यम से आधुनिक युग के प्रेम को प्रगट किया है । क्योंकि देखा जाए तो 20 वीं सदी के बाद देश की संस्कृति और परंपराओं में काफी बदलाव देखा जाता है । लेकिन इन सब से परे अंजू अपने प्रेम का इकरार नहीं कर पाती । वह अपनी संस्कृति का पालन करती है ।

संवाद:

सूर्यबाला की कहानी 'मूँडेर पर' के संवाद छोटे और बड़े दोनों रूपों में देखे जा सकते हैं । संक्षिप्त संवादों का भी प्रयोग किया गया है । कहानी में कोमल मनोभावों को सरल भाषा के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है जो एक प्रेम कहानी को जन्म देते हैं ।

देशकाल एवं वातावरण :

देशकाल और वातावरण 21वीं सदी का दर्शाया गया है जिसमें मूँडेर पर एक प्रेमकहानी जन्म लेती है ।

भाषा शैली :

कहानी की भाषा शैली सरल और सहज है । इस कहानी में भी हम अंग्रेजी भाषा का उपयोग देख सकते हैं । जैसे राइट, हार्ट, अलॉट, इट्स ऑलराइट जैसे शब्दों को देखा जा सकता है । सूर्यबाला अपनी सरल भाषा के माध्यम से एक

प्रेमकहानी को पाठकों के सामने सुंदर तरीके से उजागर करने में कामयाब रही है ।

उद्देश्य:

सूर्यबाला ने संस्कृति और परंपरा का पालन करते हुए अंजू की प्रेमकहानी को एक निश्छल मन से पाठकों के सामने रखने का प्रयत्न किया है ।

'गीता चौधरी का आखिरी सवाल'

आधुनिक काल को ध्यान में रखते हुए सूर्यबाला ने देश की कई समस्याओं जैसे भ्रष्टाचार और अन्य समस्याओं पर अपनी दृष्टि डालने का प्रयत्न किया है । भ्रष्टाचार ने हमारे देश की नींव हिलाकर रख दी है । इस कहानी में सूर्यबाला ने शिक्षा के क्षेत्र में कैसे भ्रष्टाचार ने अपनी जड़ें मजबूत की है इस पर प्रकाश डाला है । यह कहानी अन्य सामाजिक पहलूओं पर भी हमें सोचने के लिए मजबूर करती है । देखा जाय तो यह एक पारिवारिक कहानी के अंतर्गत आती है । यह कहानी आठवीं कक्षा में अभ्यास करने वाली गीता चौधरी की है जिसका रोल नं. चालीस है । गीता के मन में कई प्रश्न होते हैं जिनका उसे निराकरण चाहिए होता है । गीता जब बोलती है तो ऐसा लगता है दूध में शक्कर घोल दी है ।उसके जाने से विद्यालय का वातावरण खुशनूमा बन जाता था । वह स्कूल में ड्रामा, खेल, स्टेज पर सरस्वती वंदना करना, स्पीच देना जैसी प्रवृत्तियों में हमेशा आगे रहती थी । लेकिन जैसी ही पाठशाला में गर्मी की वेकेशन हो गई थी और वह स्कूल लौट आई तब वही शिक्षक उसको पहचानते नहीं थे। उनके पूरे स्वभाव में गीता को परिवर्तन देखने को मिला । पूरी कथा विद्यालय से संबंधित होने के कारण विद्यालय में कौन-कौन से प्रश्नों का सामना करना पड़ता है यह भी सूर्यबाला ने दर्शाया है ।

पात्र:

कहानी की मुख्य नायिका आठवीं कक्षा में पढ़नेवाली गीता चौधरी है । शुरु से लेकर अंत तक कहानी के केंद्र स्थान पर गीता ही रहती है । वह एक

प्रवृत्तिशील लड़की है । वह पाठशाला द्वारा आयोजित किये जाने वाले सभी कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती है । पर जब गर्मियों की छुट्टियाँ समाप्त हो जाती हैं और वह लौटकर स्कूल आती है तब शिक्षक उसे पहचानते तक नहीं हैं । वह अपने विद्यालय की एक सर्वगुणी विद्यार्थीनी है और होनहार छात्रों में उसका नाम लिया जाता है ।

गौण पात्रों के रूप में कहानी का टीचर, रुची चावला, किरण दिवान, गीता के माँ-बाप, भाई-भाभी, छोटे भाई सभी कथावस्तु को आगे बढ़ाने में अपना सहयोग प्रदान करते हैं।

संवाद :

कहानी के संवाद सरल और सहज हैं । सूर्यबाला ने छोटे-बड़े दोनों तरह के संवादों का समावेश अपनी कहानी में किया है । सरल एवं रोजमर्रा जीवन में प्रयोग किये जाने वाले संवादों का प्रयोग किया गया है -

"तुम्हें मेरे सवालों का ठीक-ठीक जवाब देना होगा, गीता ।"

"मैं तुमसे ही कह रही हूँ । इस क्लास की कुर्सियों और बेंचो से नहीं ।"

देशकाल :

'गीता चौधरी का सवाल' यह कहानी आधुनिक युग के वातावरण में लिखी गई है । शिक्षा के क्षेत्र में उपस्थित प्रश्नों को दर्शाने के लिए पाठशाला का वातावरण दर्शाया गया है ।

भाषा शैली :

भाषा शैली में कहीं-कहीं व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग किया गया है और कहीं अंग्रेजी शब्दों का उपयोग देखा जा सकता है। जैसे- प्रेक्टिकल, एब्सेंट, लिस्ट, डिबेट, रिसेष आदि शब्द देखे गये हैं ।

उद्देश्य :

कहानी का उद्देश्य शिक्षा के क्षेत्र में फैले भ्रष्टाचार को उजागर करना है और अन्य सामाजिक प्रश्नों पर भी अपनी दृष्टि डालना सूर्यबाला का यत्न रहा है जिसमें सूर्यबाला को कामयाबी प्राप्त हुई है ।

संताप:

इस कहानी ने एक निर्मम समाज को आईने की तरह साफ़ किया है । इसमें माँ की ममता को, पति के कर्तव्य से कम बताया गया है । औरत के मातृत्व पर पत्नित्व का आवरण लगा देना कहाँ तक सही है । दो बच्चों की मृत्यु के पश्चात् भी उसे सांत्वना के रूप में पति के बच जाने की दुहाई देते हैं लोग। अपंगत्व को भी यहाँ बोझ माना गया है । दो बच्चों की जान बचाने के लिए उसका पति कोई कोशिश नहीं करता । इस कहानी में प्रगति के लिए लोग मालिक बाबूओं का ध्यान अपने परिवार से भी ज्यादा अच्छी तरह से रखते हैं। मालिक बाबूओं के शब्दों को, बातों को सर आँखों पर रखते हैं नौकर वर्ग ताकि इसी के सहारे वे तरक्की प्राप्त कर सकें ।

यह एक पारिवारिक कहानी है । इस कहानी के केन्द्र में हेमंत का परिवार है । हेमंत अपने परिवार के साथ तेरह नंबर के मोहल्ले में रहता है । परंतु आज उसके परिवार से संबंधित चर्चा पूरे शहर में हो रही है क्योंकि हेमंत अपने बच्चों को लेकर झरने के पास गया था और उसके दोनों बच्चे पानी में बह गये । हेमंत के पास उन्हें बचाने का कोई रास्ता नहीं था जिसके कारण दोनों बच्चों की मृत्यु हो चुकी थी । परंतु हेमंत जीवित बच गया था । लोग उसकी पत्नी से कहने लगे - कुछ भी हो, लेकिन सुहाग उजड़ने से बच गया है । इस प्रकार की गूस-पूस लोग कर रहे थे । भाभी बदहवास हो गई थी क्योंकि हेमंत की अपाहिज़ बेटी तक अपने भाई को बचाने के लिए पानी में कुद गई थी । आज इन दोनों बच्चों की यादें सता रही थी ।

पात्र:

कहानी हेमंत और उसकी पत्नी के आस-पास ही घूमती है । हेमंत अपने बच्चों को झरने के पास घुमाने ले जाता है । परंतु दोनों फिसल जाने की वजह से मृत्यु को प्राप्त होते हैं। सारे शहर मे हेमंत के परिवार की चर्चा हो रही है । हेमंत की पत्नी को संताप हो गया है । वह अपने होशोहवास खो बैठी थी । उसे गीला तो

इस बात का था कि उसकी दिव्यांग लड़की ने अपने भाई को बचाने के लिए छलांग लगा दी थी, परंतु हेमंत ने जरा भी प्रयत्न नहीं किया था।

गौण पात्र मितू, रेशम और औरते हैं जो मृत्यु के पश्चात् सांत्वना देने आती हैं।

संवाद:

कहानी के संवाद भावनात्मक पक्ष को जारी करते हैं ।

"अरे, पानी लाओ, पानी ।"

"नहीं, पहले कोई लकड़ी डालो, मूँह में दाँत लग गए हैं।"

"दाँतों के बीच लकड़ी फँसाकर तब पानी का छींटा दो ।"

"अरे, आखिर माँ है न!"

"कलेजे के टुकड़े दो-दो बच्चे!" [67]

"भगवान को धन्यवाद दो बहु कि तुम्हारा सुहाग उजड़ने से रह गया । समझ लो उसी एक से सारी दुनिया है ।"

"अच्छा, तो बड़ी उपलब्धियाँ क्या होती है, तुम बताओगी मुझे? तुम्हारे जैसी उपलब्धियाँ- जैसे कि विवाह के सात साल बाद तोहफे के तौर पर यह अपाहिज-लुली बच्ची!" [68]

देशकाल :

'संताप' कहानी का वातावरण आधुनिक है और शहरी जीवन शैली को दर्शाता है ।

भाषा शैली :

शहरी भाषा शैली का उपयोग हुआ है । भाषा पात्रानुकूल है ।

उद्देश्य :

शहरी जीवन जीने वाले लोगों की भावनाएँ कैसे क्षणभंगुर होती हैं इसे लेखिका ने अपनी कहानी में दर्शाया है । मातृत्व से अधिक महत्व पत्नी धर्म को दिया गया है । स्त्री को हमेशा पति के वश में ही होकर जीना पड़ता है । मातृत्व को शहर के लोग गौण श्रेणी में रखते हैं ।

कहाँ तक:

'कहाँ तक' यह सूर्यबाला द्वारा रचित एक पारिवारिक और छोटी कहानी है। इस कहानी में समाज के एक उच्च वर्ग कुटुंब की पारिवारिक परिस्थिति को दर्शाया गया है । इस कहानी के प्रमुख पात्र में मिनी है जो अपने माता-पिता की एकमात्र संतान है और मिनर्वा कॉलेज में बी.ए. के आखरी वर्ष में अभ्यास कर रही है । देखा जाए तो इनका परिवार साधन-संपन्न है । इसलिए पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव परिवार के सभी सदस्यों पर देखा जा सकता है । एक बुआ ही इस परिवार में ऐसी व्यक्ति हैं जो भारतीय संस्कृति के पालन और सम्मान की बात करती है । उनका कहना है कि अगर हम भारतीय हैं तो हमें भारत की संस्कृति के प्रति हमेशा सम्मान रखना चाहिए । अगर देखा जाए तो मिनी का पात्र पूरी तरह पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित लड़की की कहानी है जो रहन-सहन, खान-पान के मामले में पूरी तरह मोर्डन और फैशनेबल है। अगर देखा जाए तो इनका पूरा परिवार भारत में ही निवास करता है परंतु उनका खाने-पीने, रहने-सहने का तरीका पूरी तरह पाश्चात्य के प्रभाव से प्रभावित हुआ है । इस कहानी में भारत में रह रहे लोग कैसे पाश्चात्य संस्कृति के गुलाम बन जाते हैं यह दर्शाया गया है ।

पात्र:

'कहाँ तक' कहानी का मुख्य पात्र मिनू है जो एक आधुनिक विचारों वाली लड़की है जो कॉलेज के अंतिम वर्ष में बी.ए. की उपाधि ले रही है । उसका व्यवहार, रहन-सहन, भाषा, संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति का बड़ा गहरा प्रभाव देखा जा सकता है । वह सबको मुक्त भावों से देखती है ।

गौण पात्रों के रूप में मिनू के पापा, डॉक्टर राय, फूफाजी, जोशी, जुनेजा, जोशी, बर्वे अंकल, किशन अंकल, धवल, शर्मा अंकल, सक्सेना अंकल, देसाई अंकल आदि पात्रों का समावेश हुआ है जो कहानी को आगे बढ़ाने में सहयोग देते हैं ।

संवाद : छोटे-बड़े संवादों का प्रयोग किया गया है-

जैसे- "हाय मिनी! ब्रेकफास्ट तैयार है !"

"कमींग मम्मी। " [69]

भाषा शैली:

कहानी के पात्र पढ़े लिखे होने के कारण पात्र सहज और सुलभ भाषा का उपयोग करते हैं । अंग्रेजी शब्दों का भी कहानी में उल्लेख देखने को मिलता है । जैसे ब्रेकफास्ट, नो, डियर, बेस्ट, टोस्ट, हाह, नोनसेंस, पर्सनेलिटी, टैन, आदि शब्दों का उपयोग किया गया है ।

उद्देश्य:

भारत में रहने वाले लोगों पर आज़ाद होने के बाद किस प्रकार पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव पड़ा यह इस कहानी में बताने का सफल प्रयास हमारी लेखिका सूर्यबाला ने किया है।

'गुफ्तगू'

'गुफ्तगू' कहानी सूर्यबाला की एक पारिवारिक रचना है । यहाँ के.के. नाम का पात्र है जो कैंसर पीडित है और कैंसर के कारण के.के. का दिल्ली के अस्पताल में इलाज चल रहा है । के.के. के साथ उसकी बेटी उसकी सेवा करती है मगर अस्पताल में से के.के.के. मित्र को पत्र लिखा है। के.के. का मित्र एक मध्यमवर्गीय परिवार से आता है । के.के. के मित्र ने के.के. की बेटी नेहा को खत लिखा था, जिसे नेहा ने कई दिनों तक पड़े रहने दिया था और पढ़ा नहीं था । दोनों आपस में चर्चा करते हैं कि के.के. अब कैंसरग्रस्त हो गया है, औऱ अब वह इस संसार में ज्यादा दिन तक जीवित नहीं रहने वाला । ऐसी गुफ्तगू करते हैं कि के.के. बड़ा ही जिंदादिल इंसान है । के.के. हमेशा उसके मित्र के बेटे चून्नू के साथ खूब धमाल-मस्ती किया करता है। यह कहानी एक स्वार्थी परिवार की कहानी है जिसे सूर्यबाला ने अपनी कहानी के माध्यम स व्यक्त किया है ऐसे परिवारों के खिलाफ ।

पात्र :

कहानी का मुख्य नायक के.के. है जो कैंसरग्रस्त है और दिल्ली में अस्पताल में अपना इलाज करवा रहा है । उसकी बेटी नेहा के.के. के मित्र को के.के. के स्वास्थ्य की जानकारी देतीहै। पति और पत्नी दोनों नेहा को पत्र लिखते हैं पर वह पत्र कितने दिन ऐसी ही लिफाफे में पड़ा रहता है । मित्र होकर भी वे सोचते हैं कि अब के.के. अधिक मास जीवित नहीं रहेगा । उसे सांत्वना देने के बजाय निराश करते हैं ।

गौण पात्रों के रूप में के.के. की बेटी नेहा, पिता पिताजी, चून्नू की माँ, के.के. कलीग्स दत्ता साहब, दामले आदि इस कहानी के गौण पात्र हैं जो इस कहानी को आगे बढ़ाने में सहयोग करते हैं ।

संवाद:

कहानी के संवाद जिज्ञासा उत्पन्न् करने वाले हैं, जो पाठकों में कौतुहल पैदा करते हैं। कहानी में छोटे-बड़े दोनों प्रकार के संवादों का समावेश किया गया है । पाठकों को संवादों से रस उत्पन्न होता है ।

देशकाल :

कहानी का वातावरण शहरी जीवन शैली से संबंधित है । इसमें आधुनिक काल के एक स्वार्थी परिवार का वर्णन किया गया है । कैसे आज के काल में मनुष्य की सारी भावनाएँ खत्म हो जाती हैं । यह कहानी महानगर में जन्म लेती है जो पाठकों को प्रभावित करती है ।

भाषा शैली :

कहानी की भाषा-शैली सरल और सुलभ है । शहरी जीवनशैली होने के कारण भाषा शुद्ध है । कहीं कहीं पर अंग्रेजी भाषा का उपयोग किया गया है । जैसे एडमिशन, फॉरमैलिटी, इग्ज़ाम, डिस्टर्ब, फैक्ट्री आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है ।

उद्देश्य :

कहानी का उद्देश्य आज के आधुनिक युग में कैसे स्वार्थी परिवार देखने को मिलते हैं। वक्त-वक्त पर मनुष्य की हो या पारिवारिक मित्र की, सोच-विचारों में कितना परिवर्तन आ जाता है जो हम उस व्यक्ति के व्यवहार में देख सकते हैं ।

रहम दिल :

'रहमदिल' कहानी में एक गरीब अनपढ़ परिवार कैसे भ्रष्टाचार के चुंगल से बाहर निकलकर ये सोचते हैं कि भ्रष्टाचार करनेवाले लोगों को बेवकूफ बनाकर उन्हें आर्थिक, शारीरिक यातना देकर जताते हैं कि वो लोग कितने रहमदिल हैं जो गुनाह करने वालों को जिन्होंने गुनाह किया ही नहीं उन्हें थोड़ा बहुत पैसा लेकर मुक्त कर देते हैं जैसे कोई जिंदगी भर का एहसान किया हो।

इस कहानी में रहमत अली हमारे समाज में चल रहे भ्रष्टाचार के कैसे शिकार बनते और कुछ लोग यह सब जानकर भी उनके खिलाफ़ आवाज़ तक नहीं उठाते क्योंकि शायद भारत की कानून-व्यवस्था ही ऐसी है जिसके झमेले में बड़े से बड़ा बिरला भी नहीं पड़ना चाहता ।

पात्र:

'रहमदिल' यह एक मुस्लिम परिवार को केन्द्र स्थान पर रखकर सूर्यबाला ने लिखी है जिसमें पात्रों के रुप में हमें पति-पत्नी सकीना बानू और रहमत अली के चरित्र को दर्शाया गया है । रहमत नौ नंबर के कमरे में रहता था । वह छुट्टियों में रोज़ा के लिए अपने गाँव रेल्वे से यात्रा करता था ।

गौण पात्रों में सलीमा, शौकत, मेवालाल, असगरी आदि का सहयोग मिलता है ।

संवाद :

कहानी के संवाद पाठकों के अंतरमन को झंझोड़ देते हैं । पेश है कुछ संवाद जो 'रहम दिल' कहानी से उद्धृत हैं।

"हाय के शकत जैहे इ गाड़ी? तो हमें भेज देते न!"

"नहीं- रेलवई वाले पार्सल बाबू के कमरे के बाहर निबुवो के टोकरे रखे रहे न, उन्हीं में से छेद करके निबुवा निकालते रहे रोजा खोलने की खातिर ।" [70]

"अगले स्टेशन पर गाड़ी रुकेगी न, उधर दूसरे दरवाजे की तरफ मिलना। देखेंगे, क्या हो सकता है !" [71]

"अब इंगलिस की गलती सही तुम लोग तो जानते हो कइसे समझाएँ?"

देशकाल :

कहानी की कथा देश की मिट्टी से जुड़ी हुई है । इस कहानी का देशकाल अर्थात् आरंभ रेल्वे में ही होता है और अंत भी रेल्वे में ही देखते हैं । यह एक अनपढ़ मुस्लिम परिवार से संबंधित कहानी है ।

भाषा शैली :

कहानी की भाषा में मुस्लिम भाषा का लुत्फ़ मिलता है । थोड़ा-थोड़ा हैदराबादी लहजा भाषा में दिखाई देता है । भाषा में अशुद्धता देखी जा सकती है। कहीं-कहीं शुद्ध भाषा का भी प्रयोग हुआ है । शब्दों को हैदराबादी टोन में उच्चारण किया गया है । कहानी में अशुद्ध भाषा का भी प्रभुत्व देखने मिलता है जैसे गवंडर, मिलिस्टर, सूबू, पियास, टेम, आख्ली, होई, निबुवा, इस्टेशन आदि अशुद्ध भाषा प्रवाह के शब्दों का उपयोग हुआ है।

उद्देश्य :

'रहमदिल' कहानी के माध्यम से सूर्यबाला ने भारत के सबसे बड़े क्षेत्र अर्थात् रेल्वे का क्षेत्र और इसी रेल्वे के क्षेत्र में कैसे भ्रष्टाचार ने अपने पग पसारे हुए हैं यह दर्शाने का सफल प्रयास किया है ।

“न किन्नी न”

प्रस्तुत कहानी में सूर्यबाला ने दो परिवारों, जिनमें एक परिवार उच्चवर्गीय है और दूसरा निम्न वर्ग का है, दोनों परिवारों में आर्थिक रूप से ज़मीन-आसमान का फर्क है। कहानी का मुख्य पात्र किन्नी है जो एक कॉलेज में अपनी पढ़ाई कर रही है । उसका संबंध एक मध्यम परिवार से है । उसके परिवार में उसकी माँ, उसके दो छोटे-बड़े भाई के बच्चे हैं। किन्नी के परिवार में अनेक समस्याओं का ताना-बाना लगा रहता है । एक तरफ किन्नी का मध्यमवर्गीय परिवार है तो उसी किन्नी की एक मौसी है जो बिजनौर में रहती है लेकिन किन्नी के परिवार से उनकी आर्थिक स्थिति सौ गुना ज्यादा अच्छी है । उनकी गणना अमीर परिवारों में हेती है । जब बिजनौर वाली मौसी आती है तब वह आते समय अपनी बहन के बच्चों के लिए कुछ-न-कुछ नई या पुरानी चीजवस्तुओं को उठा लाती है । उसकी मौसी द्वारा लाये गये कपड़े जब किन्नी कॉलेज में पहनकर जाती है तब उसे कॉलेज में उसकी सहेलियाँ अलग-अलग नाम से बुलाती हैं । कहानी के पूरे केन्द्र स्थान में किन्नी और किन्नी का परिवार देखने को मिलता है । किन्नी की पारिवारिक समस्याओं को सूर्यबाला ने अपनी लेखनी द्वारा उजागर किया है ।

पात्र:

कहानी का मुख्य पात्र किन्नी है जो अपने पड़ोसी के भांजे आकाश के प्रेम में पड़ी होती है, परंतु आकाश की शादी मौसी की बेटी से कर दी जाती है जिसका नाम रोज़ी था । और इसके बाद किन्नी सिर्फ एक प्रेमिका बनकर ही रह जाती है । अब देखें तो जिस कॉलेज में रहकर किन्नी ने अपना अभ्यास पूर्ण किया उसी कॉलेज में वह पढ़ाने का कार्य करती है । उसके चार अन्य लड़कियों से भिन्न हैं । वह दहेज के कारण शादी करने से हमेशा मना करती रहती है । उसका स्वाभिमान उसे ऐसा करने से रोकता है । वह एक समझदार और स्वाभिमान से भरी हुई लड़की है । हर परिस्थिति का सामना वह अपनी सुझ-बूझ और समझदारी से करती है । वह हताश नहीं होती।

गौण पात्रों में मौसी, माँ, भैया-भाभी, दो बच्चे, रोज़ी, आकाश आदि पात्रों का परिचय प्राप्त होता है जो कहानी में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करते हैं । कहानी के गौण पात्रों को रसप्रद बना दिया गया है जिससे पाठक के मन में जिज्ञासा जागृत होती है और पाठक कहानी पढ़ने के लिए उत्सुक रहता है ।

संवाद :

कहानी के संवाद रसप्रद हैं जो पाठकों को कहानी पढ़ने के लिए प्रेरणा देते हैं । इस कहानी में अनेक संवाद ऐसे हैं जो कहानी की समस्याओं को उजागर करते हैं ।

"अरे किन्नी, देखूँ तो जरा तेरे कंगन, लाख के होंगे?"

"नहीं, सादे, प्लास्टिक के।"

"और जरा कानों के टॉप्स तो दिखा!"

"यहीं के चौक से खरीदे हैं।" [72]

"बेचारी रोज़ी, सचमुच कैसा तो सुथरा चेहरा-मोहरा है और सोने-सा स्वभाव। अरे, हज़ार लड़के मिलेंगे उसे । तू बेकार खुद भी परेशान होती है और उस बेचारी पर भी हज़ार पाबंदियाँ लगा रखी हैं ।" [73]

वातावरण:

इस कहानी का वातावरण एक मध्यमवर्गीय परिवार की जीवनशैली को दर्शाता है तथा यह कथा भारत के मध्यम जीवन शैली को जीने वाले परिवार की कहानी है ।

भाषा शैली :

कहानी के सभी पात्र पढ़े-लिखे होने के कारण पात्रों की भाषा शुद्ध है । कहानी की भाषा शैली वर्णनात्मक है फिर भी कहानी में छोटे-बड़े संवाद देखने को मिलते हैं ।

उद्देश्य :

'न किन्नी न' कहानी में दो परिवारों के रहन-सहन व जीवन शैली में किस प्रकार जमीन-आसमान का फर्क है, मध्यमवर्गीय समस्याओं जैसे बेमेल विवाह, आर्थिक समस्या, दहेज की समस्याओं को सूर्यबाला ने अपनी कहानी 'न किन्नी न' कहानी के माध्यम से उजागर किया है ।

समान सतहें:

'समान सतहें' कहानी को दो कथा संग्रहों में समान रूप से संग्रहित किया गया है । एक कथा संग्रह इक्कीस लोकप्रिय कहानियाँ और दूसरा संग्रह 'एक इन्द्रधनुष जुबेदा के नाम'कहानी संग्रह में शामिल किया गया है ।

प्रस्तुत कहानी में लोग कैसे अभावग्रस्त जीवन जीते हैं उन परिस्थितियों को सूर्यबाला ने अपने शब्दों में व्यक्त किया है । यहाँ पर एक ऐसे दबंग व्यक्ति की बात है जिसकी सरकारी नौकरी है, जिनका पहले समाज में एक अलग रुतबा, इज्ज़त हुआ करती थी । पर अब वह रिटायर्ड होने के बाद उनकी परिस्थिति में जमीन-आसमान का फर्क आ गया है । पायरिया की तकलीफ से दाँत निकलवा दिये गये हैं । गरदन और माथे पर ढेर-सी सिलवटें... उनकी अधिकतर लड़कियाँ ही हैं । वह साफ़-सफ़ाई का बहुत ध्यान रखते हैं ।

मंजू अपने पति के साथ चाचा-चाची के घर आ जाती है । वह सोचती है कि सारे खर्चे चाचा ही करेंगे । उसकी गांठ का कुछ नहीं जाएगा । रेल का टिकट भी उसे चाचा ही कटवा के देंगे और जाते समय हाथ में पाँच-दस देंगे ही देंगे । पर मंजू इस बात से अनजान थी कि चाचा भी अब उसकी तरह 'समान सतह' पर ही आ गये हैं । चाचा के घर का लड़का बार-बार घर में आता है और सामान लाता रहता है । अधिकतर सामान उधार ही आया है । अब चाचा की हालत ऐसी हो गई थी कि उनकी चप्पलें भी घिस गई थीं । दो दिन तो मंजू के पति की अच्छी खातिरदारी की गई। उसको थाली सजाकर खिलाई जाती थी । दामाद होने के

कारण चाचा उसकी बड़ी सहजता से खातिरदारी में लगे हुए थे । अभी भी चाचा के मन में पहले जैसा ही भाव है पर अब वह आर्थिक परिस्थिति नहीं रही । आखिर में छोटी लड़की का गुल्लक तोड़कर ही मंजू के पति को पाँच रूपये थमा दिये जाते हैं और वह पैसे ले भी लेता है । वह सोचता है कि ठीक मंजू ने भी उसके बेटे के साथ ऐसा ही किया होगा क्योंकि संबंध बचाने के लिए व्यक्ति किसी की भी भावनाओं को ठेस पहुँचा सकता है । क्योंकि चाचा ने जो गुल्लक तोड़ा था वह लड़की फुसफुसाकर रो रही थी ।

पात्र :

प्रस्तुत कहानी का नायक पात्र चाचा हैं जो पहले सरकारी नौकरी करते थे। पहले उनका एक अलग ही ताव था, पर जब से रिटायर्ड हुए हैं परिस्थिति में बदलाव आ गया है । जब उनके घर में मंजू उसके पति के साथ उनके घर आती है तो चाचा-चाची उधारी करके भी मंजू और उसके पति की खातिरदारी बड़े गौरव के साथ करते हैं और जब मंजू का पति अकेले आता है तब चाचा उधार लाकर भी उसकी मेहमाननवाजी में कोई कमी नहीं आने देते । भले ही उनकी चप्पलें घिस गई हों, आखिर में जब मंजू का पति जाता है तब वे छोटी बच्ची की भावनाओं की तक कद्र नहीं करते और उसका गुल्लक तोड़कर मंजू के पति को पाँच रूपए थमा देते हैं ।

गौण पात्रों में चाची, मंजू, मंजू का पति, मंजू का बेटा, लड़का, लड़की, रिक्शावाला आदि पात्रों के सहयोग से कहानी को एक अलग रूप दिया गया है । इन पात्रों ने कहानी में जान डाल दी है ।

संवाद:

कहानी के संवाद प्रसंगानुकूल हैं । संवाद छोटे-बड़े दोनों रूप में देखे जा सकते हैं । कहानी के संवाद पाठक की भावनाओं को झकझोर देते हैं। पेश है 'समान सतहें' कहानी के

संवादों के कुछ अंश :-

"मैंने संकोच से कहा, 'इस तकल्लूफ की क्या जरुरत थी? यह तो मेरा घर है...' "

"अरे भाई, दामाद हो। दामाद की तो बड़ी-बड़ी खातिर होती है..." [74]

"पहले इसकी सेहत सबसे अच्छी थी, इधर ही कुछ सालों से...."

"उन्हें कहीं स्कूल वगैरह में सर्विस मिल सके तो...."

"जाती है, भाई जाती है ... सुबह से बारह-एक बजे तक।" [75]

देशकाल :

प्रत कहानी का देशकाल महानगरीय है जिसमें दो परिवारों की आर्थिक परिस्थिति का मापन हो रहा है । यहाँ दोनों परिवारों की स्थिति 'समान सतह' पर ही आकर टिकी है और दोनों इसी समान भाव से अपनी जीवनशैली जी रहे हैं । कहानी पारिवारिक है ।

भाषा शैली :

कहानी की भाषा सुंदर और सरल है । कहानी पर शहरी जीवन का असर देखा जा सकता है । भाषाशैली में लेखिका ने भावनात्मक पक्ष को उजागर किया है । कहानी की भाषा में सचोक भाव प्रगट करने की चेष्टा की गई है जो पाठकों के हृदय पर सीधा प्रभाव डालने में सफल रहती है ।

उद्देश्य:

'समान सतहें' कहानी में महानगरीय जीवनशैली को उजागर किया गया है। अपनी इज्जत और शाख बचाने के लिए कैसे व्यक्ति किसी की भावनाओं के साथ खिलवाड़ करता है यह भी देखने को मिलता है ।

सुम्मी की बात:

'सुम्मी की बात' कहानी का भी समावेश समान रूप से दो कहानी संग्रहों में किया गया है । सूर्यबाला की इक्कीस लोकप्रिय कहानियाँ और दूसरा कहानी संग्रह 'थाली भर चाँद' नामक कहानी संग्रह है ।

'सुम्मी की बात' कहानी में एक गृहिणी की जीवनयात्रा की बात की गई है । उसके पिछले जीवन के स्मरण को बताया गया है । सुम्मी की बचपन की स्वतंत्रता का उल्लेख किया गया है । उसकी पहले की जीवनशैली और आज की जीवनशैली का अंतर समझाया गया है । यहाँ सूर्यबाला जी कहती हैं 'अपने आप में हम खुद अपने आपको एक सुखी और संतुष्ट इंसान मानकर ही चलते हैं अंदर के खाली मन को ताला लगाए हुए। व्यस्त मन, जंजालों में उलझे-खोए, लेकिन उम्र की उतरती धूप, घिरते सायों के साथ एक अवसाद-सा उतरता चला जाता है तब लगता है कि सारी भीड़ और अपने से अपने रिश्ते-नातों के बीच कहीं हम अकेले हैं, हमारी एक बिलकुल ही अलग दुनिया है जिसे हम किसी के साथ बाँट नहीं सकते । सुम्मी एक गृहिणी है उसे सुम्मी अब कोई नहीं बुलाता । बच्चे उसे 'मम्मी', काम करनेवाली 'बबीजी' और उसका पति उसे 'सुनो' बुलाता है । इन अलग-अलग नामों से उसके सामने अलग-अलग चित्र प्रस्तुत होते हैं । मम्मी सुनते ही उसे चाय का डिब्बा और गैस पर खौलता पतीले का पानी सामने आ जाता है । बीबीजी सुनते ही उसे किचन की गंदी मोरी नज़र आती है और 'सुनो' सुनते ही उसे अखबार का गेल घेरा, जिसके बीच उसका पति दोनों हाथों की उँगलियों से अखबार थामे गरदन ऊँची-नीची करते खबरें पढ़ता रहता है।'

पात्र:

कहानी का मुख्य पात्र सुम्मी है जो अपनी पिछले जीवनयात्रा को स्मरण करती है परंतु अब शादी के बाद उसका पूरा जीवन गृहस्थी के काम में ही बितता है और काम करते-करते ही वह अपने पुराने दिनों को याद करती है । वह उसके मन में सोचती है कि उसकी माँ उसे पत्र लिखे जिसमें उसे केवल सुम्मी कहकर ही संबोधित किया जाए कैसे वह अपने माता-पिता के घर खुशीभरा जीवन जीती थी और अपनी स्वतंत्रता का भरपूर आनंद लेती थी । परंतु शादी के बाद सुम्मी को घर की सारी जिम्मेदारियाँ निभानी पड़ती हैं । उसकी सारी उम्र अब इन्हीं कामों में निकल जाएगी । उसे अपनी जिंदगी जीने का अब वक्त ही नहीं मिलेगा ।

जैसे पहले सुम्मी का खयाल रखा जाता था अब उसका वैसे खयाल कोई नहीं रखता । उसको कोई नहीं पूछता । अब उसे अपना दुःख खुद ही सहना पड़ता है। और झूठ-मूठ का दिखावा ही करना पड़ता है और फिर अपने कामों में लग जाना होता है । उसकी शादी रमन से हो जाने के बाद अब उसकी यही दिनचर्या हो गई है ।

कहानी के गौण पात्रों में बच्चे, रमन, सुम्मी की माँ, बिज्जू, काम वाली, सन्नो आदि पात्रों का परिचय भी होता है ।

संवाद :

कहानी के संवाद मर्म से भरे हुए हैं जिसमें सुम्मी के मन के भाव छुपे हुए हैं । कहानी के संवाद पात्रानुकूल हैं जो पाठकों को पसंद आते हैं। पेश है 'सुम्मी की बात' कहानी के कुछ संवाद-

"हाँ, 'सुम्मी' गिरती तो पापा, जिज्जी, अम्मा सब दौड़ पड़ते । सुम्मी से ज्यादा हाय-हाय अम्मा करती। तुरंत तेल और हल्दी का लेप तैयार होने लगता सब रोग, दोष, पीड़ा हरन...।।" [76]

"बेटे ने कहा- ये लो, मम्मी फर्श पर फिसल गई ।"

"दिखाओ जरा, कहाँ लगी, कैसी लगी। सूज गया है?" [77]

"तुम्हें करना नहीं क्या कुछ? सब्जी काटनी है, चावल चुनने हैं, धूप में सूखती बड़ियाँ ठानी हैं और... और ढेर के ढेर सुखते अलगनी के कपड़े..." [78]

देशकाल :

'सुम्मी की बात' कहानी का वातावरण, भूतकाल और वर्तमान दोनों परिस्थितियों को लेकर दर्शाया गया है । कहानी महानगरीय परिवेश में जन्म लेती है । यह एक पारिवारिक माहौल में जन्म लेती कहानी है ।

भाषा शैली:

इस कहानी की भाषा शैली सरल और सहज है जो कहानी के अनुरूप है। कहानी के सभी पात्र सभ्य हैं इसलिए उनकी भाषा शुद्ध है । कहानी में अंग्रेजी

भाषा का भी प्रभाव देखा जा सकता है । भाषा शैली वर्णनात्मक शैली के अंतर्गत आती है ।

उद्देश्य:

इस कहानी का उद्देश्य नारी के मन में उठने वाले उद्वेग को दर्शाना है । कैसे वह शादी के बाद संघर्षमय जीवन-यापन करती है परंतु किसी से कोई शिकायत नहीं कर पाती। आज और कल के धरातल पर अपनी जीवनयात्रा का स्मरण करती नारी की व्यथा प्रकट की है।

होगी जय, होगी जय... हे पुरुषोत्तम नवीन:

यह कहानी ऐसे व्यक्ति की है जो किसी भी कीमत पर अपनी सच्चाई, ईमानदारी की राह छोड़ना नहीं चाहता। उसको यह प्रेरणा विरासत में उसके पिताजी से मिली है जो खुद एक सच्चाई और ईमानदारी का उदाहरण हैं । जो अरुण वर्मा अपने सामने प्रस्तुत करते हैं वह किसी भी कीमत पर हार नहीं मानते। वही उदाहरण अरुण वर्मा अपने बच्चों के सामने रखते हैं ।

वह एक जंगल में एम.एल.ए. की ट्रक को पकड़ लेता है और उस पर कार्यवाही करता है और उस कार्यवाही के लिए उसकी वाह-वाही के बदले में धमकियाँ, सलाहें और ऐसा कार्य ना करने की सूचना दी जाती है । इसके आगे भी अरुण कुमार ने ऐसे कार्य किए थे और उसके लिए अरुण कुमार को और उनके परिवार को खामिजाया भुगतना पड़ा था । उनके बच्चों की पढ़ाई में नुकसान उठाना पड़ा था लेकिन अरुण कुमार की यह ईमानदारी की लत छूटी ही नहीं । भाटिया अरुण को समझाता है कि तुमने मृत्युंजय सिंह के भतीजे का ट्रक है तो क्यों रामायण-महाभारत मोड लेते हो? तुम अपना हिसाब लगाते रहते हो । इसके पहले अपने बीवी बच्चों के हाथ में भीख का कटोरा थमाना न भूलना । भाटिया के बाद कौशिक आता है और कहता है कि क्या तुमने यह कार्य किसी पार्टी के

कहने पर तो नहीं किया है? इस दुःसाहस को करके तुमने खुद तबाही को न्यौता भेजा है । ऐसे कई पात्र अरुण को समझाने आते हैं ।

पात्र :

कहानी का मुख्य नायक अरुण किसी फिल्मी हिरो से कम नहीं लगता । क्योंकि ऐसे चरित्र और ईमानदारी की राह पर चलने वाले लोगों की संख्या गिनी-चुनी ही रह गई है । अरुण कहता है कि आज लोग सही को सही मान लेने में भी इतना घबराते क्यों हैं? यहाँ मेरे घर में सच को स्वीकारने में किसी का कोई नुकसान नहीं था। फिर भी किसी में भी हिम्मत नहीं है सच का साथ देने की । अरुण कुमार यह सोचता है कि शायद अब जिर्णोद्धार नहीं हो सकता तब कुछ भी सोचना-करना व्यर्थ है । पर पत्नी वसुधा उसे अपने पथ पर हमेशा बने रहने की सलाह देती है और कहती है कि जिस व्यक्ति का परिवार उस पर आश्रित हो उसकी बाध्यता, सीमाएँ होती हैं । एक हद के आगे नहीं जाया जा सकता, लेकिन यहाँ हमारे केस में मैं तुम्हें स्वतंत्र करती हूँ ।

गौण पात्रोंम में अरुण वर्मा की पत्नी वसुधा, भाटिया, अंकल, जोशी, प्रभाकर, अल्टाना आदि गौण पात्रों का महत्त्वपूर्ण सहयोग देखा जा सकता है ।

संवाद:

प्रस्तुत कहानी के संवाद मन को लुभाने वाले और पाठक को प्रेरणा देने वाले भी हैं । कहानी में संवाद किसी फिल्मी कहानी के संवाद जैसे ही लगते हैं ।

"मरेंगे और क्या!" गृहस्वामी लुंगी का फेटा कसते-कसते चाय का प्याला थाम लेता है।

"मगर आदमी है दिलेर!"[79]

"लूक! तुम एक जिम्मेदार अफसर हो, दूध पीते बच्चे नहीं कि सारी बातें तुम्हें नए सिरे से समझाई जाएँ ।" [80]

"फिर भी, मान लो, तब तैश में थे, अब तो आगे-पीछे सोचो!"

देशकाल:

हमारा देश जब से आज़ाद हुआ है तब से देश के हर क्षेत्र में भ्रष्टाचार दीमक की तरह फैला हुआ है जो देश की जड़ें खोखली कर रहा है । इस कहानी का वातावरण हम कल और वर्तमान के संदर्भ में भी ले सकते हैं । महानगरीय नौकरीपेशा लोगों की कहानी है जो ईमानदारी से नौकरी करते हैं उन्हें सिस्टम के द्वारा ही हैरान-परेशान किया जाता है ।

भाषा शैली:

कहानी की भाषा शैली सहज और सरल है। पात्र पढ़े लिखे होने के कारण भाषा शुद्ध है। बीच-बीच में अंग्रेजी वाक्यों का भी समावेश किया गया है । इस कहानी में वर्णनात्मकता से अधिक संवादों पर अधिक जोर दिया गया है लेखिका के द्वारा ।

उद्देश्य :

कहानी का उद्देश्य समाज के हर क्षेत्र में ईमानदार और सच्चे इंसान को गिराया जाता है और उसे और उसके परिवार को सच की राह पर चलने की भी कीमत चुकानी पड़ती है। यहाँ अरुण कुमार के माध्यम से भ्रष्टाचार के खिलाफ़ आवाज़ उठाने वाले को कैसे लोग वाह-वाही करने के बदले उसे ही दोषी साबित करते हैं और उसे सलाह-सूचना देते हैं ।

निर्वासित:

'निर्वासित' कहानी दो कहानी संग्रहों में प्रकाशित है । एक 'इक्कीस कहानी संग्रह', दूसरा 'एक इंद्रधनुष जुबेदा के नाम' में समाहित की गई है ।

'निर्वासित' ऐसे माता-पिता की कहानी है जो आज के आधुनिक जीवन में और उनके बेटे-बहुओं में अपनी मान्यताओं और सोच, संस्कृति का सामंजस्य नहीं बना पा रहे हैं । माँ-बाप जब अपनी नौकरी से रिटायर्ड हो जाते हैं तब उनका बड़ा बेटा दोनों को खत लिखकर उसके घर आ जाने को कहता है जो

अब शहर में बड़ा अफसर बन गया है । वह अपने माता-पिता को सख्त हिदायत देता है कि आते वक्त वे लोग अपने साथ कोई सामान उठाकर ना लायें । परंतु फिर भी वे लोग उनके दिल के करीब जो चीजें हैं उनका मोह नहीं छोड़ पाते और ले जाते हैं । पर उनके द्वारा लाई गई सारी चीजों को ऊपर माले पर चढ़ा दिया जाता है । जो कभी ना उतरे ऐसी जगह रख दी जाती है । दोनों को अपना समय व्यतीत करना भी मुश्किल हो जाता है । उनको इस महानगरीय जीवन शैली में जीवन निकालना असंभव-सा लगता है । दोनों अपना ध्यान पूजा-पाठ में लगाते हैं पर उस समय भी उन्हें टोक दिया जाता है । कहा जाता है कि यहाँ के लोग उन पर हँसते हैं और थोड़ा अपने मन में ही पूजा कर लिया करें। बड़े बेटे के मित्र अफसर शाम को उनके घर आते हैं इसलिए दोनों को सूचना दी जाती है कि घर के अंदर के कमरे में ही रहें ताकि वो लोग अपनी बातें खुलकर कर सकें ।

आखिर में दोनों माता-पिता अलग होने का निर्णय करते हैं। एक बड़े के पास और दूसरा छोटे के पास रहकर अपना जीवन 'निर्वासित' व्यतीत करेंगे और किसी को कोई शिकायत भी नहीं होगी ।

पात्र:

इस कहानी के मुख्य पात्र बाबूजी और माताजी हैं जो रिटायर्ड होने के बात अपने बड़े बेटे के घर रहने चले जाते हैं । पर वहाँ का रहन-सहन, रोक-टोक, उनके लिए असहनीय बन जाती है । वे अपनी मर्जी के अनुसार पूजा-पाठ तक करने के अधिकारी नहीं रहते और आखिर में दोनों तय करते हैं कि अब दोनों समझदारी दिखाते हुए एक बड़े बेटे के पास और दूसरा छोटे बेटे के पास रहने चला जाएगा । इस तरह वे अपना बचा-खुचा जीवन 'निर्वासित' रहकर ही गुजार देंगे ताकि किसी को कोई शिकायत का मौका ना मिले । इस तरह दोनों - बाबूजी और माताजी- अपने शेष जीवन के साथ समझौता कर लेते हैं ।

गौण पात्रों में रणधीर, राजेन, राजेन की पत्नी रीता आदि पात्रों का उल्लेख मिलता है ।

संवाद :

संवाद की दृष्टि से कहानी के संवाद सहज और सरल हैं, जो कहानी के पात्रानुकूल और प्रसंगानुकूल हैं ।

"तो उन्हें समझा दो... और अगर चाय जल्दी पीना चाहती हो तो जमना को कह दें जल्दी आ जाया करे ।" [81]

"अम्मा से कहिए सब कुछ न उठा लाएँ । यहाँ उन्हें किसी भी बात की तकलीफ न होगी ।" [82]

"ता चढि मुल्ला बाँग दे क्या बहिरा हुआ खुदाय । आप और बाबूजी मन-मन में पूजा कर लिया कीजिए, ये गुस्सा होते हैं ।" [83]

देशकाल:

कहानी का देशकाल महानगरीय परिवेश में ढला हुआ है । पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव पात्रों पर देखा जा सकता है जिनकी भाषा, रहन-सहन, खान-पान में बहुत बड़ा परिवर्तन नज़र आता है ।

भाषा शैली:

कहानी की भाषा शैली सहज और सुंदर है । पात्र अधिक मोडर्न होने की वजह से पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव देखा जा सकता है । दोहे का भी उपयोग किया गया है ।

उद्देश्य :

कहानी का उद्देश्य बुढ़ापे में रिटायर्ड हो जाने के बाद कैसे बहु-बेटे के अधिकार में रहकर जीवन को ढालना पड़ता है और अपनी भावनाओं को पीछे छोड़ते हुए उनका त्याग करना पड़ता है जो उन्हें 'निर्वासित' जीवनशैली जीने को मजबूर करती है ।

हनुमानगढ़ी की यात्रा (राख) :

हनुमानगढी यह एक बुढ़ी माँ को केन्द्र में रखकर लिखी गई कहानी है । यह एक भक्ति, श्रद्धा रखने वाली बुढ़ी माँ की कहानी है । बुढ़ी माँ को हनुमानगढी के रामलला भगवान के प्रति श्रद्धाभाव है । एक बार बुढ़ी अम्मा अपने पुरे परिवार के साथ हनुमानगढ़ी की यात्रा करती है तब रामलला के हनुमानगढ़ी का वातावरण एकदम अलग था और जब दुबारा बुढ़ी माँ आती है तो वातावरण और परिस्थिति में बदलाव आ गया है । पहले जब मंदिर आई थीं तब बाबाजी और शिष्य साथ में रहते थे । पर अब परिस्थितियाँ विपरित हो गई हैं । अब बाबाजी और शिष्य दोनों अलग-अलग रहते थे । पहले जब यात्री आते थे तो बाबाजी के हृदय मे यात्रियों के प्रति प्रेमभावना थी । उन्हें वो अपना समझते थे । तब उनका सारा जीवन का आधार उनकी त्याग की भावना थी । अब यह स्वभाव और बर्ताव मे भी बड़ा अंतर आ गया था । पहले बाबा निःस्वार्थ भाव से जीते थे परंतु अब बाबा के मन में स्वार्थ के भाव ने जन्म ले लिया है । अब वह गाँजा भी फूँकने लगे हैं । अब वह गंजेड़ी बन गये हैं ।

पात्र :

बुढ़ी माँ और बाबा केन्द्र स्थान पर हैं । जब बुढ़ी माँ हनुमानगढ़ी दर्शन करने दुबारा जाती हैं तब वहाँ के शिष्यों और बाबा में अलगाव हो गया था । पहले बाबा निःस्वार्थ यात्रियों की मदद करते थे और सेवा करते थे परंतु दुबारा उनके बर्ताव में परिवर्तन आ गया है । अब वह बिलकुल संसारी व्यक्ति जैसा व्यवहार करने लगे थे और गाँजा पीकर नशे में रहते हैं। अब वह स्वार्थी जीवन जीने लगे थे।

गौण पात्रों में बुढ़ी माँ का परिवार, शिष्य, बकुल दद्दा, नकुल दद्दा, बाबाजी का चित्रण देखने को मिलता है । इस कहानी में बाबाजी के पात्र को भी मुख्य पात्र जैसा न्याय दिया गया है ।

वातावरण एवं देशकाल :

प्रस्तुत कहानी का वातावरण हनुमानगढ़ी रामलला मंदिर का है । यह एक वर्णनात्मक कहानी के अंतर्गत आता है । हनुमानगढ़ी यह सूर्यबाला के यात्रा लेख में से लिया गया है, जिसमें सूर्यबाला आजकल के मंदिरों में हो रही परिस्थितियों को दर्शाती हैं ।

संवाद :

कहानी के संवाद वर्णन शैली में कए गए हैं इसलिए संवाद कम मात्रा में दिखाई देते हैं। पेश हैं कुछ संवाद-

> "बाबाजी दीसा-मैदान से आकर मिट्टी से हाथ माँज रहे थे, अंगोले से पोंछते हुए आए और खाट पर बैठ गए। हम सबने एक साथ माथा नवाया।" [84]

भाषा शैली :

धार्मिक भावनाओं को भाषा के माध्यम से व्यक्त किया है । वर्णनात्मक शैली और छोटे-बड़े वाक्यांशों का प्रयोग किया गया है ।

उद्देश्य:

इस कहानी का उद्देश्य आज की युवा पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी की विचार शैली में कितना अंतर है यह उजागर किया है । कैसे आज के बड़े-बड़े मंदिरों में भी ऐसा भेदभाव और अलगाव, विचारों में भिन्नता देखने को मिलती है । इस कथा में भारतीय संस्कृति परंपरा को पूर्ण रूप से हमारे सामने दृष्टिगत गिया गया है । मंदिरों में होने वाले मनमुटावों पर प्रकाश डालने का यत्न किया है सूर्यबाला ने इस कहानी 'हनुमानगढ़ी की यात्रा' द्वारा ।

लंबे समय के बाद सूर्यबाला का एक और कहानी संग्रह प्रकाशित हुआ जिसमें छः कहानियों का समावेश किया गया था परंतु अब इस कहानी संग्रह का 2008 में पुनः संस्करण किया गया। इस कहानी संग्रह का नाम 'एक इंद्रधनुष जुबेदा के नाम' है । कहानी-संग्रह में नौ कहानियों का समावेश किया गया है ।

इस कहानी के संदर्भ में कहते हैं "इनकी सोच का सिलसिला कहीं टूटा नहीं है । यही सिलसिला सूर्यबाला को सुलझे हुए रचनाकारों की श्रेणी में ले आता है"- कमलेशवर।

पेश है सूर्यबाला की 'एक इंद्रधनुष जुबेदा के नाम' के कहानी संग्रह की प्रथम कहानी का और अन्य आठ कहानियों का तत्वों के आधार पर मूल्यांकन ।

व्यभिचार:

इस कहानी का मुख्य पात्र रणजीत बहादूर और शिखा है। शिखा एक कवयित्री है । शिखा को हमेशा ऐसे पत्र आते हैं जिनको वह अपने पति को पढ़कर सुनाती है और किसने किस भाषा का प्रयोग किया है, क्या संबोधन किया है उनको कविता में, कहानियों में क्या अच्छा लगा- ऐसी-ऐसी बातें लेखिका पढ़कर उसका पृथक्करण करती है ।

बाह्य स्थितियों, परिस्थितियों एवं समस्याओं से पृथक् यह एक मानसिक धरातल पर रचित कहानी है । बाह्य परिस्थितियाँ इस कहानी में माध्यम मात्र हैं । पाठकों, प्रशंसकों, शुभेच्छकों के पत्र कवयित्री को आते ही रहते हैं और किसी पत्र में केयर ऑफ की जगह डॉटर ऑफ या मिसेज की जगह मिस लिखा होता है। दूसरा पाठकों की निश्छल, ईमानदार प्रतिक्रियाएँ कवयित्री को सीधे उनके प्रेक्षकों, पाठकों तक पहुँचा देती है । उनकी एक घनिष्ठ परिचिता है, जिसके हमेशा हँसते-मुस्कुराते रहने पर भी उसके पति की परस्पर मानसिक विसंगतियाँ कवयित्री को अंदर तक अनजाने में ही झिंझोड़ती हैं । बस, इस कहानी में लेखिका इन चीजों की व्यभिचारी बन गई है ।

पात्र :

कहानी की कथा मानसिक धरातल पर आधारित है । कहानी का मुख्य पात्र शिखा है जो एक कवयित्री है, जो रणजीत बहादूर की पत्नी है । व्यभिचार कहानी एक कवयित्री के रोजमर्रा जीवन में घटित होने वाली घटनाओं के संदर्भ में लिखा

हुआ है । कैसे वह उसके आये पत्र अपने पति को पढ़ कर सुनाती है । एक बार उसे केयर ऑफ में डॉटर और एक बार मिसेज की जगह मीस लिखा गया था।

कहानी के गौण पात्रों के रूप में प्रेषक, पत्र लिखनेवालों और कवयित्री की परिचित स्त्री का उल्लेख मिलता है ।

संवाद :

"अच्छा, आपकी तरफ से क्या लिख दू ?"

"अरे, जैसे उसने हाँकी है वैसी ही मेरी तरफ से भी हाँक देना- कुछ वजनदार ।" [85]

"जो भी आप चाहे !

हनी कहुँगा-ठीक!

ठीक।"

"वाह, इसने तो मुझे भी याद किया ! और वही कहा जो मैं कहता हूँ- यानी मैं कितना खुशकिस्मत हूँ! है न डार्लिंग !"

वातावरण एवं देशकाल :

देशकाल एवं वातावरण आधुनिक शहरी जीवन शैली पर आधारित है । महानगरीय वातावरण है जो भारतीय संस्कृति को दर्शाता है ।

भाषा शैली:

कहानी की भाषा शैली में काव्यात्मक शैली का भी कहीं-कहीं प्रयोग हुआ है । भाषा सहज और सरल है । कहानी के पात्र पढ़े-लिखे होने के कारण अंग्रेजी भाषा का भी प्रयोग करते हैं जैसे केयर ऑफ, डॉटर ऑफ, डार्लिंग, कंप्लीमेंट, स्वीट हार्ट, आइस क्युब्स, वाइफ ऑफ हनी आदि शब्दों का उल्लेख हमें दृष्टिगत होता है ।

उद्देश्य :

'व्यभिचार' के माध्यम से कहानीकार के बाह्य जीवन से उसका व्यभिचार कैसा है और बाह्य परिस्थितियों का उसके मानसपटल पर क्या असर पड़ता है यह दर्शाने का पूर्ण प्रयास लेखिका द्वारा किया गया है ।

सुलह :

'सुलह' लेखिका की बीते दिनों की डाँवाडोल स्थिति, नैराश्य और किशोर वयमें जिंदगी के साथ जुझती तमाम कश्मकशें है ।

प्रस्तुत कहानी ऐसे युवक की है जो ऑफिस में क्लर्क का काम करता है और अपने काम को बचाये रखने के लिए वह साहब से बीच-बीच में सिफारिश भी करता रहता है ताकि जब परमनन्ट की लिस्ट आए तो उसे भी उस लिस्ट में स्थान मिले । वह अपने बच्चे के लिए कॅडबरी नहीं खरीदता परंतु साहब के बच्चे के लिए ले आता है । इस उम्मीद में की साहब उसे देख लें और उससे इंप्रेस हो जाएँ। वह अपने पत्नी और बेटे के भविष्य की सुरक्षा की कामना करता है ताकि वह अपने परिवार का पालन-पोषण ढंग से कर सके । वह कहानियाँ भी लिखता है पर उसके लिफाफे वापस लौटकर आते हैं । आखिर में उसका नाम कामदार की लिस्ट में नहीं होता । वह बड़े साहब से भी बात करने जाता है पर इसका उसे कोई लाभ नहीं होता । उसे साहब से भी निराशा ही हाथ लगती है । आखिर में वह अपनी जिंदगी के साथ 'सुलह' कर लेता है । जैसे उसका जीवन चलता था बस वैसी ही अवस्था में फिर से जीने लगता है ।

पात्र :

'सुलह' एक ऐसे युवक की कहानी है जो अपने भविष्य के हसीन सपने देखता है । वह एक ऑफिस में क्लर्क का काम करता है और अपने साहब के आगे-पीछे करता रहता है ताकि जब परमॅनन्ट काम वालों की लिस्ट जारी हो तो उसका यह नुस्खा काम आ जाए । वह अपने बच्चे के लिए चॉकलेट नहीं खरीदता मगर दिखाने के लिए साहब के बच्चे के लिए चॉकलेट खरीदता है । मगर जब फाइनल लिस्ट आती है तो उसमें उसका नाम नहीं होता । वह निराशा और हताशा में डूब जाता है । इस पात्र के माध्यम से सूर्यबाला ने देश की बेरोजगारी की समस्या को उजागर किया है ।

गौण पात्रों में युवक की पत्नी, साहब, युवक का बच्चा और साहब का बच्चा आदि दृष्टिगत होते हैं ।

संवाद :

कहानी के संवाद अत्यंत मर्मस्पर्शी हैं जो पाठकों के हृदय को रोमांचित कर प्रेरणा प्रदान करते हैं । पेश है 'सुलह' कहानी के संवाद :

होटल के नाम से पत्नी के पैर में डंक लग गया ।

"नहीं-नहीं, मैं तो अब बिलकुल नहीं खा सकती ।"

"सच?"

"सच।"

"अच्छा चलो, तब बस-स्टोप चलें ।" [86]

"कैसे? कहाँ से?" वह आकुल हो पूछता ।

"मैंने देखे नहीं, मुन्ना रो रहा था । उसके बाद भूल गई ।" [87]

"आइ एम सॉरी, अब तुम जा सकेत हो । कहीं और ट्राई कर लो।"

"दो पैकेट कॅडबरीज चॉकलेट के और हाँ, पचास ग्राम नमकीन बिसकुट..."

देशकाल एवं वातावरण :

'सुलह' कहानी का परिवेश महानगरीय परिवेश है जो आधुनिक जीवन में बेरोजगारी की समस्या से कैसे युवा पीढ़ी गुजर रही है उसका जीवंत वातावरण लेखिका ने इस युवक और उसके पारिवारिक माहौल के द्वारा बता दिया है ।

भाषा शैली :

'सुलह' कहानी की भाषा शैली वर्णनात्मक है । इसमें संवाद शैली का बहुत कम उपयोग किया गया है । मुख्य पात्र के नाम का उल्लेख नहीं किया गया । कहीं-कहीं अंग्रेजी भाषा का प्रयोग भी देखने को मिल जाता है, जैसे- परमॅनन्ट, आइ एम सॉरी। कहानी में कम संवाद शैली का प्रयोग हुआ है । वर्णनात्मक शैली में मन के भावों को व्यक्त किया गया है ।

उद्देश्य : कहानी का उद्देश्य महानगरीय जीवन में जिंदगी बसर करने वाले मध्यमवर्गीय परिवार के युवक को अपना जीवनयापन करने के लिए कैसे अपने काम के साथ सुलह करना पड़ता है इसे दर्शाया है । इस कहानी के माध्यम से पूरे भारत वर्ष में गंभीरता से पग पसारने वाली बेरोजगारी की समस्या को लेखिका ने 'सुलह' कहानी के युवक के पात्र द्वारा दृष्टिगत किया है ।

हाँ पलाश के फूल... नहीं ला सकूँगा...:

प्रस्तुत कहानी में अनुप जो अपनी पढ़ाई पूर्ण कर कनाड़ा से लौटा है वह अपने घर आकर अपने बचपन के दिनों को याद करता है । बचपन से अनूप का रखाल बाबू की बेटी (वृंदा) से बेहद लगाव था । वह रखाल बाबू के जेल जाने के बाद वृंदा को अपनी सारी किताबें संभालकर वृंदा के लिए रखता फिर उसे वृंदा को दे देता । वृंदा एकदम निश्चल सी कभी कुछ नहीं कहती थी और चला जाती थी । अब अनूप कनाड़ा से लौटा तो वह वाँदा से और आकर्षित हो जाता है । वृंदा हारमोनियम पर संगीत सिखाती है ।

अनूप वृंदा के घर रखाल बाबू से मिलने जाता है । वह रखाल बाबू को इसलिए पसंद करता था क्योंकि वे वृंदा के पिता थे । वृंदा के खुँकी कहकर बाहों में लेकर उछालते थे । बाँग्ला की न जाने कौन-कौन सी कविताएँ उसे सुनाते-सुनाते चिढ़ाते थे । वह वृंदा से सब कुछ कहना चाहता था पर कह नहीं पाता था । इधर अनूप के घरवालों को भी डर लगा रहता था की कहीं अनूप कनाड़ा से किसी गोरी मेम के साथ शादी ना कर ले क्योंकि अनूप का परिवार रुढ़िवादी मान्यता का था । अनूप ऐसा ना करे इसलिए उसका परिवार मन्नत, अनुष्ठान आदि करते रहते थे ताकि उनकी इज्जत और मर्यादा पर कोई आँच ना आए। भगवानने सुन ली । वह केवल कुल, गोत्र, कुटुंब और संस्कारवाली बहु लाना चाहते थे और अनूप के गले में तो बंगाली रसगुल्ले का टुकड़ा अटका था । अनूप अपने

परिवारवालों से वृंदा के विषय में बात नहीं कर पाता और उसकी मन की बात उसके मन में ही रह जाती है। और उसे कल कनाड़ा लौटना है इस विषय पर अपना ध्यान केन्द्रित करता है ।

पात्र:

कहानी का मुख्य पात्र अनूप है जो रखाल बाबू की बेटी वृंदा से मन ही मन में प्रेम करता है परंतु उस बात को वह अपने रुढ़िवादी परंपरा का पालन करने वाले परिवार के सदस्यों को बता नहीं पाता क्योंकि परिवार को तो, संस्कारवाली, अच्छे घराने से, उच्च कुल और गोत्र को ध्यान में रखते हुए ही अनूप का विवाह करवाना था । अनूप के परिवार को लगता है कि कहीं अनूप कनाड़ा में किसी गोरी मेम से ब्याह न कर ले । इसलिए मन्नतें और अनुष्ठान भी करवाते हैं ।

गौण पात्रों में रखाल बाबू, वृंदा, रामलखन, चाची, वकिलन, रामसहाय वकील, द्वारिका साब, कॉस्टेबल आदि का परिचय मिलता है ।

संवाद :

कहानी के संवाद सरल और सहज हैं जो पाठकों का मनोरंजन करते हैं ।

"कहाँ दिखेंगे बिचारे! एक टाँग को लकवा मार गया न, इस सावन में चार साल हो जायेंगे, दमा पुराना हो चला है । सीलन भरी कोठरी में झिलँगी खाट पर पड़े रहते हैं ।" [88]

"चोले आय, आय-आय...

डाला मोदेर भोर छे आज पाका फेंशोले मोरी

आय, आय, आय-" [89]

वातावरण:

कहानी का वातावरण दो या दो से अधिक परिवारों के घर का वातावरण है। कहानी महानगरीय जीवनशैली से प्रेरित है । यहाँ दो संस्कृतियों और सभ्यताओं में भिन्नता दिखाई गई है ।

भाषा शैली:

कहानी की भाषा शैली में सभी कहानियों की भाषा शैली से भिन्नता देखी जा सकती है । भाषा शैली में बांगला भाषा का उपयोग तथा सुंदर कविताओं और गीतों को भी संगीत की शैली में लेखिका ने कहानी में प्रस्तुत किया है । कहानी में अंग्रेजी भाषा का भी प्रभाव देखा जा सकता है । कहानी की भाषा शैली पात्रानुकूल और प्रसंगानुकूल है जो कहानी में एक रस पैदा करती है।

उद्देश्य :

कहानी दो परिवारों के बीच का संबंध तथा दो भिन्न संस्कृतियों, मन के भावों को प्रकट करने में असमर्थ अनूप आदि के माध्यम से मध्यमवर्गीय परिवार में पारिवारिक समस्याओं को सूर्यबाला ने अपनी इस कहानी में उजागर किया है जिसमें काफी हद तक लेखिका को सफलता भी प्राप्त हुई है ।

दरारें :

'दरारें' कहानी के शीर्षक से ही पता चलता है कि कहीं कोई अंतर या भेदभाव की बात हो रही है। 'दरारें' कहानी में सूर्यबाला ने दो समाज के भिन्न वर्गों -एक अमीर और दूसरा वर्ग गरीब- में जो खाई है, उसी संदर्भ में लिखा गया है । इस कहानी में दो वर्ग (व्यक्ति) डिप्टी डायरेक्टर रायजाता और युनियन के नेता बंसल के बीच चलने वाले युद्ध (कसाकसी) का चित्रण किया गया है । इस कहानी के पात्र अपने अनुसार ही लड़ाई में शामिल हो रहे हैं। कोई यहाँ मन से लड़ाई नहीं लड़ रहा है, सब कुछ-न-कुछ मजबूरी में लड़ाई में शामिल होते हैं । यहाँ सूर्यबाला ने एक वर्ग ऐसा बताया है जो ऐशोआराम, सुख-सुविधा से संपन्न है और आनंद से अपना जीवन प्रवाह चला रहा है और वहीं गरीब वर्ग को छोटी-छोटी खुशियों के लिए भी लंबा इंतजार करना पड़ता है ।

पात्र:

'दरारें' कहानी में मुख्य दो पात्रों को दर्शाया गया है । एक डिप्टी डायरेक्टर रायजादा और दूसरा युनियन का नेता बंसल है । इन दोनों पात्रों में डिप्टी डायरेक्टर अमीर वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है तो दूसरा पात्र बंसल गरीब वर्ग की तरफ से लड़ाई में उतरता है । बंसल का चरित्र एकदम दूसरों की मदद करने वाला है । वह युनियन का लीडर होने के नाते अन्याय के खिलाफ अपनी आवाज़ उठाता है । वह शोषित होने वाले मजदूरों के लिए उनका नेतृत्व कर रहा है । वह एक स्वाभिमान से भरा हुआ व्यक्तित्व है जो मेनेजमेन्ट के खिलाफ अपनी आवाज़ उठाता है । उसका संघर्ष यहीं नहीं रुकता, क्योंकि जब उसके घर में खाने के लिए कुछ नहीं होता तब वह अपनी पत्नी के झूमके भी बेच देता है । इस बात का बंसल की पत्नी को हमेशा डर सता रहा है कि इस लड़ाई में बंसल को कहीं कुछ हो ना जाए।

गौण पात्रों में बंसल की पत्नी और मजदूरों का समावेश होता है ।

वातावरण:

यह कहानी तत्कालीन समय और परिस्थिति का चित्रण करती है । कहानी के केन्द्र में अन्याय के खिलाफ लड़ने की बात की गई है । महानगरीय जीवनशैली और वातावरण है।

भाषा शैली:

कहानी की भाषा शैली में भारतीय संस्कृति के दर्शन होते हैं क्योंकि भाषा सुंदर और सरल भावों में व्यक्त की गई है । कहानी की भाषा पाठकों में जिज्ञासा उत्पन्न करने वाली है। कहानी के अधिकतर पात्र पढ़े-लिखे होने के कारण अंग्रेजी भाषा का उपयोग करते हुए भी देखे जा सकते हैं ।

संवाद:

कहानी का आरंभ और अंत दोनों महानगर से ही होता है । पेश हे कहानी के संवादों के कुछ अंश-

"वही सेम द ब्लडी यूनियन चैप...।"

"आई सी- कोर्ट से । ओ.के...., बाई!" [90]

"तानाशाही नहीं चलेगी! रायजादा मुर्दाबाद! जो हमसे टकराएगा, चूर-चूर हो जाएगा.. " [91]

"क्यों रुखी-सूखी भी चैन से नसीब नहीं होतने देते?.. अब भूख-हड़ताल भी..."

"गेहूँ, चावल, चनी और मिट्टी के तेल की तरह जिसके लिए लड़ा जाए... बीवी-बच्चे की कुर्बानी दी जाए... बुखार में बेहोश बच्चे को छोड़कर हवा में घूँसे तान-तानकर चीखा जाए । " [92]

उद्देश्य :

कहानी का मुख्य उद्देश्य उच्च वर्ग द्वारा मजदूर वर्ग को कैसे निशाना बनाया जाता है कि उनके इतने दयनीय और बद से बदतर हालात हो जाते हैं कि वे अपना पूरा जीवन मछली की तरह तड़पते ही व्यतीत कर देते हैं पर शोषण करने वाले वर्ग पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता है ।

अविभाज्य:

'अविभाज्य' कहानी का कथानक जीवन के वास्तविक प्रसंगों को आधार बनाकर लिखा गया है । इस कहानी में सूर्यबाला ने कहा है कि वह उस कहानी में नामों और संबंधों का साहस नहीं जुटा पाई। रथीन की मानसिकता और व्यक्तित्व भी सच लगता है । कहानी किसी सत्य घटना पर आधारित नहीं है । केवल संवेदनाओं के माध्यम से जोड़ा गया है । कहानी की संपूर्ण कथा एक स्त्री पात्र के आस-पास ही घूमती रहती है । उस स्त्री पात्र का नाम सीमा है जिसका विवाह रथीन के साथ किया जाता है । सीमा पढ़ी-लिखी और सुलझी हुई लड़की है । 'अविभाज्य' कहानी परिवार से संबंध रखती है परंतु अपने साथ कहीं और नातों-रिश्तेदारों को जोड़ते हुए चलती है । इस कहानी के माध्यम से लेखिका ने मनुष्य

के आपसी संबंधों और व्यवहारों को माध्यम बनाकर रिश्तों का महत्त्व समझाते हुए 'अविभाज्य' कहानी का निर्माण किया है ।

पात्र :

कहानी के पात्र में सीमा और रथीन के संबंधों के अलावा राजीव-अहतु, अमृता सारे पात्रों को लेकर मनुष्य के बीच संबंधों को उजागर करने का कार्य लेखिका करती है । कहानी के मुख्य पात्रों के रूप में सूर्यबाला ने सीमा और रथीन को बताया है ।

वातावरण :

कहानी का वातावरण महानगरीय है और पारिवारिक माहौल के बीच में कहानी जन्म लेती है ।

संवाद :

मजमे से वही व्यंग्यभरी आवाज़ उठती है । "यह प्रमाण देने की 'गील्ट' क्यों? उसे लगा, इस प्रमाणवाली बात पर सारा मजमा ठहाके-पर-ठहाके लगा रहा है ।" [93]

"अच्छा, अच्छा! ठीक हो जाओ, परसों ही तो चलना है न? रिश्तेदारियों में ऐसी परेशानियाँ होती ही हैं ।" [94]

भाषा शैली :

इस कहानी की भाषा शैली सरल-सुलभ है । कहीं-कहीं अंग्रेजी भाषा का उपयोग हुआ है । महानगरीय भाषा का प्रभाव पात्रों पर देखा जा सकता है ।

उद्देश्य :

कही का उद्देश्य पारिवारिक संवेदनाओं को केवल एक रिश्ते में नहीं अपितु बहुतेरे रिश्तों में संवेदनाओं का समावेश करना पड़ता है जो परिवारों को आपस में जोड़कर रखने वाली कड़ी स्वरूप कार्य करती है ।

रेस:

'रेस' सूर्यबाला द्वारा रचित कहानियों में से एक कहानी है । सुधीर एक ऐसा पात्र है जो दुनिया की इस दौड़ में तेज गति से प्रगति करने के लिए क्या-क्या करता है और आखिर में उसके जीवन का क्या होता है यह इस कहानी के माध्यम से बताया गया है ।

सुधीर पहले मस्ती-उमंग से भरा चुस्त-खिलदंडा सुधीर कभी यों ही मिल-दो मील पैदल चक्कर मार लेने की तलब, वह भी कभी नहर के किनारे-किनारे निर्जन सपाट रास्ते पर, तो कभी, एकदम भीड़ ठस्सम ठस्स में रोज एक नया फितूर । खीझ उठती वह, कभी कभी हाथ पसारे, किसी छोटे बच्चे को देखकर, खुद को चाहिए कि माँ के लिए नहीं दूंगा । अच्छा, बोल क्या खाएगा, जलेबी? चल उत्ताद! और फिर सीधे हलवाई की दुकान पर पहुँचता, कभी खुश होकर किसी रिक्शेवाले को आठ आने ज्यादा देना, चलते-चलते मजदूर बुढ़िया से दो बातें कर लेना । किसी मचलते गरीब के बच्चे को गुब्बारा खरीदकर देना .... ऐसा था सुधीर का स्वभाव पर धीरे-धीरे आगे निकलने की होड़ में मिल में अपना रुतबा बढ़ाने के लिए वह रोज फाइलों और काम में इतना मशगुल रहता कि अब उसमें कई पहले वाली भावना शेष नहीं बची थी । न वह अपने परिवार को समय दे पा रहा था, बल्कि समाज में नाम रोशन करने के लिए वह अपने छः साल के बेटे तक को अपने से दूर भेज देता है । हमेशा मिल के काम में लगा रहता है । उसे अपनी सेहत की भी कोई परवाह नहीं रही है अब। आखिर में हाई ब्लड प्रेशर और हार्ट अटैक के कारण दुनिया की 'रेस' से बाहर हो जाता है सुधीर ।

पात्र:

कहानी का मुख्य नायक सुधीर है जो पहले तो अपनी जिंदगी को बड़ी ज़िंदादिली से जीता है । सबको खुश करने में लगा रहता है । कभी किसी से हँसकर बात कर लेता है तो कभी किसी की मदद ही कर देता है । अपनी जिंदगी वह निखालस भाव से जीता है परंतु जैसे वह अधिक समय काम से

फाइलों में गुजारने लगता है, वैसे-वैसे उसका स्वभाव और खुद के लिए जीवन जीने कि इच्छा समाप्त हो जाती है क्योंकि वह समाज में अपना रुतबा और शानो-शौकत बढ़ाने के चक्कर में पड़ जाता है । ना उसे परिवार की फिक्र रहती है न खुद के स्वास्थ्य का ही खयाल रहता है । जिसका परिणाम यह होता है कि उसका ब्लड प्रेशर हाई हो जाता है और उसे हार्ट अटैक आ जाता है और दुनिया की 'रेस' जीतने के चक्कर में खुद के जीवन की 'रेस' हार जाता है ।

गौण पात्रों में सुधीर की पत्नी, उसका छः साल का बेटा-सुब्रत, मि. बन्ना, मि. गुप्ता, डॉ. शिंदे आदि कहानी को आगे बढ़ाने में सहयोग देते हैं ।

संवाद :

कहानी के संवाद दुनियादारी सिखाने वाले और मर्मस्पर्शी हैं जो एक व्यक्ति को प्रेरणा देने का कार्य करते हैं ।

"रब्बिश! राशि, वर्तमान हमेशा कल को पाने का साधन है । बस । कल सुब्रत का अपना एक कैरियर यह भी होगा कि वह शुरु से आखिर तक वैलहम और मेयो जैसे बड़े खर्चीले एरिस्टोक्रेट क्लास स्कूलों में पढ़ा है- दो तीन सालों के बाद ही उसे मेयो स्कूल में डालूँगा ।" [95]

"अपने मन का करने में जो सुख है न राशी, वह कहीं नहीं । मेरी आत्मा ने कहा । आज इसे जलेबी खिलाओ, मैंने खिला दी, बस!" [96]

वातावरण :

कहानी के पात्र पढ़े-लिखे हैं इसले शुद्ध भाषा का प्रयोग करते हैं । कहीं-कहीं पूरे पूरे अंग्रेजी भआषा के संवाद देखने के मिलते हैं । अंग्रेजी के कुछ शब्द रेस, इमेज, लंच, गुड मॉर्निंग, हेलो, ट्रीटमेन्ट, सिनियर, रैंक आदि शब्द देखे जा सकते हैं ।

उद्देश्य :

कहानी के माध्यम से सूर्यबाला ने आज के आधुनिक युग में मनुष्य समाज में नाम कमाने की लालसा, सारी खुशियों को हासिल करने की कामना के कारण

निरंतर काम करता रहता है, बिना अपने स्वास्थ्य की परवाह किये जिसका परिणाम यह होता है कि 'सबकुछ जीतकर भी मनुष्य जीवन से हार जाता है।'

4.6 एक इंद्रधनुष जुबेदा के नाम :

प्रस्तुत कहानी मशहूर कव्वाल, शान-ए-कव्वाली शहनाजन गढ़ीवाले की है जो अपनी कव्वालियों से सबको मंत्रमुग्ध कर दिया करता था पर आज उसकी स्थिति और हालात ऐसे थे कि उसके घर में सीलन लग गई थी और इसक कारण था जब जुलेखा का जनाजा उठा था और इधर उस्ताद की कव्वालियों का मजलिसों से जनाजा उठा था, तब वह अपने चहीते शागिर्द शब्बन को एक लब्ज बोले थे- 'शब्बन मेरी आवाज़ चली गई'। उन्हें बुलावे आते रहे । रायसाहब की सगाई के जश्न के, ठाकुर उमरावसिंह की पचासवीं सालगिरह के, नवाब हुसेनाबाद की लड़की के निकाह के, पर वह न बाहर जाता, न हाथ जोड़कर माफी माँगता। बस जुबेदा को गोद में लिये या खाट पर लिटाए पड़े रहता ।

जब उसकी बेटी जुबेदा उर्फ जुब्बी का बदामी पोस्टकार्ड आया तो वह वह काम कर गया जो हकिमऊल्ला साहब की दवा ने भी नहीं किया था । खुशी से उसने डाकिये को चवन्नी थमा दी थी । कोशिश तो बोलने की भी की थी पर बोल न सका । न जाने कितने महिनों-सालों से, दिलोदिमाग में, हर कहीं उन्हीं दास्तानों का पहरा था । उसकी बेटी जुब्बी आ रही है यह सोचकर ही वह कहता है- गफूर मियाँ को बुलवाया जाये। राय ली कि कम-से-कम कितने डेढ़ फूट तक दिवार थोड़ी दुरुस्त हो जाए, तारकोल की पुतवा दें? संडास के लिए एक टाट का परदा, नई रकाबियाँ, गफूर मियाँ अपनी दे देंगे फिर एक गोटेवाली किनारेवाली किराख, दामाद को एक तौलिया, एक फूलदार साड़ी... । शब्बन आता है, उन्हें कव्वाली गाने के लिए आग्रह करता है और वह गा भी देते हैं और लोग मंत्रमुग्ध हो जाते हैं । मगर उसका प्रिय शागिर्द अब नहीं चाहता था कि उनका प्रिय उस्ताद अब उसका सारा श्रेय ले जाए । उस्ताद लोगों की तारीफें सुनकर खुश हो

जाते हैं । वह सोचते हैं कि अब जुबेदा के लिए अच्छा बंदोबस्त हो जायेगा । मगर दूसरे दिन शब्बन संदेशा भिजवाता है कि आने की जरूरत नहीं है । आप अपनी तबियत का ख्याल रखें ।

पात्र:

कहानी का मुख्य पात्र शहनाजन गढ़ीवाला है जो एक प्रसिद्ध कव्वाली गायक है । कहानी का मुख्य नायक अफज़ल मुराद है । सारी कहानी का केन्द्र यही है । अफज़ल की पत्नी की मृत्यु के बाद उसकी परिस्थिति एकदम से बदल जाती है । वह अपने जीवन से निराश हो जाता है । कव्वाली गाना भी छोड़ देता है। अब उसके घर की हालत ऐसी हो गई है कि दीवारों को भी सीलन लग गई है । पूरे घर की हालत खराब हो गई है । पर जब जुबेदा यानी उसकी बेटी के आने की खबर पत्र के द्वारा मिलती है तब उसके मन में जीने की ख्वाहिश जागृत होती है और वह कई सालों से कव्वाली नहीं गाई थी पर लोगों के कहने पर उसने इस बार गा दी थी । उसे अपनी बेटी जुबेदा के आने पर घर में सुख-सुविधाओं का बंदोबस्त भी करना था ।

गौण पात्रों में जुलेखा, जुबेदा, गफूरे, शब्बन, नूरी, सहाय साहब, आदि पात्र कहानी को आगे बढ़ाने में अपना महत्त्वपूर्ण रोल अदा करते हैं।

संवाद:

कहानी के संवाद पाठकों में जिज्ञासा उत्पन्न करने वाले हैं जिसका चित्रण पाठकों के सामने संवादों के माध्यम से दृष्टिगत होता है ।

"और... मिजाज कैसे हैं?"

"दुआ है तुम सबकी... ठीक हूँ ।"

"यही रंगतभरी शामें कभी हमने गुजारी थीं ।

शफक, बादलत तड़पती बिजलियाँ, सबकुछ हमारी थीं ।" [97]

"जी हाँ।...."

"कब लग रही है मजलिस?"

"कल शाम की है ।"

"ठीक है, ठीक है । कितने बजे? वही साढ़े आठ-नौ का टाइम होगा और क्या-है न?" [98]

वातावरण :

कहानी का वातावरण अतीत के कुछ पल स्मरण करते और वर्तमान की परिस्थिति को दर्शाते हैं । कहानी का वातावरण महानगरीय वातावरण है ।

भाषा शैली :

कहानी में मुस्लिम पात्र होने के कारण सभी पात्र-भाषा फारसी-अरबी, उर्दू का प्रयोग करते हैं । लेखिका ने मुस्लिम परिवेश में कहानी को अंजाम दिया है ।

उद्देश्य:

कहानी का उद्देश्य है कि इतनी त्रासदी जीवन में भोगने के बाद भी एक व्यक्ति के जीवन में एक आखिरी उम्मीद भी जीने के लिए काफी होती है । जो मनुष्य को दोबारा जीवन जीने की प्रेरणा देती है । ऐसा ही प्रसिद्ध कव्वाल शहनाजन की जीवनयात्रा के माध्यम से सूर्यबाला ने पाठकों के सामने एक प्रेरणादायी कहानी को उजागर किया है ।

पाँच लंबी कहानीयाँ :

'पाँच लंबी कहानियाँ' सूर्यबाला का नया कहानी संग्रह है। इसके बारे में डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर कहते हैं- "सूर्यबाला की कहानियों में भावनात्मक, वैचारिक गांभीर्य, दार्शनिक वृत्ति, विलक्षण सादगी है। देखा जाए तो इस कहानी संग्रह का संस्करण 2005 में हुआ था । इसमें बारह कहानियों का समावेश किया गया है । इस कहानी संग्रह की प्रथम कहानी 'मानुष गंध' है ।"

मानुष गंध :

20वीं सदी में अनेक महिला लेखिकाओं ने कहानियाँ लिखीं परंतु सूर्यबाला की कहानियों की बात और छटा निराली है । 'मानुष गंध' कहानी का मुख्य पात्र

मध्यम वर्ग परिवार से आता है । इस कहानी में भारत और अमेरिका के बीच होने वाले पत्र व्यवहार का समावेश किया गया है । सब पत्रों को पढ़ने और समझने के बाद ऐसा प्रतीत होता है कि लोग अपना देश छोड़कर भले ही विदेशों में स्थायी हो गये हों पर वहाँ जाकर भी अपनी संस्कृति और मिट्टी को भूल नहीं पाते तथा अपने साथ लेकर चलते हैं । कहानी का मुख्य नायक डॉ. वैभव शुक्ल है जो अमेरिका जाकर बच्चों की किड़नी के विषय पर अपना शोध कार्य कर रहे हैं और वहाँ रहकर इ शोध में डॉ. वैभव को सफलता भी प्राप्त होती है । जब वह वहाँ अध्ययन करता है तब उसे राधाबाई के बेटे निकुंज की किडनी की बीमारी से प्रेरणा प्राप्त होती है । जब डॉ. वैभव अमेरिका से अध्ययन करके वापस भारत आता है तब वह भारत में आकर देश और समाज की सेवा में अपना योगदान देने के लिए हर जगह एप्लीकेशन देता है । परंतु उसे हर जगह से निराशा ही हाथ लगती है । यह हताशा और निराशा उसे सोच में डाल देतीह । उसके बाद डॉ. ब्रायसन के द्वारा डॉ. वैभव को शोधकार्य (प्रोजेक्ट) के लिए दक्षिण कोलंबिया बुलाया जाता है । जब वहाँ पर डॉ. वैभव की थीसिस सेमिनार में पढ़े जाने वाले शोधपत्रों में शामिल होती है, तब जो आम भारतीय हैं वे अपने देश पर गर्व करते हैं ।

पात्र:

कहानी का मुख्य पात्र डॉ. वैभव है जो किडनी पर शोध करता है, जिससे राधाबाई के बेटे को भी उसका लाभ मिलता है । परंतु जब वह अमेरिका से भारत लौटता है तो उसने भारत में हर जगह संभव नौकरी के लिए अप्लाय किया था, परंतु हर जगह 'नो' का ही उत्तर मिला था । फिर उसे डॉ. ब्रायसन के अंडर में दक्षिण कोलंबिया में मार्गदर्शन के तहत कार्य (प्रोजेक्ट) प्राप्त होता है और उसके इस कार्य से भारत तथा अमेरिका में रहने वाले लोग भी गर्व महसूस करते हैं। गौण पात्र के रूप में डॉ. ब्रायसन का उल्लेख किया गया है ।

संवाद :

कहानी के संवाद वैज्ञानिक भाषा को ध्यान में रखते हुए उनकी रचना की गई है । वर्णनात्मक भाषा का प्रयोग हुआ है । संवाद कहीं-कहीं पर देखने को मिलते हैं । दो संस्कृतियों को ध्यान में रखते हुए संवाद अंग्रेजी, हिंदी रचित हैं ।

वातावरण:

कहानी के परिवेश में भारत और अमेरिका के परिवेशों की चर्चा की गई है। इस कहानी में दो संस्कृतियों की भाषा, रहन-सहन, खान-पान, भाषा का कितना अंतर है यह दिखाया गया है ।

भाषा शैली :

भाषा शैली हिंदी की सहज और सरल भाषा का प्रयोग किया गया है । भाषा में एक तरह का प्रभाव पाठकों के मन पर डालते देखा जा सकता है । दो देशों की संस्कृति की बात हुई है इसलिए अंग्रेजी का भी प्रयोग हुआ है ।

उद्देश्य :

कहानी का उद्देश्य दो देशों की संस्कृति का अलग-अलग परिचय देना है । कैसे दो देशों की संस्कृतियाँ हर मामले में एक दूसरे से भिन्न हैं । सामान्य मानुष को भी अपने स्वयं के देश, संस्कृति पर कितना गर्व होता है यह दर्शाया गया है ।

शहर की सबसे दर्दनाक खबर:

इस कहानी का आधार शहर में चन्द्रा टावर में निवास करने वाले एक मुस्लिम परिवार से संबंधित है । इस कहानी का मुख्य पात्र कमाल साहब हैं जो अपने परिवार के साथ चन्द्रा टावर के सत्रह नंबर के फ्लैट में रहते हैं । उनके परिवार में उनकी पत्नी रुकेया और बेटा शौकत हैं । इस टावर का माहौल सबसे अलग है । यहाँ निवास करने वाले लोग आपस में मिल-जुलकर रहते हैं । यहाँ सभी जाति-धर्म के लोग आपस में अच्छे संबंध और व्यवहार रखते हैं । इस महानगर के उच्च वर्ग इस चन्द्रा टॉवर में निवास करते हैं । यहाँ हर त्यौहार को मिल-जुलकर मनाते हैं तथा एक-दूसरे के साथ प्रेम से रहते हैं । मगर शहर में

जब दंगों की शुरुआत होती है तब यहाँ निवास करने वाले लोगों का सुख-चैन खो जाता है। चन्द्रा टॉवर में रहने वाले कमाल केपरिवार की मदद इस टॉवर में रहने वाले लोग करते हैं । उन्हें दंगों से बचाने के लिए कमाल के परिवार की सहायता करने के लिए कमाल के परिवार का नाम तक बदल दिया जाता है । जान बचाने के लिए कमाल के परिवार को परिस्थिति से समझौता करना पड़ता है । इसके एवज में कमाल की बीवी को बिंदी तक लगानी पड़ती है । इस कहानी में सूर्यबाला ने भारत में होने वाले दंगों का जीवंत चित्रण किया है । कैसे भारत जैसे बिनसांप्रदायिक देश में धर्म के नाम पर दंगे करवाये जाते हैं जिससे नागरिकों के जान-माल का बेहद नुकसान होता है । इन दंगों के मूल में केवल धर्म को केंद्रस्थान पर रखा जाता है । धर्म के नाम पर लोग एक दूसरे के खून के प्यासे हो जाते हैं ।

पात्र :

कहानी का मुख्य पात्र कमाल साहब हैं जो साधन संपन्न परिवार से हैं और शहर के पॉश इलाके में चन्द्रा नामक टावर में परिवार के साथ रहते हैं । इस टॉवर में ऐसे लोग हैं जिनसे हमें संपूर्ण भारत का दर्शन हो जाता है । विविधता में एकता देखी जा सकती है । पर जब शहर में दंगे भड़क उठते हैं तब कमाल के परिवार की जान बचाने के लिए चन्द्रा टावर के लोग ही कमाल के परिवार की सहायता करते हैं । इसके लिए नकली नेम प्लेट और नकली नाम धारण टॉवर में रहना पड़ता है ।

गौण पात्रों में कमाल का बेटा और पत्नी हैं ।

संवाद :

कहानी के संवाद छोटे और बड़े रूप में देखे जा सकते हैं । पेश हैं कहानी के कुछ **संवाद-**

कहानी के संवाद भारत में होने वाले सांप्रदायिक दंगों से संबंधित हैं जो भारत में धर्म के नाम पर होने वाले जान-माल, संपत्ति की हानि को दर्शाते हैं ।

"लेकिन उखड़ी नेम प्लेट देखकर तो शक-सुबहे की गुंजाइश ज्यादा जोर पकड़ती है। इसलिए अच्छा हो उनके नाम से मिलती-जुलती किसी फर्जी नाम की प्लेट लगा दी जाए।"

वातावरण:

कहानी का वातावरण देश में हो रहे दंगे-फसादों का है । कैसे धर्म के नाम पर दंगे होते हैं जिससे मनुष्य जाति को जान-माल का नुकसान उठाना पड़ता है ।

भाषा शैली:

कहानी के सभी पात्र शिक्षित हैं । इसलिए शुद्ध भाषा का प्रयोग करते हैं । कहानी में अंग्रेजी के शब्द और वाक्य भी देखे जा सकते हैं । अपनी सहज और सरल भाषा के जरिए सूर्यबाला ने भारत की धार्मिक परिस्थिति का चित्रण किया है।

उद्देश्य :

जब देश में धर्म के नाम पर दंगे फसाद होते हैं तब मुख्य जाति के रूप में हिन्दू और मुस्लिम हैं । और इन लोगों के बीच धर्म ही मुख्य कारण है दंगों का और इसलिए दोनों धर्मों के लोग अपने आप को दोनों के बीच असुरक्षित महसूस करते हैं।

तिलिस्म:

'तिलिस्म' कहानी एक माँ और उसकी पाँच साल की बेटी की है । यह एक मनोवैज्ञानिक धरातल पर आधारित कहानी है । यह कहानी एक माँ की है जो अपनी पाँच साल की छोटी बेटी की चिंता करती है । बेटी की देखभाल करती है । देखा जाए तो यह एक आत्मीयता और लगाव, संबंधों की कहानी है । हम आमतौर पर देखते हैं कि जब किसी के घर में बच्चे का जन्म होता है तो सारा घर खुशियों से भर जाता है और घर का वातावरण आनंदित हो जाता है । एक बच्चे के घर में आगमन से घर के लोगों के स्वभाव में भी बदलाव आ जाता है । बस

उसी प्रकार से इस कहानी में माँ अपनी छोटी लड़की के आने से कितना खुश महसूस करती है और उसको अपने बेटी के भविष्य की चिंता होती है । इस कहानी में घर में बच्चे के आने से जो माहौल घर में बनता है उसे सूर्यबाला ने अपने शब्दों में व्यक्त किया है । बच्चे किसी तिलिस्म से कम नहीं हैं । बस वे परिवार में आने से घर में तिलिस्म शक्ति का अनुभव होता है ।

पात्र:

कहानी का मुख्य पात्र माँ है । कैसे माँ अपनी पाँच साल की बेटी पर अपना निश्छल, कोमल प्यार लुटाती है । उसका दिन-रात ख्याल रखती है । उसको जरा भी तकलीफ में नहीं देख सकती । बच्ची के आ जाने से माँ को एक तिलिस्मी शक्ति मिल गई हो ऐसा लगता है। पूरे घर और परिवार के सदस्यों में आनंद उत्साह भरा रहता है ।

गौण पात्रों में पार्वती, बेटे के पिता आदि पात्रों का सूर्यबाला ने कहानी में उल्लेख किया है।

संवाद:

कहानी के संवाद पात्रानुकूल हैं और माँ-बेटी के निश्छल प्रेम को दर्शाते संवादो की रचना की गई है । संवादों के माध्यम से ममत्व के भाव को प्रकट किया गया है । बच्चों की भाषा का भी ध्यान रखा गया है ।

वातावरण:

कहानी का वातावरण महानगरीय संस्कृति से जुड़ा हुआ है और एक माँ के ममत्व को दर्शाने के लिए पारिवारिक परिवेश को दर्शाया गया है ।

भाषा शैली :

कहानी की भाषा सुंदर और सरल है । मानव मन की भावनाओं को व्यक्त करने वाली भाषा का प्रयोग किया है । इस कहानी मे मनोवैज्ञानिक और मन पर प्रभाव डालने वाली भाषा का प्रयोग किया है । इस कहानी में मनुष्य की मार्मिक भावनाओं को दर्शाया है।

उद्देश्य :

कहानी का उद्देश्य वर्तमान पीढ़ी और आनेवाली पीढ़ी के संबंधों को दर्शाना है । कैसे एक माँ अपने बच्चे के भविष्य को लेकर चिंतित रहती है यह हमारी भारतीय नारी के ममत्व, उसके त्याग की कहानी है जो सूर्यबाला ने मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत की है ।

दादी और रिमोट :

'दादी और रिमोट' यह गाँव में निवास करनेवाली एक बुढ़ी दादी की कहानी है जो गाँव में रहती है तथा गाँव की संस्कृति को, संस्कारों को अपने साथ लेकर चलती है । उसका बेटा शहर में रहता है अपने परिवार के साथ । गाँव की बुढ़ी दादी को बेटा शहर रहने के लिए बुला लेता है । जब दादी गाँव से शहर आती है तो वह शहरी जीवन से बिलकुल अनजान है । पर शहर में आने के पश्चात उसे पता चलता है कि शहर के परिवारों में कोई सदस्य बेकार नहीं बैठता । वैसे ही बुढ़ी दादी के बेटे के परिवार में भी दिन भर सब अपने काम में लगे रहते थे । पोता और पोती पाठशाला चले जाते थे। बेटा ऑफिस चला जाता था और बहु कॉलेज में पढ़ाने चली जाती थी । दादी पूरा दिन घर पर अकेली रहती थी । घर में एक टी.वी. था। अब बुढ़ी दादी का रिश्ता टी.वी. के साथ बन गया है । अब वह टी.वी. का रिमोट हाथ में लेकर अपना पूरा दिन टी.वी. देखने और मनोरंजन करने में व्यतीत करती है।

पात्र :

कहानी की नायिका के रूप में सूर्यबाला ने बुढ़ी दादी को बताया है । गाँव की बुढ़ी दादी गाँव का परिवेश, संस्कार आदि का पालन करने वाली है । मगर जैसे ही दादी अपने बेटे के घर शहर आती है उनकी दिनचर्या में बदलाव आ जाता है । बेटा नौकरी चला जाता है, पोता-पोती स्कूल चले जाते हैं । बहु कॉलेज

पढ़ाने चली जाती है । अब दादी अपने नये साथी टी.वी. के साथ अपना पूरा दिन रिमोट थामे रहकर व्यतीत करती है ।

गौण पात्रों के रूप में बेटा, बहु, पोता-पोती और नौकर जंगबहादुर का उल्लेख हुआ है ।

संवाद:

कहानी के संवाद पाठकों में कुतुहल उत्पन्न करते हैं । कहानी के संवाद पात्रों को अनुकूल हो आते हैं । संवादों में दादी के शुरुआत से लेकर अंत तक व्यवहार में कैसा परिवर्तन आता है उसे संवादों के माध्यम से उजागर किया है । कहानी के संवाद आम बोलचाल की भाषा में हैं जो आसानी से पाठकों के मन को छू जाते हैं जिससे पाठक कहानी के साथ आत्मसात कर पाता है ।

वातावरण:

गाँव के परिवेश का वर्णन हुआ है । फिर बाद में कहानी शहरी परिवेश में परिवर्तित होती है। महानगरीय जीवनशैली का जीवनयापन दर्शाया गया है ।

भाषा शैली :

भाषा शैली देखें तो गाँव की भाषा का उपयोग है जो अशुद्ध शब्दों के प्रयोग करते देखा जा सकता है । बाद में शहरी भाषा का उपयोग देखा जा सकता है ।

उद्देश्य : कहानी का उद्देश्य गाँव और शहर- दो भिन्न परिवेश की जीवन शैली में क्या अंतर है यह दर्शाया गया है । गाँव भारतीय संस्कृति को लेकर चलते हैं और शहर पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण करते पाए जाते हैं ।

क्रॉसिंग :

कहानी 'क्रॉसिंग' सूर्यबाला द्वारा रचित है । क्रॉसिंग कहानी एक रहस्यमयी कहानी है। शुरु से अंत तक कहानी में सस्पेन्स बना रहता है । जैसे ही रहस्य से पर्दा उठता है, कहानी खत्म हो जाती है । यह एक ऐसी स्त्री की कहानी है

जिसका पति रोहणी के पति से अनजान है। ऑफिस का काम समाप्त करने के बाद हर चार दिन के बाद एक पुरुष साड़ी पहनकर सिग्नल के क्रॉसिंग पर खड़ा हो जाता है । कभी फूलोंवाली साड़ी पहनकर भी यह साड़ीवाली महिला नज़र आ जाती है । यह देखकर ऐसा लगता है एक पुरुष स्त्री की वेशभूषा करता है और अपने आप में परेशान रहता है । परंतु एक दिन इस रहस्य से पर्दा उठ ही जाता है । दफ्तर का एक वर्कर दामले इस बात का पता लगा लेता है कि हर चार दिन के बाद 'जैक एंडरसन' स्त्री का वेश धारण कर 'क्रॉसिंग' के सिग्नल पर खड़ा हो जाता है । कहानी का अंत सूर्यबाला ने बहुत ही रहस्यमय रूप से उजागर किया है । वह बहुत ही सुंदर स्त्री है जिसका नाम है जैक एंडरसन । कहानी में सूर्यबाला ने बिना नामवाली स्त्री के माध्यम से अतीत की कई घटनाओं का उल्लेख किया है । इसमें एक शादीशुदा व्यक्ति दूसरी स्त्री को किस प्रकार की नज़र से देखता है, क्या विचार करता है इसका चित्रण सूर्यबाला ने किया है ।

पात्र :

कहानी का मुख्य पात्र एक स्त्री और पुरुष है । यह कहानी जेक एंडरसन की है। कैसे वह हर चार दिनों के बाद स्त्री का वेश धारण करके क्रॉसिंग सिग्नल पर एक सुंदर हसमुखी स्त्री बनकर टहलता है । यह कहानी इस पात्र को शुरु से अंत तक सस्पेन्स बनाए रखने के लिए सूर्यबाला को प्रेरित करती है ।

गौण पात्रों में रोहिणी है जो अपने पति की तन-मन-धन से सेवा करती है । एक शिक्षित और सुलझी हुई स्त्री है ।

संवाद:

सूर्यबाला ने कहानी के संवाद छोटे-बड़े दोनों रूपों में प्रस्तुत किये हैं । संवादों के माध्यम से सूर्यबाला ने तृतीयपंथी समाज के भावों को भी उजागर किया है जो सीधे पाठक के साथ आत्मसाथ करते हैं ।

वातावरण:

कहानी का वातावरण घर का परिवेश है । महानगरीय वातावरण और सिग्नल पर होनेवाली गतिविधियों का अंकन किया गया है । और आते-जाते यात्रियों का चित्रदृश्य किया गया है ।

भाषा शैली:

कहानी क भाषा शैली सुंदर और सरल है । सभी पात्र पढ़े-लिखे होने के कारण भाषा का शुद्ध रूप देखने को मिलता है । कहीं-कहीं अंग्रेजी भाषा का भी उपयोग होता देखा जा सकता है ।

उद्देश्य :

इस कहानी में एक शादी-शुदा पुरुष का दूसरी अन्य स्त्रियों के प्रति कैसा व्यवहार और दृष्टि होती है इस कहानी के माध्यम से सूर्यबाला ने दर्शाया है । जिसमें सूर्यबाला को सस्पेन्स बनाते हुए सफलता प्राप्त हुई है । और जब सस्पेन्स से पर्दा उठता है तो वहाँ पर ही कहानी खत्म हो जाती है । यह एक रहस्यमय बनाए रखने वाली कहानी के अंतर्गत आती है जो अंत तक पाठकों को जकड़े रखती है ।

पूर्णाहूति :

'पूर्णाहूति' कहानी भारत की आज़ादी के समय की है । आज़ादी के समय जो परिवेश था उसे इस कहानी में सूर्यबाला ने दर्शाया है । इस कहानी का मुख्य पात्र मास्टरजी हैं । मास्टर जी की माँ मास्टर से कहती है कि मास्टरजी का जन्म तब हुआ था जब भारत आज़ाद हुआ था । मास्टर जी अपने उसूलों के पक्के और ईमानदार इंसान थे । और हमेशा शिक्षा को महत्त्व देते थे। इसलिए उन्होंने अपनी बेटियों को भी अच्छी तरह से शिक्षा प्रदान की थी । उन्होंने अपने बलबूते पर बेटियों को पढ़ाया-लिखाया था । मास्टरजी समाज में चल रहे दहेज प्रथा के खिलाफ थे । परंतु जब बेटियों की शादी की बारी आयी तब मास्टरजी को पता

चला कि अपने सिद्धांतों और असल जिंदगी में कितना अंतर है । बेटी की शादी के समय जो समस्या होती थी अब वही समस्या बेटी की पूर्णाहूति से समाप्त हो गई । आज़ादी के बाद कई लोग गाँव से शहर की ओर रहने चले गये थे । साथ में अपनी संस्कृति, भाषा भी ले गये थे और इस वजह से ये लोग एक दूसरे के संपर्क में आए । इस कहानी में सूर्यबाला ने मास्टरजी की बेटी की विदाई जब हो रही थी तब जो समस्या खड़ी हुई उसका चित्रण किया है ।

पात्र :

कहानी के मुख्य नायक मास्टरजी हैं जो ईमानदार और अपने उसूलों पर चलने वाले हैं । उन्हें अपनी बेटी के विवाह के समय पता चला कि मनुष्य की सोच और करनी में कितना अंतर है । क्योंकि मास्टरजी दहेज प्रथा के बिल्कुल खिलाफ थे परंतु बेटी के विवाह में बिदाई के समय ही बेटी की पूर्णाहूति हो गई । मास्टरजी का पात्र पूरी कहानी के केंद्र स्थान पर है ।

गौण पात्रों में मास्टरजी की तीन बेटियाँ हैं ।

संवाद :

कहानी के संवाद वर्णनात्मक शैली में लिखे गये हैं जो पाठकों में जिज्ञासा उत्पन्न करते हैं । कहानी में संवादों के माध्यम से सूर्यबाला ने दहेज प्रथा के खिलाफ अपनी आवाज़ को बुलंद किया है । संवादों में एक पिता का दर्द, प्रेम देखने को मिलता है । संवादों के माध्यम से हम देख सकते हैं कि आखिर में कैसे एक पिता अपने उसूलों की पूर्णाहूति कर देता है । कहानी के संवाद धार्मिक हैं ।

वातावरण:

कहानी का परिवेश आज़ादी के समय का है । जब भारत देश आज़ाद हुआ था उस समय का चित्रण और माहौल सूर्यबाला ने दर्शाया है । उस समय के शादी के रीति-रिवाजों, प्रथाओं का चित्रण सूर्यबाला ने दृश्यात्मक रुप से किया है।

उद्देश्य :

कहानी 'पूर्णाहूति' के माध्यम से सूर्यबाला ने दहेजप्रथा का पूर्ण रूप से विरोध किया है। कैसे यह प्रथा समाज में दीमक की तरह फैल गई है जिसमें समाज की कितनी बेटियों की पूर्णाहूति हो जाती है ।

जश्न:

'जश्न' कहानी ऐसे परिवार की है जो मिल-जुलकर अपने दादा-दादी की देखभाल करते हैं, उन्हें इज्जत और सम्मान देते हैं, उनका बड़े प्यार से घर में ध्यान रखा जाता है । कहानी के केन्द्र स्थान में दादा-दादी हैं । यह कहानी ऐसे परिवार की है जो परिवार की तीन पीढ़ियों का प्रतिनिधित्व करते हैं । इस घर में दादा-दादी की सेवा करने के लिए नौकर मृत्युंजय और नौकरानी जशोदा दोनों हैं। इनके अलावा परिवार में बहु-बेटा, पोता सब दादा-दादी की सेवा में लगे रहते हैं । ऐसा माहौल और दृश्य आज के आधुनिक युग में देखने में दुर्लभ है । क्योंकि आज ऐसा बहुत कम परिवारों में देखने को मिलता है । घर, परिवार का ऐसा माहौल हमारी भारतीय संस्कृति, संस्कार, आदर और सम्मान को दर्शाते हैं। जिस प्रकार परिवार में दादा-दादी को एक सम्मानजनक दृष्टि से रखा जाता है, वह आज संभव नहीं है । इस कहानी में सभी सदस्य दादा-दादी का ख्याल रखते हैं ।

पात्र:

कहानी के मुख्य पात्र दादा-दादी हैं जिनका परिवार में बहु-बेटा, पोते के द्वारा बहुत ही ध्यान रखा जाता है । उनकी सारी जरुरतों को पूरा किया जाता है । यहाँ तक कि नौकर मृत्युंजय और नौकरानी जशोदा भी इस काम को बड़ी सहजता से करते हैं ।

गौण पात्रों के रूप में मृत्युंजय, बेटा-बहु, पोता, नौकरानी जशोदा हैं जो कहानी को आगे बढ़ाने में अपना सहयोग प्रदान करते हैं ।

संवाद :

जश्न कहानी के संवाद पारिवारिक संवादों के आधार पर रचे गए हैं । सूर्यबाला ने संवादों के माध्यम से पारिवारिक भावनाओं को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है ।

वातावरण:

कहानी आज के आधुनिक वातावरण को केन्द्र में रखकर लिखी गई है जिसमें भारत की संस्कृति के दर्शन होते हैं । दादा-दादी की भाषा अशुद्ध रूप की है। नौकर-नौकरानी की भाषा में भी अंतर है। नई पीढ़ी में शालीनी बहु और बेटे की भाषा अलग है ।

उद्देश्य :

कहानी का उद्देश्य तीनों पीढ़ियों के बीच का सामंजस्य दर्शाना है । आज के युग में ऐसा भाव और संस्कृति के दर्शन कम ही होते हैं । इस पारिवारिक कहानी के द्वारा सूर्यबाला ने इस पारिवारिक दृष्य को दृष्टिगत रूप से वर्णन किया है ।

क्या मालूम:

कहानी की मुख्य नायिका मधु है । उसकी शादी हो चुकी है । इस कहानी में सूर्यबाला ने मधु का विविध रूप में चरित्र-चित्रण किया है । मधु के पिता का देहांत हो चुका है । वह अपनी विधवा माँ के साथ रहती है । अब यह परिस्थिति है कि जिस हवेली में मधु अपने माँ-बाबूजी के साथ रहती थी अब वह हवेली को बेचना चाहते हैं । यहीं से 'क्या मालूम' कहानी का आरंभ होता है । कहानी में मधु के परिवार वालों ने उसकी आज़ादी पर पाबंदियाँ लगा रखी है क्योंकि मधु एक शादी में जाती है तब वह वहाँ जाकर नाचती-गाती है जो परिवार को बिल्कुल पसंद नहीं आता । उस पर पाबंदी लगाई जाती है । सारी कहानी मधु के आस-पास ही घुमती नज़र आती है। मधु इस कहानी की मुख्य नायिका है जो अपने जीवन का आनंद लेना चाहती है परंतु उस पर रोक लगाई जाती है ।

पात्र :

मधु इस कहानी का मुख्य पात्र है जो जवान और शादीशुदा है । वह अपने बाबूजी की मृत्यु के बाद अपनी माँ के साथ ही रहती है । अब जिस हवेली में वो रहते थे उस हवेली को बेचने का निर्णय लिया गया है । मधु एक आज़ाद खयालों की लड़की है जिसको गाना, नाचना और खुश रहना पसंद है । परंतु उसकी यही आदतें उसके परिवार को पसंद नहीं हैं।

अन्य गौण पात्रों में अम्मू, मंजुला भाभी, पिल्लू, माधुरी, मिश्रा, सुनयना, बीबी, ताई चाची आदि पात्रों का उल्लेख किया गया है ।

संवाद :

कहानी के संवाद प्रभावशाली और जिज्ञासात्मक हैं जो पाठकों में एक प्रेरणा जागृत करते हैं । कहानी के संवादों में स्त्री की भावनाओं को दर्शाया गया है जो समाज के बंधनों से आज़ादी चाहती है और संवादों के माध्यम से अपने मनोभाव को प्रस्तुत किया है ।

वातावरण:

कहानी का वातावरण रुढ़िवादी, पुरानी सोच वाला और परंपरा के नाम पर रोक-थाम करने वाला है । यह कथा महानगरीय परिवेश में जन्म लेती है ।

भाषा शैली :

कहानी के पात्र शिक्षित होने के कारण शुद्ध भाषा का प्रयोग करते हैं । कहानी में विवाह के गीत होने के कारण गायनशैली की भाषा का भी उपयोग किया गया है ।

उद्देश्य :

कहानी का उद्देश्य मधु के पात्र के द्वारा समाज और परिवार में स्त्री की दशा और दिशा को उजागर करना है । मधु का पात्र समाज में नारी की समस्याओं को दर्शाने का कार्य करता है ।

मातम :

'मातम' कहानी एक वैज्ञानिक (साइंटिस्ट) की है जो अपनी पत्नी के साथ रहते हैं, जो निःसंतान हैं मगर मुंडू उनका पूरा खयाल रखता है । यह एक पारिवारिक कहानी है । साइंटिस्ट शुरु से ही अनुशासन-प्रिय और अपने आप में रहने वाले थे । बडे प्यार से वह अपनी पत्नी के साथ रहा करते थे मगर उन्हें केमिकल के विकिरणों से इन्फेक्शन हो गया था। लोग हमेशा उनसे दूर रहना पसंद करते थे । उनकी पत्नी को भी अर्थराइटीस की बीमारी थी । मगर मुंडू बड़ा हसमुख था और मुंडु हँसी-खुशी से इन दोनों का ख्याल रखा करता था । एक दिन साइन्टिस्ट की मौत हो जाती है और पूरे शहर भर में साइन्टिस्ट की मृत्यु की चर्चा जोर पकड़ती है । साइन्टिस्ट की मौत से उनकी पत्नी को सांत्वना देने के लिए साइन्टिस्ट के घर लोगों का तांता लग गया था । सब उनकी पत्नी को समझाते रहते हैं । सभी अखबारों में उनकी मौत की खबर छपी थी । बाहर के लोगों ने घर में आकर जमावड़ा कर लिया था । सब लोग साइन्टिस्ट की पत्नी को अलग-अलग रीति-रिवाजों, क्या करना और क्या नहीं करना चाहिए बताते रहते हैं। कैसे दान करना चाहिए, बताते हैं । अंत में साइन्टिस्ट की पत्नी कंगाल हो जाती है और उसकी दशा करुणामय और दयनी अवस्था में चली जाती है । सारी कहानी साइन्टिस्ट के आगे-पीछे ही घूमती रहती है । यह कहानी वर्णनात्मक शैली में लिखी गई है ।

पात्र :

कहानी का मुख्य पात्र साइन्टिस्ट है जो काफी रिजर्व है । अपने शोधकार्य में ही लगा रहता है । उनकी देखभाल करने के लिए मुंडु है । उनकी धर्मपत्नी को पहले से ही अर्थराइटीस की बीमारी है । साइन्टिस्ट को केमिकल के विकिरणों से इन्फेक्शन हो जाता है और उनकी मौत हो जाती है जिसके लिए सब लोग उनकी मौत का 'मातम' मनाने उनके घर आते हैं ।

कहानी में गौण पात्रों में साइन्टिस्ट की पत्नी और मुंडू है जो कहानी को आगे बढ़ाने में सहयोग करते हैं ।

संवाद :

वर्णनात्मक शैली में कहानी है इसलिए संवादों के लिए अधिक स्थान नहीं है । कहानी में छोटे संवादों को स्थान दिया गया है जो आज के आधुनिक जीवन में मनुष्य की विचारधारा को प्रस्तुत करते हैं ।

वातावरण:

कहानी का वातावरण भारतीय संस्कृति का परिवेश दर्शाया गया है । कहानी महानगरीय परिवेश से शुरु होती है ।

भाषा शैली :

कहानी की भाषा वर्णनात्मक शैली में है । सभी पात्र शिक्षित होने से भाषा शुद्ध है। सूर्यबाला ने सहज और सरल भाषा में कहानी को उजागर किया है ।

उद्देश्य :

बदलते परिवेश में कैसे मानवता का ह्रास होता है यह इस कहानी से हमें जानने को मिलता है । साइन्टिस्ट की पत्नी को सांत्वना देने और कैसे दान करना बताने के कारण लोग साइन्टिस्ट की बीवी को कैसे कंगाल बना देते हैं, जिससे भावनात्मक स्तर पर बीवी की हालत अत्यंत दयनीय हो जाती है ।

चिड़िया जैसी माँ

सूर्यबाला द्वारा रचित यह एक परिवार में जन्म लेने वाली कथा है। कहानी का केंद्रस्थान माँ है और उनकी बहु है । कहानी का मुख्य पात्र माँ है । सारी कहानी माँ के आस-पास घुमती है । कहानी का आरंभ ही माँ से होता है । शादी से पूर्व हर माँ का अपने बेटे पर पूर्ण अधिकार होता है । परंतु जब माँ-बाप बेटे का विवाह करवा देते हैं तब बेटे का प्यार दो लोगों के बीच बँट जाता है । एक तरफ माँ और दूसरी तरफ अपनी पत्नी। क्योंकि विवाह के पश्चात भारतीय संस्कृति को अगर हम ध्यान में रखें तो पत्नी का अधिकार माँ से अधिक माना गया है । इस कहानी के माध्यम से सूर्यबाला ने ऐसे ही बेटे का चित्रण किया है जिसमें

माँ और पत्नी के बीच फँसे बेटे की दुर्दशा बताई है और पत्र द्वारा बताई है । अगर देखा जाए तो पेड़-पौधे, पशु-पक्षी सभी अपने बच्चों का पालन-पोषण करते हैं, उन्हें सहेज कर रखते हैं । बस माँ भी उसी प्रकृति का एक अंग है । इस कहानी में मधुलिका के विषय में बताया गया है कि वह एक विश्व-विद्यालय में जॉब करती है । परंतु उसको अपने घर में सास होना बिल्कुल पसंद नहीं है और सास बहु के बीच हमेशा संघर्ष होता रहता है । भारतीय संस्कृति में हम माँ-बेटी के रिश्ते की काफी सराहना करते हैं परंतु वहीं सास-बहु में जो संघर्ष रहता है वह हम भूल जाते हैं और इसी संघर्ष को पति और बेटा दोनों तरफ से झेलते रहते हैं ।

पात्र :

कहानी का मुख्य पात्र माँ है जो अपने बेटे का लालन-पालन बड़े प्यार से करती है परंतु जब बेटे का विवाह हो जाता है और बहु मधुलिका आ जाती है तब सास और बहु के बीच जो संघर्ष चलता रहता है उसे सूर्यबाला ने इस कहानी के पत्र के माध्यम से बताया है । कैसे एक बेटा और पति इस सास-बहु के संघर्ष में पिसता जाता है ।

गौण पात्रों में मधुलिका, बेटा आदि हैं जो कहानी में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करते हैं ।

वातावरण :

कहानी का वातावरण महानगरीय है । एक पारिवारिक माहौल में कहानी जन्म लेती है जो पाठकों के मन पर प्रभाव डालती है ।

संवाद :

कहानी के संवाद छोटे-बड़े हैं जो पाठकों के मन पर प्रभाव डालते हैं । संवादों के माध्यम से परिवार में सास-बहू के संबंधों को उजागर किया है, जो आज के पारिवारिक संघर्ष को दर्शाते हैं ।

भाषा शैली :

कहानी की भाषा शैली वर्णनात्मक शैली में प्रस्तुत की है । पात्रों के अनुकूल है और प्रसंग को रास आने वाली है । सहज और सरल शब्दों में कहानी को लेखिका ने प्रस्तुत किया है।

उद्देश्य :

भारतीय संस्कृति में सास-बहु के संघर्षों को उजागर करना और माँ और पत्नी के बीच भावनात्मक स्तर पर संघर्ष करने वाले पुरुष की मानसिक स्थिति को सूर्यबाला ने दर्शाया है ।

भुक्कड़ की औलाद:

'भुक्कड़ की औलाद' कहानी सूर्यबाला द्वारा रचित पाँच लंबी कहानियों के संग्रह में से एक है जो अन्य कहानियों की तुलना में बड़ी है जिसमें समाज की कई समस्याओं को लेखिका ने पात्रों, संवादों, चरित्र चित्रण के माध्यम से चित्रित किया है ।

आज के आधुनिक जीवन में शिक्षित बेरोजगारी इतनी बढ़ चुकी है कि रोजगार पाने मात्र से लोग अपने परिवार से शारीरिक और मानसिक रूप से दूर हो जाते हैं । रोजगारी पाने के लिए एक गाँव से दूसरे शहर लोगों का आना-जाना बढ़ गया है । परिवार का लालन-पालन करने के लिए लोगों को अपना परिवार छोड़कर दूसरे शहरों में जहाँ उनका अपना कोई नहीं होता वहाँ रहकर गुजर-बसर करना पड़ता है । इस कहानी का पात्र बैजनाथ भी ऐसा ही है । वह अपने परिवार से मिलने की कामना करता है पर पैसों की कमी और ज्यादा पैसा कमाने के लालच में उनसे मिलने से रोक लेती है । वह द्विविधा में ही अपने परिवार से दो साल तक दूर रहता है । इस कहानी में परिवार को अधिक महत्त्व न देकर रोजगारी को अधिक महत्त्व दिया गया है जिसके कारण बैजनाथ के जीवन में एक करुणामय घटना घटित होती है ।

पात्र :

कहानी का मुख्य नायक बैजनाथ है जो रोजगारी की तलाश में गाँव से शहर की ओर पलायन करता है और शहर में रोजगारी प्राप्त करता है और रोजगारी कमाने के चक्कर में अपने परिवार से, अपने माता-पिता, पत्नी से दो साल से नहीं मिला है । परंतु जब गाँव में भीषण बाढ़ आ जाती है । तब उस बाढ़ में बैजनाथ क पत्नी और उसकी भैंस पानी के तेज प्रवाह में बह जाती है । बैजनाथ को अपनी पत्नी की नहीं परंतु अपनी भैंस के लिए अधिक जान जलती है क्योंकि उसके परिवार के लिए भैंस एकमात्र आर्थिक सहाय का सहारा थी, अब वह सहारा भी उनके जीवन से छीन गया है । अब परिवार बिलकुल निराधार हो गया है।

गौण पात्रों में लेखिका स्वयं, बैजनाथ की माँ, पति सुभाष, बच्चे, माता-पिता, पत्नी, वर्कर आदि गौण पात्र कथानक को आगे बढ़ाने में अपना सहयोग प्रदान करते हैं ।

संवाद :

कहानी के संवाद गाँव की भाषा और शहरी भाषा दोनों का मिश्रण करके प्रस्तुत किये गये हैं जो पाठकों में जिज्ञासा उत्पन्न करते हैं और अंत तक पाठकों को बाँधे रखते हैं ।

"कौन? बैजनाथ हे रे? इधर तो आ! देख, यही है बिटिया इन्हीं के बारे में तुझसे कह रही थी।" [99]

'नौस्कार, बहिनजी!'

"गोया आपके इस हृदय परिवर्तन का सेहरा इस बैजनाथ के सिर बाँधना था।" मैंने कटाक्ष किया।[100]

"और हाँ, तू जब से आया है, यही झिल्ने से कपड़े पहने रहता है । एकाध जोड़े नये कपड़े बनवा ले। पैसे न हो तो संकोच मत करना, मैं दे दूँगी ।" [101]

वातावरण:

कहानी का देशकाल पहले गाँव का देहाती परिवेश है, बाद में शहरी परिवेश का परिदृश्य दर्शाया गया है । दोनों गाँव और शहरी परिवेशों का संगम है यह कहानी और इसी परिवेश के सहारे लेखिका ने गाँव की समस्याओं और शहर की समस्याओं को उजागर करने में सफलता प्राप्त की है ।

भाषा शैली :

लेखिका ने भाषा शैली में वर्णनात्मक शैली, उसके बाद संवाद शैली का उपयोग किया है । इस दरम्यान हमें गाँव की देहाती भाषा (अशुद्ध) का रूप भी देखने को मिलता है। शहरी पात्र पढ़े-लिखे होने के कारण भाषा शुद्ध है ।

देहाती भाषा का उच्चारण देखिए। नमस्कार-नौस्कार, बहन-बहिनजी, बेटी-बिटिया आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है । लेखिका के भाषा में कटाक्ष और व्यंग्य औतिक्ष्ण भाषा का भी समावेश हुआ है ।

उद्देश्य :

कहानी के माध्यम से लेखिका ने सर्वप्रथम गाँव की समस्याओं को उजागर किया है। जैसे गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी, बाढ़ की समस्या और एक तरफ गाँव के देहाती लोगों का शहरी जीवनशैली के प्रति आकर्षण है । दूसरा शहर जाकर अपने परिवार के प्रति रितती भावनाएँ भी उजागर की हैं ।

और एक सत्य कथा:

इस कहानी के माध्यम से लेखिका ने स्वयं के आत्मकथा की अंशों का समावेश किया है। इस कहानी में लेखिका के जीवन, उनके परिवार के सदस्यों, माँ, भाईःबहन, शिक्षा, पढ़ाई करते हुए आयी दिक्कतों का समावेश किया है । इस कथा के माध्यम से लेखिका ने अन्य को साहित्य-सृजन की प्रेरणा प्रदान की है । अपने आत्मकथनों के द्वारा समाज के अन्य पहलुओं पर भी दृष्टि की है । इसमें लेखिका ने अपने रहने वाले घर परिवार का पारिवारिक चित्रण किया है । उनके पढ़ाई करते समय क्या-क्या समस्याओं का उन्होंने सामना किया, उनके परिवार

के साथ में भाई-बहनों के साथ, माता-पिता के साथ, पीएच.डी. गुरु के साथ कुछ यादों-संवादों का चित्रण स्वयं सूर्यबाला ने अपने शब्दों में किया है । यह कहानी सूर्यबाला के प्राथमिक जीवन का लेखा-जोखा पाठकों के सामने प्रस्तुत करती है जो एक सत्यकथा के रूप में लेखिका ने प्रकट की है । अपने परिवार में घटित घटनाओं को भी दर्शाया है ।

पात्र:

इस कहानी का मुख्य पात्र लेखिका स्वयं है । इस कथा को लेखिका की आत्मकथा के रूप में हम देख सकते हैं ।

गौण पात्रों के रूप में भाईःबहन, माता-पिता, पीएच.ड. गुरु, आदि के साथ जुड़े संस्मरणों को व्यक्त किया है ।

वातावरण:

प्रस्तुत कहानी मे लेखिका ने शहरी परिवेश का समावेश किया है । लेखिका ने अपनी सामाजिक, पारिवारिक जीवन शैली का उल्लेख किया है ।

भाषा शैली :

कहानी की भाषा शैली लेखिका की अपनी शुद्ध-सरल भाषा में है । इसमें अंग्रेजी भाषा और अपनी शहरी भाषा शैली का प्रयोग किया गया है । कथा में संवाद ना के बराबर हैं, इसलिए संवादों का समावेश नहीं किया गया है ।

उद्देश्य :

लेखिका का इस कहानी के माध्यम से अपने जीवन में आयी समस्याओं को पाठकों के समक्ष रखना तथा अपनी आत्मकथा को तथा मन के संवादों की भाषा को सीधे पाठकों के मन तक पहुँचाने का उद्देश्य है जिसमें लेखिका को पूर्ण रूप से सफलता प्राप्त हुई है ।

सूर्यबाला का कहानी संग्रह सन 2006 में प्रकाशित हुआ है । इस कहानी में ग्यारह कहानियों का संकलन किया गया है । इस कहानी की सभी कहानियाँ बड़ी मार्मिक, अत्यंत जीवंत और पाठकों में जिज्ञासा पैदा करने वाली हैं। सूर्यबाला

द्वारा रचित इन्हीं कहानियों का तत्वों के आधार पर मूल्यांकन किया जायेगा और इनका उद्देश्य भी स्पष्ट होगा ।

इस कहानी संग्रह की प्रथम कहानी है 'तोहफा', जिसका कहानी के तत्वों को ध्यान में रखते हुए मूल्यांकन करने का मैं प्रयत्न करुँगी ।

तोहफा:

'तोहफा' कहानी बाल मनोविज्ञान को ध्यान में रखते हुए सूर्यबाला द्वारा रचित कहानी है। इस कहानी में बच्चे के माँ-बाप बच्चे की भावना को ना समझते हुए उसकी कोमल, नाजुक भावनाओं के साथ खिलवाड़ करते हैं अपने फायदे के लिए । यहाँ बबलू के पिता अपने मालिक चड्ढा साहब को अपने बेटे बबलू के जन्मदिन पर आमंत्रित करते हैं । जबकि बबलू कि इच्छा है कि वह अपना जन्मदिन अपने मित्रों के साथ ही रहकर मानाए। आखिर बबलू के सारे मित्र अपने-अपने घर चले जाते हैं क्योंकि केक काटने मे देरी कर दी गई थी । बबलू को सर चड्ढा साहब का इंतजार करने को कहा गया पर चड्ढा साहब तो शराब पीने में ही व्यस्त थे तो वह समय पर नहीं पहुँच पाये । बबलू की माँ ने बार-बार मि. चन्द्र को समझाने की कोशिश की पर वह अपनी बात से टस से मस नहीं हुए। आखिर में बबलू थककर सो जाता है, बिना केक काटे ही मेहमान भी चड्ढा साहब की राह देखकर परेशान हो गये हैं । आखिर में चड्ढा साहब आ जाते हैं जो शराब के नशे में धूत होते हैं । फिर भी मि. चन्द्र उसे इज्जत बख्शते हैं और अपने बेटे को भूल जाते हैं । शोभा से कहा जाता है कि बबलू को उठाकर ले आओ । शोभा बबलू को उसके पिता का वास्ता देकर ले आती है । आखिर में बबलू के साथ मि. चड्ढा बुरी तरह पेश आते हैं, बबलू को यह रास नहीं आता । बबलू उन पर मन ही मन गुस्सा करता है, उनकी इज्जत नहीं करता । यह देखकर मि. चन्द्रा बब्लू को गाल पर थप्पड़ मार देते हैं । कहानी में अपनी झूठी शान के लिए बच्चे

की भावना से खिलवाड़ करके बड़ों को मान-सम्मान देने की बात हो रही है, सिर्फ और सिर्फ अपनी झूठी शान रखने के लिए ।

पात्र :

कहानी के मुख्य पात्र के रूप में बबलू है जिसका जन्मदिन होता है परंतु उसके पिता केवल अपने साहब मि. चड्ढा की नज़रों में ऊँचा उठने के लिए बबलू के साथ बुरा बर्ताव कर बैठते हैं । बिना उसकी भावनाओं की कद्र किए हुए वह यह भूल जाते हैं कि आज उनके बेटे का जन्म दिन है । उनका मुख्य केन्द्र केवल मि. चड्ढा को खुश करना ही था । जिसके लिए वो बबलू के दिल को और भावनाओं को गहरी चोट पहुँचाते हैं और आखिर में मि. चड्ढा के कारण बबलू के गाल पर जोरदार चाँटा लगा देते हैं जिससे बबलू का अंतरमन आहत हो जाता है और उसका खुशी भरा दिन उदासी में बदल जाता है ।

गौण पात्रों के रूप में मि. चन्द्रा, मि. चड्ढा, शोभा, बबलू के मित्र और मेहमानों का उल्लेख किया गया है ।

संवाद :

कहानी के संवाद बाल मनोविज्ञान को ध्यान में रखकर लिखे गए हैं । पेश है 'तोहफा' के कुछ संवाद-

"लेकिन, मेरे सारे दोस्त तो एक-एक करके चले गए। सब पूछते थे, तू केक क्यों नहीं काटता, इत्ते सारे लोग तो आ गए?" और बबलू सँभलता-सँभलता भी रो पड़ा ।[102]

"बात हो गई न?" शोभा बात काटकर तुर्शी बोली, "तो अब जाकर बाहर बैठे मेहमानों से भी बात कर लो- कोई-कोई तो उठ चुके हैं ।"

"अरे, तुम हाथ मिलाना भी नई जानता?"

"बबलू..." मिस्टर चंद्रा आँखें तरेरकर कड़के थे ।[103]

वातावरण व देशकाल :

प्रस्तुत कहानी का वातावरण महानगरीय है । यह एक पारिवारिक कथा है जिसमें पारिवारिक माहौल को उजागर किया गया है । अपनी शान बचाने के लिए कैसे बच्चों की भावनाओं के साथ खिलवाड़ किया जाता है ।

भाषा शैली :

कहानी की भाषा शैली सहज और सरल भाषा में लिखी गई है । कथा के सारे पात्र शिक्षित होने के कारण कहानी में अंग्रेजी भाषा का उपयोग किया गया है । अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग जैसे- ओ.के., गुडबाय, मिस्टर, बर्थ-डे, ऑफिसर, एनी बडी आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है । कहानी में बाल-मानस को ध्यान में रखकर भाषा का बखूबी उपयोग लेखिका ने किया है ।

उद्देश्य :

इस कहानी के माध्यम से सूर्यबाला ने यह दर्शाया है कि कैसे अपने बड़े अफसरों को खुश रखने के लिए अपने बच्चों की भावनाओं की भी कद्र नहीं की जाती । उनकी छोटी-छोटी खुशियों को भी बड़ों के सम्मान के लिए बलि चढ़ा दिया जाता है । यह एक बालमनोविज्ञान को ध्यान में रखते हुए लेखिका ने बाल समस्या को भी कहानी में दर्शाया है ।

रमन की चाची :

'रमन की चाची' सूर्यबाला द्वारा रचित कहानी है । रमन की चाची सचमुच नहीं रही । उसका अपना जीवन इस कहानी से भी ज्यादा करुण रहा । उसे अपने सच के जीवन में रमन भी नहीं मिला । रमन की माँ नहीं होती है, उसकी दूसरी माँ होती है । वह आगे की पढ़ाई के लिए मामा के यहाँ चला जाता है । वहीं पर रहकर भी वह अपनी चाची पर होते अत्याचार के बारे में सोचता रहता है । वह दिन मे एक बार तो अपनी चाची को याद कर लेता है । उसकी चाची से उसकी बचपन से ही बनती है । वह चाची की मनःस्थिति को समझता है । वह चाची को आवाज़ उठाने के लिए कहता है । क्या नहीं था चाची के पास, क्यों वह

तिल-तिल और घुट-घुट कर मरी? शायद अपने प्रति एक निरपेक्ष तटस्थता, कुछ न कह पाने की लाचारी नहीं, उदासीनता सी आत्म-सजगता और एक परिपक्व प्रतिबद्धता आज संभवतः सबसे प्राप्य है । स्त्री का तब वह आपसे आप और स्वतंत्र और आस-विश्वासरत हो पाएगी वर्ना स्वतंत्रता या मुक्ति किसी के हाथ पर लाकर रख देने या सहेजने की चीज नहीं । यहाँ चाची अपने दुःखी जीवन से आखिर तक बढ़ती रही परंतु आखिर तक उसने कुछ नहीं कहा । आखिर दर्द इतना बढ़ गया कि उसने इस संसार को हमेशा के लिए छोड दिया। लेकिन फिर भी उसने अपनी लड़ाई कभी नहीं लड़ी । ना अपना सर कभी उठाया । वह हमेशा कहती कि वह घर छोड़कर क्यों जाए, उसका पति शराबी, जुआरी भी नहीं, शेर की तरह गरजने-दहाड़नेवाला भी नहीं है, घर से बाहर रंगरलियाँ मनानेवाला भी नहीं, बल्कि औरतें तो सिर पटक, चिख-चिल्लाकर, रोते-झगड़ते जिंदगी बिता देती हैं । उनके पास कहने के लिए कुछ होता है न, पर मेरे पास कुछ नहीं, सिर्फ मुठ्ठीभर रेत है । मुठ्ठी को तो खाली भी नहीं कह सकती । मेरा सबसे बड़ा रक्षा कवच ही भोथरा है ।

पात्र :

कहानी का मुख्य पात्र 'रमन की चाची' है जो सारे अत्याचार झेलती है, परंतु कभी कोई उसके खिलाफ अपनी आवाज़ नहीं उठाती है, बल्कि बिना बोले सब कुछ सहती रहती है । उसकी जिंदगी में अभाव है, निराशा है, फिर भी वह किसी को कुछ नहीं कहना चाहती। वह खुद इन दुःखों, निराशा से मुक्ति पाना नहीं चाहती । वह समझती और सोने से मिट्टी बनकर भी कोई जाती है? पतिगृह से सिर्फ जाना ही तो नहीं है न, जाने पर एक तरफ से चारों ओर उग आयी शंकाएँ, कौतुहल, ममता, प्यार, पछतावा और छटपटाहट, लाचारियाँ, तमाम आवेश और धिक्कारभरी चुनौतियाँ होंगी जीवन में । चाची का अपने संयुक्त परिवार में काफी शोषण होता है परंतु वह खुद अपनी लड़ाई नहीं लड़ना चाहती।

गौण पात्रों में चाचा, संयुक्त परिवार के अन्य सदस्य हैं ।

संवाद :

कहानी के संवाद नारी की संवेदनाओं को दर्शाते हैं। संवाद छोटे-बड़े दोनों प्रकार के देखने को मिलते हैं । पेश है 'रमन की चाची' कहानी के कुछ संवेदनात्मक संवाद-

"अरे, सिर्फ गोरी चमड़ी से ही क्या होता है?"

"इतना ही क्यों..."

"सिर्फ सूरती नाक से ही क्या होता है?" [104]

"सुबह नींद नहीं खुलती इसकी, माँ बहन को सिखाना चाहिए था । हाथ-पैर जल्दी उठते नहीं, सुस्त-सी है ।" [105]

"चार काम खींचकर कर ले, ऐसा शऊर नहीं.."

"सुस्त, बेशऊर, बेआब,.. बेगैरत लड़की!"

देशकाल एवं वातावरण :

इस कहानी का वातावरण एक पारिवारिक वातावरण है । संयुक्त कुटुंब में एक स्त्री की कैसी दयनीय परिस्थिति होती है उसे पारिवारिक परिदृश्य के जरिए चित्रण किया है । आधुनिक युग में सिर्फ खान-पान, रहन-सहन से ही परिवर्तन नहीं होना चाहिए, परंतु विचारों में भी परिवर्तन लाने की जरुरत है ।

भाषा शैली :

कहानी की भाषा शैली आसान और सरल है । कहीं-कहीं पर संवेदनात्मक शैली के संवादों का उपयोग किया गया है । कथा की भाषा शैली पात्रों को केन्द्र में रखकर लिखी गई है। देहाती भाषा का भी प्रयोग कहानी में हुआ है । व्यंग्य और टोंटिंग वाली भाषा का भी समावेश हुआ है ।

उद्देश्य :

प्रस्तुत कहानी का उद्देश्य नारी जीवन में ससुराल में संयुक्त कुटुंब में आनेवाली समस्याओं को उजागर करने का प्रयत्न किया गया है । एक स्त्री का परिवार में कैसे शारीरिक और मानसिक रूप से, ताने देकर, अलग-अलग प्रकार

से शोषण किया जाता है और वह बिना कुछ बोले, मुकबधिर बनकर यह सब मरते दम तक सहती रहती है, पर उफ तक नहीं करती । आखिर में दुनिया से विदा ले लेती है ।

पराजित:

'पराजित' कहानी एक कंपनी में कार्यरत एग्जीक्यूटिव अफसर एन.सी. बंसल की है । बंसल की धारणा यह थी की ज्युनीयर अफसर को प्रमोशन मिलता है क्योंकि उस ज्युनीयर अफसर की बीवी अफसर की बीवी अपने पति की तरक्की के लिए सिनियर अफसर अर्थात् बॉस को खुश रखती है । मिसेस गिडवानी ने क्योंकि ऐसा किया था और मिसेस सुद भी ऐसी ही औरत है। आधुनिक जीवन में लोग प्रमोशन पाने के लिए इतने डेसपेरेट होते हैं कि प्रमोशन पाने के लिए वे अपने आस-पास का माहौल भी खराब कर लेते हैं । ऐसी स्थिति में काम करने वाले का मानसिक संतुलन इस हद तक बिगड़ जाता है कि वो अपना जीवन अपने हाथों बेकार बना लेते हैं । यह कहानी उस परिवेश का चित्रण करती है जहाँ तरक्की पाने के लिए लोग क्या-क्या पैंतरे अपनाते हैं । और तरक्की ना मिले तो लोगों के ताने सुन-सुनकर वे अपनी मानसिकता बदल लेते हैं । ऐसे लोगों का प्रथम और अंतिम प्रयास केवल तरक्की पाना ही होता है । बंसल उसी समाज के एक परिचायक के रूप में कहानी में उभरता है ।

पात्र :

इस कहानी का मुख्य पात्र बंसल है। बंसल को अंत तक कहानी में प्रमोशन नहीं मिला । वह अपने सीनियर अफसरों से ईर्ष्या करता है। बंसल भी प्रमोशन पाने की चाह रखता है, इसलिए वह अपनी पत्नी को अफसरों की पार्टियों में रंगीन मैक्सी पहनने के लिए मनाता है । वह यह हरकत अपने प्रमोशन के लिए अपनी पत्नी से करवाता है, पति के लिए और ऐसी सोच को देखते हुए पत्नी भी पति के अनुसार कपड़े पहनने को तैयार हो जाती है और कहती है कि आत्महत्या

करने की नौबत आयेगी तो उस समय बदन पर कपड़े और काठ ढंग के हों, तुम्हारी पॉजीशन के लिए अनुकूल, कहीं तुम्हें अपनी मरी हुई बीवी के कपड़े देखकर शर्मिंदगी न उठानी पड़े, जो दूसरें से अपनी तुलना करता है ।

गौण पात्रों में कृष्णन, मिस्टर चन्द्र का उल्लेख किया गया है ।

संवाद:

"पता नहीं, हमें तो चिराग लेकर ढूँढना पड़ता है ।"

"असल में आप लोगों को मेरे पास जरा ज्यादा अँधेरा नज़र आता है न- आप लोग ठहरे उजालेवाले ।" [106]

"जानते हो, जिंदगी जिंदादिली का नाम है, मुर्दादिल क्या खाक जिया करते हैं ?" [107]

देशकाल :

कहानी का देशकाल महानगरीय जीवन शैली का है । सारा वातावरण उच्चवर्गीय परिवार से संबंधित है जिसमें पात्र अपने परिदृश्य के हिसाब से कहानी को आगे बढ़ाते हैं ।

भाषा शैली :

कहानी की भाषा शैली व्यंग्य शैली, संवाद शैली और वर्णनात्मक शैली में भी इसका चित्रण किया गया है । कहानी के पात्र शिक्षित और उच्च वर्ग से जुड़े हुए हैं इसलिए शुद्ध भाषा का उपयोग करते हैं । कहीं-कहीं पर कहानी में अंग्रेजी के शब्दों और वाक्यों का भी उपयोग हुआ है । जैसे- पैक्टरी, टेस्ट, रोस्टेड, फाइट, ऑर्डर आदि शब्दों का उपयोग किया गया है ।

उद्देश्य :

सूर्यबाला ने अपनी कहानी 'पराजित' के माध्यम से उच्चवर्गीय समाज का काला सच और फैशन और सभ्यता के नाम पर फुहड़ता का पर्दाफाश किया है । कैसे यह लोग अपना स्वार्थ साधने के लिए नारी (स्त्री) को अपना माध्यम बनाते हैं तथा अपनी तरक्की, प्रगति के लिए उसका शोषण मानसिक और शारीरिक

धरातल पर करते हैं । इस कहानी के माध्यम से बड़े-बड़े अफसरों और उनकी गिरी हुई सोच का चित्रण किया है । कैसे अपने आप को आगे बढ़ाने के लिए घर की औरतों तक का सौदा कर देते हैं । यह आज क आधुनिक काल की सच्चाई हमें इस कहानी में देखने को मिलती है ।

'पड़ाव':

प्रस्तुत कहानी में आज के परिवार कैसे अपनी सहुलियत के लिए किसी की भावनाओं का अपने रसूख से फायदा उठाते हैं और उनकी भावनाएँ भी एक दिखावा ही होती है । झुठा प्यार और झुठा लगाव दिखाकर कैसे फायदा उठाया जाता है यह इस कहानी के माध्यम से देखने को मिलता है । आज की पीढ़ियों में यही गुण हमें देखने को मिलता है । इस कहानी में कैसे संबंधों का फायदा उठाया जाता है और किस तरह आर्थिक रूप से भी ठगा जाता है यह इस 'पड़ाव'' कहानी से देखने को मिलता है । आज के आधुनिक जीवन में वृद्धों को प्यार और लगाव की आवश्यकता होती है और वह पाने के लिए वे कुछ भी करने के लिए तत्पर रहते हैं । यहाँ एक निःसंतान पति-पत्नी हैं जो अपने रिश्तेदार शैलेन्द्र और उसकी बेटी की सेवा में लगे रहते हैं । अपना सारा दुःख-दर्द भुलाकर वे बस इस बच्ची की देखभाल करने लग जाते हैं ।

पात्र :

कहानी का मुख्य पात्र पति-पत्नी हैं जो निःसंतान हैं और उसके अभाव में वे निराश जीवन जीते हैं । परंतु अपने रिश्तेदार की बेटी से प्यार करते हैं, उसके लिए हर संभव मदद करते हैं । चाहे वह आर्थिक रूप से ही क्यों न हो, वे उसको खुश रखते हैं । परंतु शैलेन्द्र जो उनका रिश्तेदार है वह मानसिक और भावनात्मक रूप से फायदा ही उठाता है । ऐसा लग रहा है जैसे निःसंतान दंपति को छला जा रहा है ।

कहानी के गौण पात्र शैलेन्द्र और उसकी छोटी बेटी है ।

संवाद :

कहानी के संवाद संवेदात्मक शैली को दर्शाते हैं । कहानी के संवाद छोटे हैं ।

"शैलू और उसकी बहू ने सचमुच पैर छुए और बच्चों से भी कहा पैर छुओ इन दादी के, ये दादा हैं और ये दादी ।" [108]

"बड़ी मोही है ।"

"सो तो है ही, बच्चों में सगा, चचेरा कहाँ ।"

"अरे, क्या कहती हो, घड़ी भर को नहीं छोड़ रही ।"

"और पाँवो का दर्द कैसा है तुम्हारा?" [109]

देशकाल:

कहानी का देशकाल महानगरीय जीवनशैली से प्रभावित है । यह एक पारिवारिक कहानी होने के कारण इसमें पारिवारिक वातावरण देखने को मिलता है ।

भाषा शैली :

पड़ाव के कहानी के पात्र ताऊ के जीवनयापन और उनके जीवन की अनेक समस्याओं पर लेखिका ने प्रकाश डालने का प्रयास किया है । हर क्षण कैसे व्यक्ति को भावनाओं से ठगा जाता है यह बताया है ।

झील :

'झील' कहानी की लेखिका सूर्यबाला हैं । सूर्यबाला ने झील कहानी के माध्यम से श्यामली नामक स्त्री की जीवनयात्रा पर प्रकाश डाला है । श्यामली इस कहानी के केन्द्रस्थान पर है । श्यामली अनिल की पत्नी है और इन दोनों की एक बेटी रुना है । उनकी बेटी की शादी हो गई है । उसके पति का नाम प्रदीप है । श्यामली ने एम.ए. अंग्रेजी भाषा में किया है और अनिल अब रिटायर्ड हो चुका है और श्यामली झील की तरह अपना जीवनयापन करती है । श्यामली समय को

अधिक महत्त्व देती है । उसके अनुसार समय का सही उपयोग बुद्धिवान लोग ही करते हैं । उसके विचारों से समाज में पढ़े-लिखे लोगों और अनपढ़ लोगों में बहुत अंतर होता है । उनके सोचने-विचारने की क्षमता एक दूसरे से भिन्न होती है । यह कहानी हमारी दिनचर्या को आधुनिक काल से जोड़ती है । यह कहानी समाज के उच्च वर्ग से संबंधित होने के कारण सभी पात्र उच्च शिक्षा प्राप्त किये हुए हैं ।

पात्र :

कहानी का मुख्य पात्र श्यामली है जो एक उच्च परिवार में से आती है । पूरी कथावस्तु श्यामली के आस-पास ही घूमती है । श्यामली पढ़ी-लिखी होने के कारण उसकी नज़र में समय सबसे मूल्यवान चीज है और इसका महत्त्व केवल पढ़े-लिखे और बुद्धिमान लोग ही जानते हैं । श्यामली शिक्षा को अधिक महत्त्व देती है क्योंकि शिक्षा ही वह माध्यम है जिससे हमारे विचारों और सोच में परिवर्तन आता है ।

गौण पात्रों में रुना, प्रदीप, अनिल आदि लोगों का सहयोग कहानी को प्राप्त होता है जो कहानी को रसप्रद बनाते हैं ।

संवाद:

कहानी के संवाद प्रेरणात्मक हैं । कहानी में छोटे-बड़े इत्यादि संवादों का उपयोग किया गया है । पेश हैं 'झील' कहानी के कुछ संवाद-

"'आईए? श्यामली थी, ब्रेकफास्ट लग गया था। इत्मीनान और आराम से भरपूर ब्रेकफास्ट! काँटों में फँसा आमलेट का टुकड़ा उठाया कि रुक गए सामने श्यामली से पूछा, तुम?' [110]

"चलता हूं । स्टडी में कागज़ों को छाँटकर अलग कर लूं।"

"मैं आ जाऊँ?" श्यामली ने उसी सहजता से पूछा ।

"नहीं-नहीं.." [111]

देशकाल:

कहानी का देशकाल आज के आधुनिक काल के संदर्भ में लिया गया है । कहानी में पाश्चात्य और भारतीय संस्कृति के दर्शन होते हैं, जो आज के दिनचर्या से संबंध रखते हैं ।

भाषा शैली :

कहानी की भाषा शैली वर्णनात्मक शैली है । छोटे-बड़े संवादों का भी मिश्रण देखने को मिलता है । कहानी के पात्र शिक्षित होने के कारण अंग्रेजी भाषा का भी प्रयोग करते पाये गए हैं जैसे- हैंगिंग, रॅक, कार्डबोर्ड, पैसेज जैसे शब्दों को देखा जा सकता है।

उद्देश्य :

लेखिका ने श्यामली पात्र के द्वारा पाठकों को समय, शिक्षा का महत्त्व समझाया है । समय को लेकर हमें कभी भी लापरवाह नहीं रहना चाहिए । और एक शिक्षित और अनपढ़ व्यक्ति में कितना अंतर होता है इसका भी चित्रण सूर्यबाला ने उजागर किया है ।

'राख' ('हनुमानगढ़ी की यात्रा') के नाम से भी प्रसिद्ध है । इस कहानी का मूल्यांकन आगे किया जा चुका है ।

सिर्फ मैं:

प्रस्तुत कहानी में शहरी जीवन में जीवनयापन करने वाले दंपती को नौकरी करने में कैसी कठिनाई होती है इस बात का सादृश्य वर्णन किया गया है । अगर पति-पत्नी दोनों नौकरी करते हैं तो एक को थोड़ा-बहुत समझौता करना पड़ता है। या तो फिर दोनों के बीच यही बात टकराव की वजह बन जाती है, जिसको अंग्रेजी भाषा में सेक्रीफाइज़ करना कहा जाता है । कहानी के पात्र मनमोहन और मेघा इसी परिस्थिति का सामना करते हैं । मेघा अहमदाबादी है। जीवन की छोटी-बड़ी समस्याओं को लेकर वह हमेशा चिंतित रहती है । मोहन के साथ

उसकी दिनचर्या को लेकर हमेशो नोंक-झोंक होती रहती है, परंतु आखिर में मोहन और मेघा एक-दूसरे के साथ सुलह कर लेते हैं ।

पात्र :

मेघा और मोहन दोनों नौकरी करते हैं। दोनों के उपर घर और नौकरी दोनों की जिम्मेदारी है । दोनों के बीच कभी-कभार तकरार होती रहती है क्योंकि दोनों अगर नौकरी करते हैं तो दोनों में से एक को परिस्थिति के साथ समझौता करना पड़ता है ।

गौण पात्रों में मनोज नाम का उल्लेख देखने को मिलता है ।

संवाद:

"अच्छा? मैंने बच्चों की तरह उसे चिढ़ाया तो खिलखिला पड़ी। वह फिर मुझे सोचते देखकर टोक बैठी, क्या सोचने लगे तुम?" [112]

"पालतू दुमहाली औरतों की कतार में मुझे बिठा देना चाहते हो न?" [113]

देशकाल:

कहानी का वातावरण सामाजिक वातावरण के तहत है । समाज की विभिन्न प्रवृत्तियों का उल्लेख मिलता है । शहरी जीवन का उल्लेख देखने को मिलता है ।

भाषा शैली :

कहानी की भाषा शैली में प्रेरणास्त्रोत संवादों का तथा व्यंग्यात्मक भाषा का भी प्रयोग किया गया है । पात्र पढ़े-लिखे होने के कारण अंग्रेजी भाषा एवं वाक्यों का भी उपयोग करते हैं । सूर्यबाला ने कहानी में छोटे-बड़े संवाद शैली का उपयोग किया है ।

खोह:

प्रस्तुत कहानी में जे.जे. जैसा पात्र है और धवल जैसा भी पात्र है जो जे.जे. जैसों का बचाव करते हैं और उनकी लापरवाही को भी वाह-वाही में परिवर्तित

कर देते हैं । यह आज का नवीन समाज है जहाँ भावनाओं का सहारा लेकर अपना दिखावा करते हैं । यह एक पारिवारिक कहानी है । खोह का अर्थ ही 'गहराई' होता है । जे.जे. जो बड़ा उद्योगपति है और धवल उसका सच्चा मित्र है, जब मिलते हैं तो जे.जे. की शादी नीना के साथ हो जाती है। शादी के बाद नीना तीन बच्चों को जन्म देती है और कैंसर की बीमारी के कारण नीना का देहांत हो जाता है। मगर थोड़े महिनों बाद ही जे.जे. दूसरा विवाह कर लेता है । जे.जे. की सोच ऐसी है कि उसके लिए भूतकाल कोई मायने नहीं रखता । उसकी सोच में वर्तमान का महत्त्व है । उसके जीवन में इतना बड़ा दुःख होते हुए भी उसे कविताएँ सुनना अच्छा लगता है ।

पात्र:

कहानी के मुख्य पात्रों में जे.जे. और नीना हैं । जे.जे. एक ऐसा व्यक्ति है जिसकी पत्नी नीना का तीन बेटियों को छोड़कर कैंसर की बीमारी की वजह से देहांत हो गया है । परंतु दुःख थोड़ा कम नहीं होता फिर भी जे.जे. दूसरा ब्याह कर लेता है । उसके लिए वर्तमान ही बडा महत्त्व रखता है । नीना के देहांत का दुःख उसने थोड़े दिनों में ही भूला दिया । यहाँ जे.जे. का स्वार्थी चरित्र दिख जाता है । जे.जे. के देश-विदेशों में अच्छे संबंध हैं । उसका स्वभाव रंगीला है। वह बड़े उच्चवर्गीय समाज में रहता है । उसे कई प्रकार के शौक हैं ।

धवल, ननी आदि गौण पात्र हैं जो इस कहानी को आगे बढ़ाते हैं ।

संवाद:

कहानी के संवाद वर्णनात्मक के साथ-साथ संवादों में एक मार्मिकता का भी प्रदर्शन करते हैं । बड़े-छोटे दोनों संवाद दृष्टिगत होते हैं ।

"आदाब भाभीजी, यह रहा नाचीज जयंत ।"

"का बच्चा!" धवल ने धौल जमाई ।

"और यह नी..." [114]

"देख रही हूँ, रुतबा बड़ी तेजी से बढ़ता जा रहा है जयंत भाई का । जयंत से जे.जे. से साहब और इसके बाद सर जे.जे. या हिज़ हाइनेस ।" [115]

वातावरण:

कहानी का वातावरण महानगरीय वातावरण है जो उच्चवर्गीय पारिवारिक माहौल का चित्रण किया गया है। कहानी में स्वच्छंदी पीढ़ी का वर्णन किया गया है।

भाषा शैली :

कहानी के सभी पात्र बढ़े लिखे हैं इसलिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करते हैं। भाषा में गतिशीलता देखी जा सकती है । दो भिन्न संस्कृतियों का उल्लेख शुद्ध भाषा में किया है ।

उद्देश्य :

कहानी का उद्देश्य भारतीय जीवनशैली और पाश्चात्य जीवनशैली में भिन्नता बताना तथा उच्चवर्गीय परिवारों में डूबती, निरस भावनाओं को उजागर करना है। स्वच्छंदी पीढ़ी का वर्णन देखा जा सकता है ।

कहो ना:

'कहो ना' कहानी एक विवाहिता मीता की कहानी है जिसका एक बेटा भी है जो छात्रालय में रहकर पढ़ाई करता था । मीता का पति हमेशा बाहर गाँव रहता था। अठारह साल मीता के पास रहा परंतु अब वह अक्सर अपनी पत्नी से दूर रहने लगा है । इसका नतीजा यह होता है कि मीता के मन में तरह-तरह के ख्याल आते हैं । उसका अकेलापन अब उसे काटने लगता है। उसके प्रेम के प्रति अब उसे शंका होने लगी है । वह सोचती है कि मनुष्य का मन उसके साथ खेल खेलता रहता है और दिल को धोखा देता रहता है । इसी मन की कश्मकश को लेखिका ने पाठकों के सामने रखने का प्रयास किया है । इस कहानी में मीता के मन में उठने वाले प्रश्न, भँवर आदि का चित्रण किया गया है । 'कहो ना' कहानी

में मनुष्य के मन के विभिन्न मनोभावों को प्रदर्शित किया गया है । मीता एक शिक्षित, समझदार स्त्री है परंतु फिर भी वह अकेले रह गई है । उसके पास उसका बेटा भी है पर फिर भी उसे अकेलापन महसूस होता है । वह खुलकर रोना चाहती है पर अपने मन के भावों को व्यक्त नहीं कर पाती है ।

पात्र:

यह मीता की कहानी है जो अपने बेटे के साथ रहती है । पहले उसके साथ अठारह साल पति रहा पर अब वह कम ही आता है । अब मीता को डर लगा रहता है। उसके दिलोदिमाग में कश्मकश है कि अब उसका अकेला जीवन कैसे कटेगा? उसके मन में अनेकों शंकाओं ने जन्म लिया है । हालांकि वह शिक्षित और समझदार है ।

कहानी के गौण पात्रों में गोपाल, निक्कि आदि हैं जो कहानी को आगे बढ़ाने का कार्य करते हैं ।

संवाद:

"मानती हूँ, सब ठीक है। " उसने अपने अंदर की खीझ को यथासंभव जब्त करते हुए कहा, "फिर भी हमारे आपस में मिलकर बैठने-बतियाने पर तो रोक नहीं होगी न ।" [116]

"रे नहीं, मैं तो यूँ ही कह रही थी । निक्कि को मना करने की जरुरत नहीं । मैं नही जाऊंगी शादी में ।" [117]

वातावरण एवं देशकाल:

यह कहानी भारतीय परिवेश में जन्म लेती है और भारत के आज के आधुनिक युग को दर्शाती है ।

भाषा शैली :

कहानी की भाषा शैली प्रभावशाली है । प्रसंग अनुरुप है और पाठकों के हृदय को छु लेने वाली है ।

उद्देश्य :

कहानी का उद्देश्य नारी के मन में उठनेवाले उद्वेगों को दर्शाना है । पति होने पर भी कैसा विरहभरा जीवन मीता जीती है, यहाँ उसकी आंतरिक मनोस्थिति को दर्शाया गया है ।

4.7 थाली भर चाँद:

प्रस्तुत कहानी सूर्यबाला द्वारा रचित एक पारिवारिक कहानी है । कहानी में तीन कोमल, नाजुक लड़कियों की बात हो रही है जो आज के मोर्डन युग का प्रतिनिधित्व करती हैं । ये तीनों दस वर्ष के आस-पास हैं । ये तीनो अपने घर का थोड़ा-बहुत छोटा-मोटा काम कर दिया करती हैं। इस काम में घर के बर्तन साफ करना, चाय बनाना, कपड़े सुखाना आदि कामों का समावेश होता है । यह कहानी लेखिका के पड़ोस में रहने वाली तीन लड़कियों की है जो एक गुजराती परिवार से आती हैं । कहानी में चकरी मालकिन और उनकी ये तीन बेटियाँ ही मुख्य पात्र हैं । इन तीनों बहनों में से सबसे शरारती बीच वाली बहन है जो अपने से बड़ी बहन को हमेशा जीभ दिखाने का काम करती है । इनमें सबसे बड़ी बहन घर में सबसे समझदार है जो सबको सँभालती है, खिलाती है । चकरी मालकिन का भी स्वभाव ऐसा है कि वह अपनी तीनों बेटियों से काम करवाती है तथा काम का क्या महत्त्व होता है उन्हें समझाती रहती है । सूर्यबाला की यह कहानी इन्हीं तीन नन्हीं लड़कियों के आगे-पीछे घूमती है ।

पात्र :

कहानी के मुख्य पात्र में लेखिका ने पड़ोस के परिवार में रहने वाली गुजराती परिरवार की लड़कियाँ हैं जो पूरा दिन शरारतें और मस्ती करती रहती हैं । बड़ी वाली सबको सँभालकर रखती है। चकरी भी इन तीनों को देश-दुनिया के सारे गुण सिखाने में लगी रहती है और ऐसे ही चकरी अपनी बेटियों से घर का

छोटा-मोटा कार्य करवाती रहती है जिससे जीवन में तीनों बेटियों को काम का महत्त्व समझ आए ।

गौण पात्रों में चकरी का समावेश होता है ।

संवाद :

"सूँ बेन! तमारा धणी फेक्टरी मा काम करे छे? तो मेरे धणी का भी काम लगाने को बोलो ना?" [118]

"'अरे, भला यह कैसे संभव है ? न सुखते-कुरकुराते कपड़े, न खुनखुनाते बरतन, न तलवार क तरह भँजता झाड़ू।' [119]

वातावरण एवं देशकाल :

भारतीय संस्कृति से जुड़ा हुआ है । कहानी का देशकाल एक गुजराती परिवार के घर का माहौल है । महानगर में निवास करने वाले मध्यम वर्ग से आने वाले परिवार की चर्चा की है और उनके दिन-ब-दिन की घटनाओं को इस कहानी में प्रदर्शित किया है ।

भाषा शैली :

कहानी की भाषा शैली वर्णनात्मक शैली की है । संवाद कहानी में ना के बराबर ही हैं। कहानी गुजराती परिवार की है इसलिए गुजराती भाषा का भी उपयोग हुआ है । थालीभर चाँद की भाषा पाठकों को थोड़ी कठिन लगती है । कहानी में गुजराती शब्दों और भाषा का भी प्रयोग किया गया है - बेनजी, वढे छे, नथी आवती, तमारा धनी, सुं करे आदि शब्दों को बताया गया है ।

उद्देश्य :

भारत की दो भाषाओं के संगम को बताया है । रोज-ब-रोज की घटनाओं को उजागर करना लेखिका का उद्देश्य है । कहानी बालमनोविज्ञान को ध्यान में रखते हुए लिखी है ।

योद्धा:

'योद्धा' कहानी भारत में होने वाले सांप्रदायिक दंगों से संबंधित है । हमारा देश बिनसांप्रदायिक होते हुए भी इस देश में धर्म के नाम पर दंगे होते हैं । इसके अलावा भारत में जाति, मंदिरों, मस्जिदों को लेकर भी कई बार दंगे होते देखे गए हैं जिसके कारण ना केवल जन-मानस की हानि होति है परंतु जान-माल का भी भारी नुकसान उठाना पड़ता है। इन दंगों का कोई निश्चित समय या तारीख नहीं होती। ये कभी भी, कहीं भी, किसी भी समय हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में जनमानस में एक भय फैला रहता है ।

इस कहानी के माध्यम से शहीद योद्धा राजेन्द्र के जीवन की त्रासदी को सूर्यबाला ने अंकित किया है ।

पात्र:

इस कहानी का मुख्य नायक राजेन्द्र है जो शहीद हो जाता है दंगों के कारण । बस उसी की जीवनयात्रा का वृत्तांत यहाँ पर इस कहानी में लेखिका ने प्रस्तुत किया है ।

संवाद :

"तू भाई को याद कर रहा है- सचमुच, क्यों?"

"क्यों? क्यों नहीं?" वह बदहवास-सा अपने अंदर की आवाज़ को घोटता हुआ अस्थिर-सा हो जाता है ।[120]

"अब हम सीना तानकर कह सकेंगे कि सांप्रदायिक फूट के लिए हमारे शहर का एक जवान मिसाल कायम कर गया ।" [121]

वातावरण :

प्रस्तुत कहानी का वातावरण शहरी जीवन का है जहाँ सांप्रदायिक दंगों का चित्रण किया गया है जिससे शहर में भय, डर का वातावरण निर्माण हुआ है ।

भाषा शैली :

'योद्धा' कहानी की भाषा शैली सहज औऱ सरल है। भाषा में एक तरह का मर्मस्पर्शी लहजा है जो पाठकों को विचाराधीन कर देता है । पाठक अंत तक जिज्ञासापूर्वक कहानी को पढ़ता है ।

उद्देश्य :

कहानी का उद्देश्य देश में हो रहे सांप्रदायिक दंगों का विरोध करना है और अमन, शांति के लिए लोगों को प्रेरित करना है ।

सूर्यबाला द्वारा रचित कहानी संग्रह 'गृहप्रवेश' 2008 में प्रकाशित हुआ था। उनकी लंबी और प्रसिद्ध कहानियों का संकलन इस संग्रह में किया गया है । इस कहानी संग्रह में मर्मस्पर्शी, भावुक कर देनेवाली, पाठकों में जिज्ञासा और रुचि उत्पन्न करने वाली कहानियों का समावेश किया गया है । सूर्यबाला रचित इस कहानी संग्रह में सात कहानियों का समावेश किया गया है । इस कहानी संग्रह की प्रथम कहानी 'गृहप्रवेश' है ।

4.8 गृहप्रवेश :

'गृहप्रवेश' कहानी के केंद्र में विरु शर्मा है जो शहर में रहकर नौकरी करता है । वह जहाँ निवास करता है वहाँ बहुत सारी समस्याओं का उसे और उसके परिवार को सामना करना पड़ता है । वह गाँव छोड़कर शहर में अपनी पत्नी शकुन के साथ और बच्चों के साथ रहता है । शहर की इस बस्ती से वह छुटकारा पाना चाहता है । उसके लिए वह शहर से दूर दूसरी जगह अपना घर बनवाता है और गृहप्रवेश के लिए अपनी बहन को आमंत्रित करता है । पर बहन समय पर नहीं पहुँच पाती है । जब विरु शर्मा की बहन वहाँ पहुँचती है तब उसे रास्ते में बहुत-सी घटनाओं का सामना करना पड़ता है । वहाँ पर बाउन्ड्री के पास के चक्के, घर के पास शराब की भट्टियों का, भूरेलाल जैसे लोगों का उसके भाई के रिश्तों का, स्मगलर भी पड़ोसी होता है। इन सब कारणों से गृहप्रवेश का सारा

आनंद समाप्त हो जाता है । इन सबसे जीवन का आनंद लेने वाला विरु शर्मा निराश हो जाता है । इस कहानी में सूर्यबाला ने बचपन के संस्मरणों, पारिवारिक माहौल का चित्रण किया है।

पात्र:

कहानी का मुख्य नायक विरु शर्मा है जो गाँव छोड़कर अपनी पत्नी शकुन और बच्चों के साथ नौकरी के लिए शहर में रहता है । वहाँ उसके नये घर के गृह प्रवेश के समय किन-किन समस्याओं का उसे और उसकी बहन, परिवार को सामना करना पड़ता है उन सारी घटनाओं का लेखिका ने जीवंत चित्रण किया है। एक सामान्य मनुष्य जो पारिवारिक जीवन का आनंद उठाता है और मस्तमौला जीवन जीता है वह कैसे अन्य समस्याओं के कारण अपना सुख-चैन खो देता है ।

गौण पात्रों में शकुन, बच्चे, भुरेलाल, स्मगलर, विरु शर्मा की बहन आदि पात्रों का उल्लेख किया गया है । यह सारे पात्र कहानी को और जिज्ञासा, कौतुहल, रस उथ्पन्न करनेवाली बनाने में अपना सहयोग प्रदान करते हैं ।

संवाद :

गृह प्रवेश में दो शहरों की जीवनशैली का उल्लेख किया गया है । मध्यमवर्गीय पारिवारिक प्रसंगों का चित्रण किया गया है ।

"मामा के शहर में चिड़ियाघर है क्या, मम्मी? और चिल्ड्रेन पार्क? उसमें अगर हाथी भी बना हो तो हम उसकी सूँड़ में से घुसकर दूम के नीचे से निकल आएँ ।" [122]

"ठीक है, ठीक है, जब डूबेगा तब डूबेगा । अभी तो पिछले दो सालों से इस शहर में भगवान की दया से सूखा ही पड़ रहा है ।" [123]

वातावरण एवं देशकाल:

'गृहप्रवेश' कहानी में लेखिका ने दो शहरों के वातावरण का चित्रण और घटनाओं का परिवेश उजागर किया है । इसमें पारिवारिक वातावरण और परिवार में घटित घटनाओं के प्रसंगों को दर्शाया है।

भाषाशैली :

कहानी की भाषा अत्यंत सरल और सहज है जिसमें अंग्रेजी शब्दों का भी समावेश किया गया है । इसके उपरांत लेखिका ने कहानी में कहावतें, मुहावरेदार भाषा का उपयोग किया है । लेखिका ने मनोवैज्ञानिक ढंग से कहानी को मोड़ दिया है । शहरी जीवनशैली होने के कारण पात्रों की भाषा शुद्ध है ।

उद्देश्य :

कहानी के माध्यम से लेखिका ने शहर में निवास करने वाले परिवारों को कैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है, उन समस्याओं का घटना, प्रसंग सहित वर्णन किया है । इसके उपरांत लेखिका ने भ्रष्टाचार, घर की समस्या, गुंडागर्दी की समस्या, बढ़ती हुई जनसंख्या की समस्याओं को उजागर किया है ।

सौदागर दुआओं का:

'सौदागर दुआओं का' कहानी एक ऐतिहासिक कहानी के अंतर्गत आती है। यह आज़ादी के पूर्व का वातावरण बताती है । इस कहानी मे हिंदु-मुस्लिम कौमी एकता की बात की गई है । कहानी का मुख्य पात्र सैयद साहब हैं जो गैर-मुस्लिम इलाके में रहते हैं । वे स्वाभिमानी, सर्वधर्मों के प्रति सम्मान रखने वाले, निःस्वार्थ, सेवाभावी के रूप में दिखाई देते हैं । इस कहानी का शीर्षक सैयद साहब के चरित्र के आधार पर ही रखा गया है, क्योंकि वह हिंदू और मुस्लिम दोनों कौमों के बीच दुआओं के सौदागर के रूप में उभरकर सामने आते हैं । इस कहानी में सैयद साहब अंग्रेज जैक्सन साहब और उनकी ईस्ट इंडिया कंपनी की यादों को दोहराते हैं । जैक्सन के द्वारा सैयद साहब की कौम के खिलाफ बोला जाता है। इस कहानी में सैयद साहब की बड़ी हवेली का भी वर्णन दिखता है । उस जमाने में भी सैयद साहब मुफ्त में तावीज़ और दवाइयाँ भी बाँटते थे । उनकी दवा में ईश्वर का आशीर्वाद होता था, जिसे लोग दुआ समझते थे । इस जमाने में पर्दे में रहने वाली स्त्रियों को पिक्चर (फोटो) खींचवाने को मनाही थी

जिसका विरोध भी सैयद साहब करते थे । सैयद साहब हिन्दू-मुस्लिम एकता का प्रतिनिधित्व करते हैं।

पात्र :

सैयद साहब इस कहानी के मुख्य नायक हैं । यह कहानी आज़ादी के पूर्व और पश्चात की है जिसमें सैयद साहब भारत में निवास करने वाली दो मुख्य कौम हिन्दु-मुस्लिम एकता का प्रतिनिधित्व करते हैं । सैयद साहब जरूरतमंदों की दिल से मदद करने वाले व्यक्ति हैं। वो लोगों को मुफ्त में दवा और ताबीज़ भी देते हैं । वो अंग्रेज अफसर जैक्सन का भी विरोध करते हैं । पहले हमारे देश की सभी कौमें एक ही मुहल्ले में निवास करती थी । सैयद साहब भी ऐसे ही मुहल्ले में रहकर सबके चहीते थे । वह कहते थे कि मुस्लिम मुहल्ले से गुजरो तो भी हमें कहीं न कहीं कलश दिख ही जाता है ।

गौण पात्रों में जैक्सन अंग्रेज साहब है और रिज़वी साहब है।

देशकाल :

कहानी का देशकाल हमारी आज़ादी के पूर्व और पश्चात का है । हिन्दु-मुस्लिम मुहल्ले का है । देशभक्ति का वातावरण है । हिन्दु-मुस्लिम के संबंधों को उजागर किया गया है ।

संवाद:

कहानी के संवाद कही में हिंदू-मुस्लिम एकता को दर्शाते दृष्टिगत होते हैं । कहानी के संवाद छोटे-बड़े दोनों हैं । साथ में सांप्रदायिकता को उजागर करते हैं।

उद्देश्य:

कहानी में हिन्दु-मुस्लिम एकता और कौमों के बीच के संबंधों को उजागर किया है । लेखिका ने सैयद साहब के माध्यम से देश की आज़ादी और उसके बाद का चित्रण किया है।

समापन :

समापन कहानी में सूर्यबाला ने एक पत्र का सारांश लिखा है । कहानी अठहत्तर साल की माँ की है । माँ को इस कहानी में लेखिका ने मुख्य पात्र के रूप में दर्शाया है । बुढ़ापे के साथ ही माँ को अनेक बिमारियों ने घेर रखा है । उनको रयूमेटिक की बिमारी है। जरा-सा स्ट्रेन होने पर रयुमेटिक का दर्द फिर से होना शुरु हो जाता है । बुढ़ी और घर में बुजुर्ग होने के कारण परिवार के सबी सदस्य उनका सम्मान करते हैं और उनसे खास अपनापन रखते हैं । यह एक छोटी कहानी है जिसमें बुढ़ापा आते ही मानसिक और शारीरिक रूप से माँ की परिस्थिति दर्शायी है । माँ की बेटी अड़तीस साल की है, उनकी बेटी की भी बेटी है और उसका पति भी है ।

पात्र:

कहानी एक अठहत्तर वर्ष की बुढ़ी और मानसिक और शारीरिक स्तर पर परेशानियाँ झेल रही माँ की है । परिवार भी माँ को सम्मान की दृष्टि से ही देखता है और उनका अच्छे से ख्याल रखता है ।

गौण पात्रों में बेटी, बेटी की बेटी और उसका पति है ।

संवाद : ‘

कहानी के संवाद पत्र के द्वारा दर्शाये गये हैं । इसमें लेखिका ने कहानी के सारांश के माध्यम से संवाद लिखे हैं ।

देशकाल:

कहानी एक पत्र के सारांश को दर्शाती है जो भारतीय पिरवार के परिवेश में जन्म लेती है ।

भाषा शैली :

कहानी की भाषा आधुनिक है । कहानी में अंग्रेजी भाषा का उपयोग है जैसे हॉस्टेल, टॉप, रयुमेटिक आदि शब्दों का उपयोग है । कहानी की भाषा सरल और सहज है ।

उद्देश्य :

कहानी में पत्र के सारांश के दृश्यों को उजागर किया गया है । कहानी में घर में बुजुर्गों की स्थिति और कैसे घर के सदस्यों द्वारा सहानुभूति दर्शाई जाती है यह बताया गया है।

'सुनो समित सुनो सुलभ':

सूर्यबाला द्वारा रचित यह कहानी एक वर्णनात्मक कहानी है । इस कहानी का वर्णन सूर्यबाला ने भारतीय संस्कृति को मद्देनज़र रखकर किया है । लेखिका ने आधुनिक नारी की जीवन-शैली को ध्यान में रखकर यह कहानी लिखी है । यह एक कुटुंब-प्रधान कहानी है । इसकी नायिका वनीता है जिसका पति समित अपने फ्यूचर बनाने के लिए कॅनाडा गया हुआ है । वहाँ जाकर वह अपने काम में मशगुल हो जाता है । वहाँ जाकर वह विनीता को ऍरोग्राम भेजता रहता है । परंतु थोड़े दिनों के भीतर ही समित वहाँ कॅनाडा में एक युवती के प्रेमजाल में फँस जाता है । इस कारण अब विनीता का जीवन त्रासदी झेल रही नारी के रूप में परिवर्तित हो जाता है । उसका और सुमित का एक बेटा भी है जिसका लालन-पालन विनीता पंद्रह साल से करती आ रही है । पंद्रह साल से विनीता अपने बेटे को माँ-बाप दोनों का प्रेम दे रही है । वह अपने बेटे को पढ़ाती-लिखाती है और अपने पति सुमित जैसा ही उसका करियर बनाती है । वह भी सुमित की तरह ही विदेश चला जाता है । इधर विनीता अपने मन को समझाती रहती है परंतु विनीता अपने पति के खिलाफ विद्रोह नहीं कर पाती। पति इतना दूर होने के बाद भी वह उसका बुरा नहीं चाहती है । उसके खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं करती है । उसके दिल में अभी भी अपने पति के लिए प्रेम, सम्मान बरकरार रखती है । बस मनोमन उसका मंथन चलता रहता है परंतु वह बगावत का ख्याल भी अपने मन में नहीं लाती है ।

पात्र :

कहानी की मुख्य नायिका विनीता है जो एक स्वनिर्भर नारी है । उसके पति सुमित के विदेश जाने के पश्चात वहाँ की लड़की से प्रेम करने के पश्चात भी वह उसके खिलाफ बगावत करने का भी नहीं सोचती । उल्टा अपना जीवन अपने बेटे को पालन-पोषण करने के लिए पंद्रह साल लगा देती है । वह अपने बेटे को भी काबिल बनाकर विदेश भेज देती है। विनीता एक आत्म-निर्भर, भावनाशील, भारतीय संस्कृति का पालन करने वाली स्त्री के रूप में लेखिका ने उसका चरित्र चित्रण किया है । इतना सबकुछ सहने और झेलने के बाद भी उसके मन में विद्रोह की भावना नहीं आती है । बस वह अपना पत्नी धर्म और माँ की जिम्मेदारी पूर्ण करती है । गौण पात्रों में सुमित, कॅनाडा की लड़की और विनीता के बेटे का उल्लेख किया गया है ।

संवाद:

कहानी के संवाद स्वनिर्भर नारी के संदर्भ में हैं । इस कहानी के संवादों में नारी की संवेदनात्मक भावनाओं को संवादों के माध्यम से उजागर किया है ।

देशकाल:

इस कहानी में दो देशों की संस्कृति का परिदृश्य दर्शाया गया है । एक भारत है तो दूसरा कॅनाडा है । एक कुटुंब की जीवनयात्रा के दर्शन होते हैं । कहानी वर्णनात्मक रूप की है जिसमें भारतीय संस्कृति को लेखिका ने अपने शब्दों में चित्रण किया है ।

भाषाशैली :

कहानी की भाषाशैली वर्णनात्मक है । कहानी की भाषा सरल और सहज है । पात्रानुकूल भाषा शैली है । कहानी के पात्र शिक्षित हैं इसलिए भाषा के रूप में अंग्रेजी भाषा का भी प्रयोग हुआ है । जैसे-केरियर, पेटेंट, अफोर्ड, एक्स्टेंशन, डॉलर, कलीग, सिंपली शब्दों को देखा जा सकता है ।

उद्देश्य:

कहानी में ऐसी नायिका का चित्रण है जो अपने पति और बेटे के भविष्य का निर्माण करने के लिए खुद के भविष्य को आग में झोंक चुकी है । यहाँ पर लेखिका ने एक भारतीय नारी की मनोव्यथा का चित्रण बड़े मार्मिक ढंग से किया है जो सबकुछ सहकर भी विद्रोह नहीं कर पाती ।

सुखांतकी:

'सुखांतकी' कहानी के माध्यम से लेखिका ने यह साबित कर दिया है कि कहानी का नायक सड़क का भिखारी भी हो सकता है । सूर्यबाला की यह कहानी एक मार्मिक औऱ छोटी कहानी के अंतर्गत आती है । कहानी का मुख्य पात्र शहर में वेल्डिंग का कार्य करता है परंतु उसे अपनी मजबूरी के कारण भीख माँगनी पड़ती है । वह अपनी पत्नी के इलाज के लिए मानडिह जाता है परंतु उसके सारे पैसे खत्म हो जाते हैं । वापस लौटते समय वह रेलगाड़ी का टिकट तक नहीं निकाल पाता है और इसके चलते उसे टी.सी. पकड़ लेता है । सुखांतकी कहानी इस बात का परिचायग है कि भारत में गरीबी की समस्या को दर्शाया गया है । पत्नी की मृत्यु के बाद वह अपने गाँव और अपने बच्चों के पास जाना चाहता था मगर रेलगाड़ी में पकड़ा जाता है। फिर वह छोटी मुन्नी के साथ भीख माँगता हुआ लेखिका के घर पहुँच जाता है । लेखिका उसे पेटभर खाना देकर दस रुपए भी देती है । दस रुपए पाने के बाद वह बहुत खुश होता है जबकि वह कल ही अपनी पत्नी को खो चुका था ।

पात्र :

कहानी का पात्र इतना दुःख पाकर भी अंत में थोड़ी सी मदद पाकर भी फुले नहीं समाता, जबकि वह बहुत गरीबी झेल चुका है । उसकी हलत यहाँ तक हो गई है कि उसे भीख तक माँगनी पड़ रही है । उसके पास अपनी पत्नी का इलाज कराने तक के पैसे नहीं बचते और इलाज के अभाव में उसकी पत्नी का

देहांत हो जाता है । वह गाँव जाने के लिए ट्रेन पकड़ता है परंतु टि.सी. उसे पकड़ लेता है । उसके बाद वह मुन्नी के साथ भीख माँगने का काम भी कर लेता है ।

गौण पात्रों के रुप में गाँव के बच्चे, टि.सी., पत्नी और मुन्नी के पात्रों को दर्शाया गया है जो कहानी को आगे बढ़ाने का प्रयास करते हैं ।

संवाद :

कहानी के संवाद मार्मिक एवं संवेदात्मक हैं । कहानी में संवादों के माध्यम से मानव के मनोभावों को व्यक्त किया है । संवेदनाओं को छोटे-बड़े संवादों से दर्शाया है ।

देशकाल :

कहानी का वातवरण गाँव से लेकर शहरी जीवन शैली तक का बताया गया है । लेखिका ने परिवार के दुःख के माहौल को तथा गरीब जीवनशैली का परिदृश्य पाठकों के सामने रखा है ।

भाषा शैली :

कहानी की भाषा थोड़ी कठिन है । परंतु पाठकों के मन तक पहुँचने में सफल रही है । भाषा शैली पात्रों, प्रसंगों, घटनाओं के आधार पर सही है । कहीं-कहीं अंग्रेजी भाषा का उपयोग हुआ है जैसे- इंडियन, माइंड, स्ट्रोक, हार्ट, ए-वन स्टाइल, प्रिफर, कोड आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है ।

उद्देश्य :

कहानी का उद्देश्य पाठकों तक गरीबी की समस्या, रोजगारी की समस्या, रहन-सहन की समस्या, आर्थिक समस्या को उजागर किया है । अंत में दस रुपए पाकर इतनी खुशी होती है कि पत्नी की मृत्यु का गाम भी फिका पड़ जाता है ।

सलामत जागीरें :

'सलामत जागीरें' सूर्यबाला द्वारा रचित एक पारिवारिक कथा है । कहानी का मुख्य पात्र माँ है । कहानी वर्णनात्मक शैली में प्रस्तुत की है । अपने पति की मृत्यु के बाद बेटे की सारी जिम्मेदारी अकेली माँ पर आ जाती है । परंतु हिम्मत न

हारते हुए माँ अपने बेटे का पालन-पोषण करती है । उसे उच्च-शिक्षा प्रदान करवाती है । उसका बेटा अपनी माँ और परिवार के साथ रहता है । तब बेटे की माँ उसकी बहु और नाती-पोते के साथ क्या बातें होती हैं और कैसे माँ अपनी पुरानी यादें ताज़ा करती है और अपने बेटे से संबंधित घटनाओं को बताती है यह दर्शाया है । वह बताती है कि उसने परिवार के लिए कितना त्याग किया है। माँ के मन में जानवरों के प्रति प्रेम भी यहाँ बताया गया है । माँ को बबुबेन (कुतीया) और मीठुभाई (तोते) से अधिक लगाव है । उसके साथ ही माँ को पेड़-पौधों से भी प्रेम है । माँ के व्यवहार में आज भी कोई बदलाव नहीं आया है और माँ के इस व्यवहार से किसी को कोई शिकायत नहीं है । कहानी का आरंभ और अंत माँ के प्रसंगों पर ही खत्म होता है । भारतीय संस्कृति में माँ का स्वभाव, उसका व्यवहार, उसकी विशेषताओं को दर्शाया है ।

पात्र :

कहानी में माँ का पात्र मुख्य है जिसमें लेखिका ने भारतीय संस्कृति के आधार पर माँ के चरित्र का चित्रण किया है । माँ कैसे अपने पति की मृत्यु के पश्चात भी पूरे घर की जिम्मेदारी अपने सर पर उठा लेती है । भावनात्मक स्तर पर भले ही माँ टूट चुकी है परंतु फिर भी अपनी खुशियों का त्याग करके वह अपने बेटे का पालन-पोषण करती है और उसे अच्छा उच्च शिक्षित बनाती है । और अब वह अपना जीनयापन अपने बेटे-बहु और पोते के साथ गुजार रही है । उसे अब कोई चिंता नहीं है। वह अपने बेटे के बचपन के प्रसंगों को अपने बहु और नाती-पोते को सुनाती है । माँ को प्राकृतिक चीजों और जानवरों-पक्षियों से भी प्रेम है ।

संवाद :

कहानी के संवाद भारतीय समाज में माँ के महत्व एवं उसके त्याग, ममत्व को दर्शाते हैं । कहानी के संवादों में पीड़ा, दुःख, सहनशीलता का भाव प्रकट होता है ।

देशकाल :

कहानी का वातावरण पारिवारिक है जिसमें माँ पिछली यादों का संस्मरण करती है । कहानी शहरी जीवन शैली की है ।

भाषा शैली :

कहानी की भाषा सरल और सुलभ है । पात्रों के अनुरूप और प्रसंगानुरूप है। माँ पढ़ी-लिखी ना होने के कारण भाषा अशुद्ध है । परंतु बाकी के पात्र पढ़े-लिखे होने के कारण भाषा शुद्ध है ।

उद्देश्य :

कहानी का उद्देश्य भारतीय संस्कृति में माँ की परिवार में क्या भूमिका होती है और कैसे वह अपने परिवार के लिए अपनी छोटी-छोटी खुशियों का त्याग करती है । भले वह भावनात्मक स्तर पर टूट चुकी हो परंतु परिवार की जिम्मेदारी पूरो सौहार्दपूर्ण ढंग से निभाती है।

दूज का टिका :

दूज का टिका कहानी का पात्र विधवा बुआ है । यह कहानी रक्षाबंधन से संबंधित है । रक्षाबंधन के त्यौहार का वर्णन लेखिका ने अपनी वर्णनात्मक शैली में किया है । बुआ की शादी जब करवाई गई थी उसके बाद ढाई साल के बाद ही बुआ विधवा हो गई थी । इसिलए लेखिका ने अपनी इस कहानी का शीर्षक रक्षाबंधन के त्यौहार के आधार पर दूज का टिका रखा है जो शीर्षक को सार्थक करती है । वह अपने बेटे रतन के साथ मायके वापस आ गई है । वह अपने मायके आकर भी इतना काम करती है कि वह एक मिसाल बन जाती है । और अपना आदर्श रूप दिखाती है । बुआ की अपनी एक अलग आचार-संहिता है । वह अपना काम खुद करती है । उसने अपने आप को आत्मनिर्भर बना लिया है।

वह अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती है । वह स्वयं के सुख और दुःख दोनों से स्वयं ही निपटती है यही बुआ के चरित्र की एक अनोखी विशेषता है । भारतीय संस्कृति में त्यौहार का महत्त्व और नई पीढ़ी में विचारों का काल के अनुसार कैसे बदलाव आता है उसका संकेत लेखिका ने दिया है ।

पात्र :

कहानी का मुख्य पात्र बुआ है जो कि स्वनिर्भर, आत्म-निर्भर स्त्री के रूप में उभर कर आती हैं । उनकी शादी के ढाई साल बाद ही विधवा हो जाती है । उसके बाद वह अपने बेटे के साथ मायके आ जाती है और मायके आकर भी वह खुद के काम खुद ही सँभालती है और अपना आदर्श स्थापित करती है ।

गौण पात्रों के रूप में बेटा और परिवार के अन्य सदस्य हैं ।

संवाद :

जैसे- बुआ ने बलैया ली, 'अरे बिन्नी के देने के लिए पैसे जुटा के रखे है कि नहीं?'

"कैसे पैसे?"

"लो, ले... वह टीका करे न तुझे आज।"

"बुआ निहाल"[124]

देशकाल :

कहानी के वातावरण में देश में मनाये जाने वाले त्यौहार 'दूज का टिका' मनाने का माहौल है। भाई-बहन के पवित्र रिश्ते के बताया है । वातावरण शहरी जीवनशैली का है ।

भाषा शैली :

कहानी की भाषा शैली सहज औऱ सरल है । अंग्रेजी भाषा का भी प्रयोग किया है । कहानी घटना प्रधान, प्रसंगानुसार भाषा शैली का प्रयोग किया गया है । कवितात्मक शैली, संवादात्मक शैली का प्रयोग हुआ है ।

उद्देश्य :

कहानी का उद्देश्य भारत के त्यौहारों का महत्त्व बताना है । कैसे त्यौहारों में सब सदस्य अपने सारे दुःख दर्द भुलाकर संस्कृति का पालन करते हैं । 'दूज का टिका' कहानी में विधवा जीवन की समस्या, आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा देने का उद्देश्य साकार किया है ।

सूर्यबाला का कहानी संग्रह 'दिशाहीन' का प्रथम संस्करण 2010 में प्रतिभा प्रतिष्ठान ने किया था । इस कहानी संग्रह में सूर्यबाला ने नौ कहानियों का संकलन किया है जिनमें से तीन कहानियों का संकलन अन्य कहानी संग्रह में भी किया गया है जिससे कुल मिलाकर छः कहानियाँ ही नई हैं जिनका मूल्यांकन कहानी के तत्त्वों के आधार पर किया जाएगा जिसमें सूर्यबाला द्वारा रित कहानी कतारबंद स्वीकृतियाँ प्रथम है ।

कतारबंद स्वीकृतियाँ:

प्रस्तुत कहानी एक सिस्टर की है जो समाज की सेवा कर उनके दुःखों को बाँटना चाहती है । सिस्टर लोगों का जीवन ऐसा होता है कि उन्हें सिर्फ समाज के लोगों का दुःख दूर करना और उन्हें सांत्वना देना होता है । वे कभी पूरे जीवन किसी से लगाव नहीं रख सकतीं और ना ही संबंध स्थापित कर सकती हैं । उनको अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखना होता है । सिंधू एक छोटी लड़की है जिसकी माँ का देहांत हो चुका है । उसके पिता और उसकी आया ही उसका ख्याल रखते हैं । वह नियमित स्कूल आती है जिससे सिस्टर को सिंधू से लगाव हो जाता है और उसके पिता से भी लगाव हो जाता है । पर सिस्टर चाहते हुए भी कुछ नहीं कह पाती क्योंकि सिस्टर ने प्रभु भक्ति में ही अपना सारा जीवन अर्पण कर दिया है । वह बस प्रभु भक्ति की ही धून बजाती है। इसके अलावा कोई दूसरी धून बजाने के उन्हें अनुमति नहीं है । आखिर में सिस्टर को सिंधू को छोड़कर बहुत दूर आदिवासीयों का दुःख बाँटने जाना पड़ता है । वह सोचती है

कि उसके बाद सिंधू को कौन बताएगा कि सिस्टर उससे बहुत दूर चली गई है । सिस्टर के जीवन में लगाव, मोह या अटैचमेन्ट के लिए कोई स्थान नहीं है । इसलिए सिस्टर चुपचाप वह पीला गुलाब लाकर बहुत नीचे अंधेरे में फेंक देती है।

पात्र :

इस कहानी का मुख्य पात्र सिस्टर है जो एक सेवाभावी और प्रभु की भक्ति में ही लीन रहने वाली है । परंतु यहाँ सिस्टर भी लगाव, मोह और अटैचमेन्ट से दूर नहीं हो पाती। पाठशाला में आनेवाली लड़की सिंधू और उसके पिता से सिस्टर को लगाव हो जाता है । मगर चाहते हुए भी वह अपनी इस भावना को प्रकट नहीं कर पाती क्योंकि सिस्टर को इन भावनाओं से कोई लेना देना नहीं होना चाहिए । उन्हें तो केवल लोगों की सेवा का भाव ही रखना होता है। उसके बाद बचे हुए समय में प्रभु की भक्ति करनी होती है ।

गौण पात्रों के रूप में सिंधू, डैडी, ऑल्टर, आया आदि का उल्लेख मिलता है ।

संवाद :

कहानी के संवादों में अंग्रेजी भाषा का प्रयोग हुआ है । मनुष्य मन के भावों को प्रकट करते संवाद हैं । संवादों में मार्मिकता, दुःख, त्याग, दया आदि के भाव प्रकट होते हैं ।

'इट्स अ नाईस ट्यून... नो?' मदर जाने कब दरवाजे पर आ खड़ी हुई। 'याह मदर!'[125]

"मेरी आया बीमार है न, रोज डैडी तैयार करते हैं, फिर भी लेट हो जाती हूँ।"

देशकाल :

कहानी का देशकाल शहरी और गाँव दोनों की परिकल्पना पर आधारित है । यह एक पारिवारिक माहौल और धार्मिक वातावरण को भी दर्शाती कहानी है।

भाषा शैली :

कहानी के सभी पात्र शिक्षित हैं इसलिए ज्यादातर अंग्रेजी भाषा के शब्दों और वाक्यों का प्रयोग किया गया है । भाषा कहीं वर्णनात्मक रूप लेती है तो कहीं संवादों के माध्यम से मन के भाव प्रगट किये हैं । अंग्रेजी शब्द जैसे क्लास, क्रिस्टीना, गोड, सिस्टर, डैडी, स्टडी टेबल, टाइट, रिबन और ऐसे बहुत से शब्दों की लंबी सूची बनाई जा सकती है ।

उद्देश्य :

कहानी का उद्देश्य यह है कि एक सिस्टर का जीवन किसी भी भावनाओं, लगाव और अटैचमेन्ट के लिए नहीं बना होता । उसका जीवन केवल प्रभु की भक्ति और लोकसेवा और समाज सेवा में ही नीहित होता है । उसे किसी से प्रेम और लगाव रखने की अनुमति नहीं होती और ना ही वह अनपे मन के भाव प्रकट कर सकती है । उसको अपनी जीवनयात्रा समाजसेवा में ही पूरी करनी होती है ।

पूल टुटते हुए:

'पूल टूटते हुए' एक ऐसी लड़की की कहानी है जो पढ़ी-लिखी है, शहर में नौकरी करती है और गाँव में रह रहे उसके माँ-बाप व बहन छाया का पढ़ाई का खर्चा उठाती है । रंग रूप में वह साधाराण है । इस वजह से शौनक जैसा लालची शादी करने से मना कर देता है और दहेज के चक्कर में शमिता से शादी कर लेता है । शौनक कहानी का ऐसा पात्र है जो हर चीज़ में फायदा ढूँढ़ता है और उसके लिए वह कुछ भी समझौता कर सकता है । वह माया से शादी करने से इसलिए मना करता है क्योंकि माया के पिता उसे दहेज देने में असमर्थ थे । उनका पुश्तैनी मकान भी गिरवी पड़ा था । दो साल से माया अपने घर नहीं गई पर एक दिन खुद इसके पिता शहर में आ जाते हैं उसे यह बताने कि उनकी छोटी बहन छाया का रिश्ता तय हो गया है । अब माया भी बिना दहेज का कोई लड़का अपनी मरजी से ढूँढ़ ले ताकि समाज की ओर से बड़ी बहन के पहले

छोटी बहन की शादी करवा देने का इल्जाम माँ-बाप पर ना लग जाए । माया कहती है कि वह जैसी है वैसे ही खुश है । उसके लिए अविनाश का रिश्ता आया है और वह खुद माया से शादी करना चाहता है । अविनाश को बहुत-से रिश्ते आये थे पर वह माया पर ही अटका है । उसका कहना है कि जान-पहचान की है और बच्चों का अच्छे से वह ख्याल रखेगी ।

पात्र :

कहानी की मुख्य नायिका माया है जो शहर में रहकर अपने परिवार की जिम्मेदारियों को उठाती है । गाँव में उनके खर्चा-पानी पूरा करती है । माया एक शिक्षिका होने के साथ-साथ एक चित्रकार भी है । आर्ट गैलरी में प्रदर्शिनी भी लगाई गई है । माया के रिश्ते के लिए काफी लड़के आ चुके थे पर सब उसमें कोई न कोई नुक्श निकालकर मना कर देता । माया को यह एहसास होता है कि समाज में बाहरी दिखावे का कितना बोल-बाला है । दूसरी वजह है दहेज दो तो लड़की की एक-दो खामियों को निभा लिया जाता है ।

गौण पात्रों के रूप में छाया, शौनक, शमिता, माया की माता, पिता अविनाश आदि गौण पात्र हैं ।

संवाद :

कहानी के संवादों में समाज में लड़कियों के रुप को लेकर फैली भ्रांतियों को और दहेज को लेकर उनके प्रति समाज में जो रवैया है उसको लेखिका ने संवादों के माध्यम से बड़े ही सहज एवं सरल चोटिल संवादों में प्रस्तुत किय है ।

"सिगरेट, पान, चाय, कॉफी कौ दोर कभी-कभी बहुत खल जाते हैं । तुम लोगों का अच्छा है, कम से कम इस तरह की लत नहीं । बचा लेती होगी काफी।" [126]

"बड़े प्यारे बच्चे हैं बेचारे । वैसे शादी के लिए बहुत से लोग घेरे हुए हैं । लड़कीवाले गरजमंद होते ही हैं न ।" [127]

देशकाल :

शहरी और गाँव का परिदृश्य दोनों जगह का चित्रण लेखिका ने किया है ।

भाषा शैली :

कहानी की भाषा शैली संवादात्मक और वर्णनात्मक भी है । भाषा में शुद्धता भी है । अंग्रेजी का भी प्रयोग किया गया है । प्रसंगानुसार और घटनानुसार भाषा का प्रयोग हुआ है।

उद्देश्य :

कहानी का उद्देश्य है कि समाज में स्त्रियों के प्रति भावना, दहेज प्रथा, पुनर्विवाह की समस्या और शादी के समय स्त्रियों की हर कसौटी पर जाँच होती है यह बताया गया है।

गुज़रती हदें :

'गुज़रती हदें' एक ऐसे युवक की कहानी है जो 10 वर्ष तक अमेरिका में रहकर अपने देश वापस लौटा है । वह अमेरिका में रहकर एलिस नाम की लड़की से शादी कर लेता है । पर वहाँ की संस्कृति भारतीय संस्कृति के विपरीत है । वहाँ पति-पत्नी में समानता होती है । हर काम एक दूसरे को मिलकर करना पड़ता है । वहाँ पर पति अपनी पत्नी पर आधिपत्य नहीं जमा सकता और इसी के चलते उसका एलिस से तलाक हो जाता है जो अमेरिका में एक सामान्य बात है । तभी वह सोचता है कि भारत में जैसे तलाकशुदा औरत की समाज में कोई इज्जत और सहारा नहीं होता उसी प्रकार एलिस भी कुछ दिन पश्चात् उसके पास लौटकर वापस आ जाएगी और फिर उसके जीवन की एक नई शुरुआत होगी । परंतु इसेक विपरीत एलिस आती है और कहती है कि उसे काम मिल गया है और एक नया साथी भी मिल गया है । इससे युवक की सारी उम्मीदें समाप्त हो जाती हैं । जब भारत लौटता है तो उसके घर के सभी सदस्य उसका एयरपोर्ट पर बड़ी बेसब्री से इंतज़ार करते हैं। घर का माहौल खुशी में बदल जाता है । उसकी

माँ, जिसको मोतियाबिंद हो चुका है, वह भी हर बात का ख्याल रखने में जुट जाती है । घर का हर सदस्य उसकी चाकरी में लग जाता है । घर के हालात पहले जैसे नहीं रहे । आखिर में वह अमेरिका लौट जाने का निर्णय लेता है । वह इन दोनों संस्कृतियों के बीच पिसकर रह जाता है । उसकी निर्णय करने की क्षमता समाप्त हो जाती है ।

पात्र :

कहानी का नायक एक ऐसा युवक है जो अमेरिका में रहकर वहाँ की लड़की से शादी कर लेता है जिसका नाम एलिस है। परंतु उसका एलिस से तलाक हो जाता है । वह सोचता है भारत जैसे ही यहाँ पर भी एलिस की यह हालत होगी । परंतु इसके विपरीत एलिस लौटती है तो कहती है उसे नौकरी मिल गई है और एक नया साथी भी उसने ढूंढ़ लिया है । फिर वह अमेरिका से भारत लौटता है परंतु उसका मन यहाँ पर भी नहीं लगता और वह अमेरिका लौट जाता है ।

गौण पात्रों में एलिस, माँ, घर के अन्य सदस्यों का समावेश होता है ।

संवाद :

"अरे नहीं। मैं फौरन बोलो" "चलिए सब साथ चलेंगे ।"

"बस की लाइन में कहाँ घँटों खड़े रहेंगे । तीन टैक्सी ले लेते हैं ।" [128]

"दीदी कुछ मठरियाँ, मिठाई और पानी रख गई। मैंने सिर्फ पानी पीकर कहा- पहले जरा हाथ-मुँह धोकर लैट्रिन जाऊँगा ।" [129]

देशकाल :

कहानी का देशकाल दो देशों का है । एक भारत और दूसरा अमेरिका का परिदृश्य दिखाई देता है । भारतीय संस्कृति और पाश्चात्य संस्कृति का चित्रण किया है ।

भाषा शैली :

कहानी की भाषा शैली शुद्ध भाषा शैली है । वर्णनात्मक और संवाद शैली में लेखनी चलाई है । अंग्रेजी भाषा का भी प्रयोग हुआ है । प्रसंगानुसार भाषा का प्रयोग हुआ है।

उद्देश्य :

दो संस्कृतियों के बीच में क्या अंतर है यह बताने का प्रयत्न किया गया है । वहाँ की स्त्रियों के जीवन और यहाँ की स्त्रियों की जीवन शैली में जमीन-आसमान का फर्क है ।

घटनाहीन :

प्रस्तुत कहानी ऐसे युवक की है जो बेरोजगार हो गया है और इसकी इस बेरोजगारी की वजह से वह अपने परिवार का पालन-पोषण भी ढंग से नहीं कर पा रहा है । उसके परिवार में उसके तीन बच्चे दिपू, गुड्डी, पिंटू हैं और उसकी पत्नी है । बेरोजगारी की वजह से वह इतना हताश और निराश हो गया है कि उसे अपने घर जाना है परंतु उसकी पत्नी उसे सवाल करेगी और वो उसे क्या जवाब देगा इसी कश्मकश में वह पूरा दिन पार्क में एक बैंच पर ही अपना दिन व्यतित कर देतै है । उसे भूख लगी है फिर भी वह वहीं बैठा है । बेरोजगारी से वह इतना हताश हो गया है कि अब उसे लगता है कि उसका परिवार बहुत बड़ा है । छोटा परिवार सुखी परिवार होता है । पर अब उसके तीन बच्चे हैं जिनमें दिपू की डेढ़ साल से फीस नहीं भरी गई है जो हमेशा बचपन से ही कुपोषण का शिकार रहा है । उसके इलाज के लिए हमेशा पैसे जुटाने पड़ते थे । इसमें से एक भी बच्चा कम होता तो उसकी कितनी बचत हो जाती । वह घर जाता है । उसकी पत्नी दवाइयों की पर्ची थमाती है। फिर वह जाकर उसी पार्क की बैंच पर जाकर बैठ जाता है । हताश और निराश-सा क्योंकि उसे अब कोई काम नहीं मिला है ।

पात्र:

कहानी का मुख्य पात्र ऐसा युवक है जो तीन बच्चों का पिता है परंतु अब वह एक बेरोजगार है क्योंकि वह इतना भी नहीं कमा पा रहा कि वह अपने

परिवार का पालन-पोषण कर सके । और इसकी वजह से वह शहर के एक पार्क में बैंच पर बैठे-बैठे सोचात रहता है कि शायद उसका परिवार छोटा होता तो एक बच्चे का सारा खर्चा बच जाता । वह बेरोजगारी से निराश और हताश हो चुका है।

गौण पात्रों में युवक की पत्नी और तीन बच्चे दिपू, पिंटू, गुड्डी हैं।

संवाद :

"और कहीं पिछली बार की तरह महीनों नहीं लगा तो?"

"कम बच्चे, ज्यादा खुशलाही; कम संतान, सुखी इन्सान.. खुशहाली.. सुख... खुशहाली... खुशहाली इतनी आसान चीज है क्या?" [130]

देशकाल :

कहानी का देशकाल शहरी जीवनशैली का है । शहरी जीवन में भी बेरोजगारी से कैसे परिवार का पालन-पोषण करना मुश्किल हो जाता है । पारिवारिक माहौल का देशकाल है ।

भाषाशैली :

कहानी की भाषा शैली वर्णनात्मक है । भाषा सहज और सरल है । बच्चों की तोतली भाषाशैली का भी समावेश लेखिका ने किया है ।

उद्देश्य :

कहानी का उद्देश्य है बेरोजगारी और कुपोषण की समस्या को उजागर करना । लेखिका का उद्देश्य है कि वह देश की ऐसी समस्याओं को पाठकों के सामने रखे ।

सिंड्रेला का स्वप्न :

इस कहानी में एक छोटी लड़की की बात की गई है जो लेखिका के यहाँ पर काम करती है । वह बहुत छोटी है । यह कहकर लेखिका कहती है कि शुरुआत में तो वह बीस रुपये ही देंगी क्योंकि उसे काम नहीं आता है । सोनाबाई इस लड़की को काम दिलाने लेकर आई थीं पर लेखिका यह दिखाती हैं कि उन्हें

उसकी जरुरत नहीं है क्योंकि ऐसे नौकरों को बहुत झेलना पड़ता है । वह उस लड़की को सुबह साढ़े छः बजे आने को कहती है । जाड़ा, गर्मी, बरसात कुछ भी हो उसे इसी समय आ जाना है । बिल्कुल ढिलम ढाली नहीं चलेगी और साथ में वह उसे खाना भी दे दिया करेंगी । लड़की पढ़ना लिखना नहीं जानती थी । उसे समाज से कोई सरोकार नहीं था । वह लेखिका को अपनी झोंपड़पट्टी की बातें सुनाती थी । एक दिन लेखिका से उसने पूछा कि तुम् ब्राह्मण हो या मराठी। उसको इस उम्र में भी जात-पाँत का ख्याल था परंतु लेखिका उसे कहती है कि हम सब एक समान हैं । कोई जात-पाँत नहीं है । हम सब हिन्दु-मुस्लिम आपस में भाई-भाई हैं । दो-चार दिन बाद वह मोना की सिन्ड्रेला वाली किताब उठाकर देखती है । मोना कहती है कि वह अपने मैले हाथों से उसकी किताब ना छुए । मोना सिन्ड्रेला वाली कहानी उसे सुनाती है । वह लड़की सिन्ड्रेला को अपने आप से जोड़ लेती है। वह भी स्वप्न देखती है कि एक दिन उसके जीवन में भी खुशियाँ आएंगी । बीच में मिसेज गुलाटी कहती हैं कि इन नौकरों का ध्यान रखना चाहिए क्योंकि मौका देखकर यह लोग लंबा हाथ मारते हैं । लेखिका जब दो-चार दिन सम्मेलन में जाती हैं तब उस लड़की को अपनी लड़कियों के साथ रहने को बोलती हैं । लड़की रहती है दो-चार दिन। वह कोयल वाले कमरे में सोती है जहाँ चारों और टुटी खिड़कियाँ सरसराती हैं, बर्फिली हवा और ऊपर से सुखने के लिए फैलाए कपड़ों का रिसता पानी, गीला फर्श। वह सचमुच ठंड खा गई थी । लेखिका ने रुना को फटकार लगाई और कहा, तुम तो बड़ी थी, उसे ना कर सकती थी । जानती है कि नौकरों के बीमार होने पर उन्हें कितनी परेशानी होती है । लड़की इतनी बीमार हो जाती है कि उसके बचने की कोई उम्मीद नहीं रहती। लेखिका लड़की को देखने सिविल अस्पताल चली जाती हैं । मिसेज गुलाटी कहती हैं कि लड़की में थोड़ी ही जान बची है । अब इन लोगों का रोना-पिटना शुरु हो जाएगा । फिर पहचानते ही सब लेखिका के पीछे पड़ जाएंगे । इस वजह से लेखिका भी वहाँ रुकती नहीं और वहाँ से चली जाती है ।

पात्र :

कहानी का मुख्य पात्र लेखिका के घर काम करने वाली एक लड़की है जिसे दुनियादारी की कोई समझ नहीं है फिर भी वह एक दिन लेखिका को सवाल पूछती है कि आप किस जाति के हो, ब्राह्मण या मराठी । तब उसे लेखिका समझाती है कि इस देश में सब भाईःबहन और एक समान हैं । एक बार मोना लड़की को सिन्ड्रेला की कहानी सुनाती है । वह लड़की अपने आप को सिन्ड्रेला के पात्र से जोड़कर देखती है । उसे भी लगता है कि एक दिन सिन्ड्रेला की तरह ही उसके सारे दुःख दूर हो जायेंगे । आखिर में लेखिका के वहाँ से वह गीले, बर्फीली हवा वाले कमरे में सोने की वजह से बीमार पड़ जाती है । अब उसके बचने के कोई आसार नहीं हैं । लेखिका उसे देखने सिविल अस्पताल भी जाती है पर हालत नाजुक देखकर वापस लौट जाती है ।

गौण पात्रों में मिसेज गुलाटी, लेखिका आदि का उल्लेख हुआ है और लड़की के माँ-बाप हैं।

संवाद :

"पर मैं इसे बीस रुपए महीने से ज्यादा पगार नहीं दे सकती ।"[131]

"बोत होता" वह सोत्साह बोली, "ब्राहमिन-क्षत्री लड़ता, हिन्दु-मुसल्ला और मराठी-भइया।" [132]

"मोना को एक गरीब, कम अक्ल लड़की का प्रस्ताव काफी बड़प्पनप्रद लगा था-ला, सुनाती हूँ ।" [133]

देशकाल :

कहानी का देशकाल महानगरीय जीवनशैली से जुड़ा हुआ है । यह एक नौकरशाही और पारिवारिक माहौल की कहानी है । इसमें महानगरीय लोगों के रहन-सहन, खान-पान का चित्रण किया गया है ।

भाषा शैली :

कहानी की भाषा शैली थोड़ी अशुद्ध है क्योंकि छोटी लड़की अशिक्षित है । बाकी के पात्र शिक्षित होने के कारण शुद्ध भाषा और अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करते हैं । कहानी की भाषा प्रसंगानुसार और पात्रानुसार है । कहानी को दो स्तरों पर रचा गया है । एक वर्णनात्मक शैली और दूसरा संवादात्मक शैली में वर्णन है । कुछ शब्दों का प्रयोग असहज किया गया है ।

उद्देश्य :

कहानी का उद्देश्य बाल-मजदूरी, उच्च वर्ग द्वारा नौकर वर्ग के शोषण को दिखाना, कम रोजगारी प्रदान करना औऱ अशिक्षा तथा गरीबी की समस्याओं को इस कहानी में दर्शाया गया है ।

चतुर्थ अध्याय

संदर्भ सूची

1. सांझवाती, पृ. 12
2. सांझवाती, पृ. 13
3. सांझवाती, पृ. 12
4. सांझवाती, पृ. 19
5. सांझवाती, पृ. 21
6. सांझवाती, पृ. 22
7. सांझवाती, पृ. 27
8. सांझवाती, पृ. 32
9. सांझवाती, पृ. 38
10. सांझवाती, पृ. 38
11. सांझवाती, पृ. 40
12. सांझवाती, पृ. 44
13. सांझवाती, पृ. 48
14. सांझवाती, पृ. 64
15. सांझवाती, पृ. 51
16. सांझवाती, पृ. 54
17. सांझवाती, पृ. 71
18. सांझवाती, पृ. 73
19. सांझवाती, पृ. 76
20. सांझवाती, पृ. 777
21. सांझवाती, पृ. 77
22. सांझवाती, पृ. 82
23. सांझवाती, पृ. 83
24. सांझवाती, पृ. 87
25. सांझवाती, पृ. 93, 94
26. सांझवाती, पृ. 94
27. सांझवाती, पृ. 101
28. सांझवाती, पृ. 103
29. सांझवाती, पृ.111
30. सांझवाती, पृ.113

31. सांझवाती, पृ. 116
32. सांझवाती, पृ.127
33. सांझवाती, पृ. 151
34. सांझवाती, पृ. 156
35. सांझवाती, पृ. 156
36. कात्यायनी संवाद, पृ. 16
37. कात्यायनी संवाद, पृ. 21
38. कात्यायनी संवाद, पृ. 22
39. कात्यायनी संवाद, पृ. 25
40. कात्यायनी संवाद, पृ. 28
41. कात्यायनी संवाद, पृ. 30
42. कात्यायनी संवाद, पृ. 36
43. कात्यायनी संवाद, पृ. 39
44. कात्यायनी संवाद, पृ. 40
45. कात्यायनी संवाद, पृ. 44
46. कात्यायनी संवाद, पृ. 49
47. कात्यायनी संवाद, पृ. 51
48. कात्यायनी संवाद, पृ. 51
49. कात्यायनी संवाद, पृ. 57
50. कात्यायनी संवाद, पृ. 58
51. कात्यायनी संवाद, पृ. 69
52. कात्यायनी संवाद, पृ. 72
53. कात्यायनी संवाद, पृ. 74
54. कात्यायनी संवाद, पृ. 78
55. कात्यायनी संवाद, पृ. 79
56. कात्यायनी संवाद, पृ. 84
57. कात्यायनी संवाद, पृ. 86
58. कात्यायनी संवाद, पृ. 90
59. कात्यायनी संवाद, पृ.73
60. कात्यायनी संवाद, पृ. 94
61. कात्यायनी संवाद, पृ. 96
62. कात्यायनी संवाद, पृ. 102
63. कात्यायनी संवाद, पृ. 106
64. सूर्यबाला की लोकप्रिय कहानियाँ, पृ. 114
65. सूर्यबाला की लोकप्रिय कहानियाँ, पृ. 116

66. थाली भर चाँद, पृ. 85
67. थाली भर चाँद, पृ. 89-90
68. थाली भर चाँद, पृ. 124
69. थाली भर चाँद, पृ. 28
70. थाली भर चाँद, पृ. 31
71. थाली भर चाँद, पृ. 11
72. थाली भर चाँद, पृ. 18
73. एक इंद्रधनुष जुबेदा के नाम, पृ. 19
74. एक इंद्रधनुष जुबेदा के नाम, पृ. 23
75. थाली भर चाँद, पृ. 175
76. थाली भर चाँद, पृ. 175
77. थाली भर चाँद, पृ. 176
78. सूर्यबाला की लोकप्रिय कहानियाँ, पृ. 128
79. सूर्यबाला की लोकप्रिय कहानियाँ, पृ. 131
80. एक इंद्रधनुष जुबेदा के नाम, पृ. 86
81. एक इंद्रधनुष जुबेदा के नाम, पृ. 88
82. एक इंद्रधनुष जुबेदा के नाम, पृ. 89
83. थाली भर चाँद, प-. 111
84. एक इंद्रधनुष जुबेदा के नाम, पृ.31
85. एक इंद्रधनुष जुबेदा के नाम, पृ. 39
86. एक इंद्रधनुष जुबेदा के नाम, पृ. 41
87. एक इंद्रधनुष जुबेदा के नाम, पृ. 50
88. एक इंद्रधनुष जुबेदा के नाम, पृ. 51
89. एक इंद्रधनुष जुबेदा के नाम, पृ. 64
90. एक इंद्रधनुष जुबेदा के नाम, पृ. 65
91. एक इंद्रधनुष जुबेदा के नाम, पृ. 67
92. एक इंद्रधनुष जुबेदा के नाम, पृ. 79
93. एक इंद्रधनुष जुबेदा के नाम, पृ. 81
94. एक इंद्रधनुष जुबेदा के नाम, पृ. 98
95. एक इंद्रधनुष जुबेदा के नाम, पृ. 107
96. एक इंद्रधनुष जुबेदा के नाम, पृ. 123
97. एक इंद्रधनुष जुबेदा के नाम, पृ. 127
98. पाँच लंबी कहानियाँ, पृ. 39
99. पाँच लंबी कहानियाँ, पृ. 40
100. पाँच लंबी कहानियाँ, पृ. 116

101. सूर्यबाला की लोकप्रिय कहानियाँ, पृ. 76
102. सूर्यबाला की लोकप्रिय कहानियाँ, पृ. 81
103. सूर्यबाला की लोकप्रिय कहानियाँ, पृ. 85
104. सूर्यबाला की लोकप्रिय कहानियाँ, पृ. 87
105. थाली भर चाँद, पृ. 64
106. थाली भर चाँद, पृ. 65
107. थाली भर चाँद, पृ. 75
108. थाली भर चाँद, पृ. 79
109. थाली भर चाँद, पृ. 93
110. थाली भर चाँद, पृ. 95
111. थाली भर चाँद, पृ. 117
112. थाली भर चाँद, पृ. 118
113. थाली भर चाँद, पृ. 133
114. थाली भर चाँद, पृ. 135
115. थाली भर चाँद, पृ. 148
116. थाली भर चाँद, पृ. 148
117. थाली भर चाँद, पृ. 154
118. थाली भर चाँद, पृ. 155
119. थाली भर चाँद, पृ. 161
120. थाली भर चाँद, पृ. 163
121. थाली भर चाँद, पृ. 15
122. थाली भर चाँद, पृ. 21
123. सूर्यबाला की लोकप्रिय कहानियाँ, पृ. 152
124. दिशाहीन, पृ. 18
125. दिशाहीन, पृ.45, 46
126. दिशाहीन, पृ. 59
127. दिशाहीन, पृ. 29, 30
128. दिशाहीन, पृ. 33
129. दिशाहीन, पृ. 63
130. दिशाहीन, पृ. 135
131. दिशाहीन, पृ. 137
132. दिशाहीन, पृ. 138